इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

BSKLA - 135

संस्कृत भाषा और साहित्य

संस्कृत भाषा की प्रकृति और स्वरूप

1

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

BSKLA-135
संस्कृत भाषा और साहित्य

खंड

1

संस्कृत भाषा की प्रकृति और स्वरूप

इकाई 1
वर्णोच्चारण की प्रक्रिया 5

इकाई 2
पद, लिङ्ग, वचन, पुरुष और काल 21

इकाई 3
शब्दरूप 35

इकाई 4
धातुरूप 60

इकाई 5
सरल वाक्य रचना 77

पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति

प्रो. वाचस्पति उपाध्याय

प्रो. अवनीन्द्र कुमार

प्रो. वी. कुटुम्ब शास्त्री

प्रो. श्रीनारायण मिश्र

प्रो. जगदम्बा प्रसाद सिन्हा

प्रो. दीप्ति त्रिपाठी

प्रो. देवेन्द्र मिश्र

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय
कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री
राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली

प्रो. रमाकान्त पाण्डेय
निदेशक, मुक्त स्वाध्याय पीठ
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान,
नई दिल्ली

प्रो. आनन्द कुमार श्रीवास्तव
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, कला संकाय
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

डॉ. रंजन कुमार त्रिपाठी
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. देवेश कुमार मिश्र
सहायक प्रोफेसर, मानविकी विद्यापीठ
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय,
हल्द्वानी

प्रो. सत्यकाम
निदेशक, मानविकी विद्यापीठ
इग्नू, मैदानगढ़ी, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

पाठ लेखक	इकाई संख्या	पाठ्यक्रम संयोजक
डॉ. कांशीराम	1	प्रो. सत्यकाम
प्रो. दामोदर राम त्रिपाठी	2,3,4	सुश्री अर्पिता त्रिपाठी (परामर्शदाता संस्कृत)
डॉ. सत्यभामा राज़दान	5	

आवरण : सुश्री अरविन्दर चावला, ए.डी.ए. ग्राफिक्स, नई दिल्ली

सामग्री निर्माण

श्री. के. एन. मोहनन
सहायक कुलसचिव (प्रकाशन)
सा. नि. वि. प्र., इग्नू, नई दिल्ली

श्री. सी. एन. पाण्डेय
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)
सा. नि. वि. प्र., इग्नू, नई दिल्ली

श्री. बाबूलाल रेवाड़िया
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)
सा. नि. वि. प्र., इग्नू, नई दिल्ली

जुलाई, 2019

©इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2019

ISBN-978-93-89200-34-8

सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

मानविकी विद्यापीठ एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के बारे में विश्वविद्यालय कार्यालय मैदान गढ़ी नई दिल्ली से अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव, सामग्री निर्माण एवं वितरण प्रभाग द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेजर टाइप सेटिंग : टेसा मीडिया एण्ड कंप्यूटर, C-206, A.F. Encalve-II, ,नई दिल्ली

मुद्रक : आकाशदीप प्रिंटर्स, 20–अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002

पाठ्यक्रम परिचय

बी. ए. (सामान्य) संस्कृत के आधुनिक भारतीय भाषा सम्बन्धी पाठ्यक्रम के अन्तर्गत आप 'संस्कृत भाषा और साहित्य' नामक पाठ्यक्रम का अध्ययन करने जा रहे हैं। इस पाठ्यक्रम में अध्ययन के लिए कुल 15 इकाइयां हैं। इस पाठ्यक्रम के लिए 6 क्रेडिट निर्धारित है।

प्रथम खंड में आप संस्कृत भाषा की प्रकृति और स्वरूप का अध्ययन करेंगे। सामान्यतः व्यक्ति जिस भाषा में चिन्तन करता है उस भाषा में अभिव्यक्ति नितान्त सहज होती है, परन्तु अभ्यास द्वारा किसी भी भाषा पर अधिकार किया जा सकता है। सामान्यतया किसी भाषा को सीखने में उसके व्याकरण का ज्ञान बहुत सहायक होता है। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर इस पाठ्यक्रम के प्रथम खंड में वर्णोच्चारण की प्रक्रिया, पद, लिङ्ग, वचन, पुरुष और काल, शब्दरूप, धातुरूप, सरल वाक्य-रचना सम्बन्धी अभ्यास दिए गए हैं।

दूसरा खंड संस्कृत वाचन और विविध विषय से सम्बन्धित है जिसके अन्तर्गत आप संस्कृति विषयक पाठ (नीतिशतक एवं कठोपनिषद्), सामाजिक विज्ञान आधारित पाठ तथा विज्ञान आधारित पाठ का अध्ययन करेंगे।

तीसरा खंड साहित्य का आस्वादन है। इस खंड के अन्तर्गत आप पद्यकाव्य (कुमारसम्भवम्, पंचम सर्ग), गद्यकाव्य (शुकनासोपदेश), कथासाहित्य (हितोपदेश, मित्रलाभ परिच्छेद में वर्णित कथा) का अध्ययन करेंगे।

पाठ्यक्रम के चतुर्थ खंड में संस्कृत भाषा के व्यावहारिक पक्ष का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। इसके अन्तर्गत आप संस्कृत भाषा में पत्र-लेखन, समाचार-लेखन, अशुद्धि-शोधन, संक्षेपण, पल्लवन और निबन्ध-लेखन का अध्ययन कर सकेंगे।

आशा है कि आधुनिक भारतीय भाषा के अन्तर्गत निर्धारित 'संस्कृत भाषा और साहित्य' का यह पाठ्यक्रम आपको भाषा के चारों आधारभूत कौशल संस्कृत को समझने, पढ़ने, बोलने और लिखने को भलीभाँति हृदयंगम करने में सहायक होगा।

सम्पूर्ण पाठ्यक्रम की पाठ्य सामग्री निम्न ढंग से प्रस्तुत की गई है–

1.	संस्कृत भाषा की प्रकृति और स्वरूप	5 इकाइयाँ
2.	संस्कृत वाचन और विविध विषय	3 इकाइयाँ
3.	साहित्य का आस्वादन	3 इकाइयाँ
4.	व्यावहारिक संस्कृत	4 इकाइयाँ
		15 इकाइयाँ

खंड परिचय

इस खंड में हमारा लक्ष्य संस्कृत सीखने में उसके आरंभिक बिंदुओं पर प्रकाश डालना है। संस्कृत की लिपि देवनागरी है यह हम सभी जानते हैं, लेकिन संस्कृत व्याकरण का ज्ञान प्राप्त करने के लिए देवनागरी लिपि की वर्णमाला को एक विशेष क्रम में समझना अपेक्षित है। इस खंड में वर्ण, ध्वनि, वर्णोच्चारण की प्रक्रिया तथा ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत, सवर्ण, संयोग आदि संज्ञाओं के ज्ञान के साथ ही संस्कृत में प्रयुज्यमान पद, लिङ्ग, वचन, पुरुष और काल, वाक्यों में प्रयोगार्थ शब्दरूप, धातुरूप एवं अन्त में सरल वाक्य-रचना तथा अभिव्यक्ति के भिन्न-भिन्न रूपों (वाच्यादि) पक्षों पर प्रकाश डाला गया है।

इकाइयों में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों को स्पष्ट करने के लिए शब्दावली भी दी गई है।

इकाई 1 वर्णोच्चारण की प्रक्रिया

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 वर्णों का सामान्य परिचय

1.3 वर्णोच्चारण की प्रक्रिया

- 1.3.1 वर्णोच्चारण में स्थान
- 1.3.2 वर्णोच्चारण में करण
- 1.3.3 वर्णोच्चारण में प्रयत्न
- 1.3.4 शुद्धोच्चारण की आवश्यकता

1.4 वर्णोच्चारण में संहिता का प्रभाव

- 1.4.1 सन्धि
- 1.4.2 अच्-सन्धि (स्वर-सन्धि)
- 1.4.3 हल्-सन्धि (व्यञ्जन-सन्धि)
- 1.4.4 विसर्ग-सन्धि

1.5 सारांश

1.6 शब्दावली

1.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :–

- संस्कृत भाषा की इकाई अर्थात् संस्कृत भाषा की सार्थक मूलध्वनि के विषय में जानकारी प्राप्त कर लेंगे।
- वर्ण के स्वरूप से परिचित होने के साथ ही वर्ण तथा निरर्थक ध्वनि में भेद करना भी सीख लेंगे।
- स्वर तथा व्यञ्जनों के अन्तर को भलीभाँति समझ लेंगे।
- वर्णों की उच्चारण-प्रक्रिया में स्थान, करण तथा प्रयत्न का उपयोग किस प्रकार होता है – यह जानकारी भी प्राप्त कर लेंगे।
- वर्णों के शुद्धोच्चारण की आवश्यकता से भी परिचित हो जायेंगे।
- पाणिनि-व्याकरण के मूल आधारभूत प्रत्याहार-सूत्रों के विषय में जानकारी प्राप्त कर लेंगे। साथ ही प्रत्याहार क्या है, इसका प्रयोजन क्या है तथा यह कैसे बनता है? इसका ज्ञान भी प्राप्त कर लेंगे।
- वर्णोच्चारण में संहिता तथा सन्धि की भूमिका से भी परिचित हो जायेंगे।

- इस सम्बन्ध में पाणिनीय शिक्षा, वाजसनेयि-प्रातिशाख्य तथा पाणिनि के संस्कृत व्याकरण के नियमों की आरम्भिक जानकारी प्राप्त कर लेंगे।
- संस्कृत भाषा के मूल स्वरूप की जानकारी से उसमें निबद्ध विचारों तक पहुँचने में समर्थ होंगे।

1.1 प्रस्तावना

जिस तन्त्र से साधु शब्द का ज्ञान होता है उसे 'व्याकरण' कहते हैं ('व्याक्रियन्ते, व्युत्पाद्यन्ते शब्दा अनेनेति - साधुशब्दज्ञानजनकं व्याकरणम्')। इसी का एक दूसरा नाम 'शब्दानुशासन' भी है।

संस्कृत वाङ्मय में व्याकरण का स्थान बहुत ही ऊँचा है। इसकी गणना वेद के षडङ्गों (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष) में होती है और उसे वेद का मुख-रूप प्रधान अंग माना जाता है –

"मुखं व्याकरणं तस्य ज्योतिषं नेत्रमुच्यते।"

पतञ्जलि मुनि ने भी **'ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च'** – महाभाष्य (अ० 1, पा०1, आ०1) इस आगमवचन को उद्धृत करते हुए व्याकरण के अध्ययन पर जोर दिया – **"षट्स्वङ्गेषु प्रधानं व्याकरणं प्रधाने च कृतो यत्नः फलवान् भवति।"** वस्तुतः व्याकरण-ज्ञान के बिना वेद, वेदान्त, स्मृति, पुराण, इतिहास, काव्य आदि किसी भी शास्त्रान्तर में प्रवेश नहीं हो सकता।

इसीलिए कहा जाता है कि चाहे किसी अन्य-शास्त्र का अध्ययन किया जाए या न किया जाए, किन्तु व्याकरण-शास्त्र का अध्ययन अवश्य करना चाहिये; क्योंकि व्याकरण-ज्ञान के बिना शब्दों का उचित प्रयोग नहीं हो सकता और शब्दों का उचित प्रयोग न होने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। ज़रा सी उच्चारण-सम्बन्धी भूल से 'स्वजन' (सम्बन्धी) 'श्वजन' (कुत्ता), 'सकल' (सम्पूर्ण) 'शकल' (खण्ड) और 'सकृत्' (एक बार) 'शकृत्' (विष्ठा) बन जाता है। कहा भी है –

यद्यपि बहु नाधीषे तथापि पठ पुत्र व्याकरणम् ।

स्वजनः श्वजनो मा भूत् सकलः शकलः सकृत्शकृत्।।

आप संस्कृत भाषा के पाणिनीय व्याकरण से भली-भाँति परिचित हैं। अब, आगे पाणिनीय व्याकरण-शास्त्र के आरम्भिक भाग के अन्तर्गत समाविष्ट संस्कृत भाषा की वर्णमाला, वर्णों के भेद एवं स्वरूप, वर्णों की उच्चारण-प्रक्रिया तथा वर्णों की उच्चारण-प्रक्रिया पर संहिता आदि के प्रभाव के विषय में जानकारी दी जायेगी।

1.2 वर्णों का सामान्य परिचय

मानव के लिए भाषा एक अमूल्य देन है। भाषा की उत्पत्ति उसी प्राणवायु से होती है जो शरीर के भीतर संचरण करती हुई हमें जीवित रखता है। इसी भाषा की मूलभूत इकाइयों से परिचय कराना इस इकाई का उद्देश्य है।

वाजसनेयि-प्रातिशाख्य, पाणिनि तथा भर्तृहरि के अनुसार शब्द (भाषा) की उत्पत्ति प्रधानतया वायु से ही मानी गयी है। वाजसनेयि-प्रातिशाख्य में तो वायु को शब्द के रूप में वर्णित किया गया है। **प्रातिशाख्यकार कात्यायन** कहते हैं कि आकाश से वायु उत्पन्न हुआ और

वही शब्द है। यह वायुस्वरूप शब्द ही पुरुष के प्रयत्न से मुखवर्ती विभिन्न उच्चारण-स्थानों से टकराकर वर्ण रूप में अभिव्यक्त होता है। **भर्तृहरि** भी कहते हैं कि वक्ता के इच्छानुवर्ती प्रयत्न से प्रेरित वायु मुख में रहने वाले उच्चारण-स्थानों से टकराकर शब्द के रूप में अभिव्यक्त होता है। **पाणिनि** तथा **आपिशलि** ने शब्द की अभिव्यक्ति की प्रक्रिया अपनी-अपनी शिक्षा में स्पष्टतः इस प्रकार बताई है –

जीवात्मा वर्णोच्चारण-प्रक्रिया के प्रथम चरण में अपनी बुद्धि से अनेक विषयों को समझने की चेष्टा करता है। फिर वह उनको कहने की इच्छा से अपने मन से शरीरस्थ अग्नि में प्रवृत्ति उत्पन्न करता है। वह अग्नि कोष्ठकवर्ती वायु को प्रेरित करता है। प्रेरित वायु वक्षःस्थल से ऊपर उठते हुए अर्थ-संप्रेषक स्वर को उत्पन्न करता है।

आत्मा बुद्ध्या समेत्यार्थान्।
मनो युङ्क्ते विवक्षया।
मनः कायाग्निमाहन्ति
स प्रेरयति मारुतम्।
मारुतस्तूरसि चरन् मन्दं जनयति स्वरम्।

(पाणिनीय शिक्षा – 6)

यहाँ आत्मा शब्द के प्रयोग से यह स्पष्ट है कि प्राणिमात्र की अभिव्यक्ति का प्रकार यही है। परन्तु मनुष्य उससे भी आगे की प्रक्रिया से सार्थक वर्णात्मक शब्द उत्पन्न करता है। पाणिनि कहते हैं कि स्वर तथा नाद समानार्थक हैं। आकाश एवं वायु नाद के जनक हैं। यह नाद नाभि के ऊपर उठता हुआ तथा वक्षःस्थल से होता हुआ मुख में प्रवेश करता है और वह उरस्, जिह्वामूल, कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ और नासिका-स्थानों से टकराकर वर्णभाव को प्राप्त करता है। इस बात को पाणिनि ने और स्पष्ट शब्दों में इस प्रकार कहा है–

तत्र नाभिप्रदेशात् प्रयत्नप्रेरितः प्राणो नाम वायुरूर्ध्वम् आक्रामन्नुरः –
प्रभृतीनां स्थानानाम् अन्यतमस्मिन् स्थाने प्रयत्नेन विधार्यते। स
विधार्यमाणो वायुः स्थानमभिहन्ति। तस्मात्स्थानाभिघातात् ध्वनिरुत्पद्यते।
आकाशे स वर्णश्रुतिः वर्णस्य आत्मलाभः।।

(पाणिनीय शिक्षा – 8)

प्रयत्न से प्राणवायु कैसे प्रेरित होता है यह तो स्पष्ट हो चुका है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि जो प्राणवायु शरीर के भीतर संचरण करता हुआ हमें जीवित रखता है वही इस भाषा को भी उत्पन्न करता है। सामान्य रूप से श्वास-प्रश्वास की प्रक्रिया में यह प्राणवायु बिना किसी अवरोध के स्वर-यन्त्र से होता हुआ बाहर निकल जाता है। जब व्यक्ति की कुछ कहने की इच्छा होती है तो मुख से बाहर निकलने वाले वायु से वाक्तन्तुओं में कम्पन उत्पन्न होता है। इस कम्पन के कारण मुखविवर से बाहर निकलने वाले वायु में कुछ विशेषता आ जाती है। जिह्वा की सहायता से यह विशिष्ट वायु मुख के विभिन्न भागों से टकराता है; उसके फलस्वरूप भाषा का निर्माण करने वाली मूलध्वनियों का प्रादुर्भाव होता है। ये मूलध्वनियाँ जब अर्थ का संप्रेषण करती हैं तो **वर्ण** कहलाती हैं।

आधुनिक भाषा-विज्ञान के अनुसार इस उच्चारण-प्रक्रिया में जिह्वा प्राणवायु को मुख के किसी बिन्दु पर अर्थात् उच्चारण-स्थान पर रोकती है तो कभी बिना किसी अवरोध के बाहर आने देती है। जिन वर्णों के उच्चारण में प्राण-वायु के बाहर निकलने में कोई अवरोध नहीं होता; वे वर्ण **स्वर** कहलाते हैं। इसके विपरीत जिन वर्णों के उच्चारण में प्राणवायु में कोई

अवरोध उत्पन्न होता है तो वे वर्ण **व्यञ्जन** (हल्) कहलाते हैं।

महाभाष्यकार ने स्वर के विषय में कहा है – **स्वयं राजन्त इति स्वराः –** अर्थात् स्वर सहजता से, बिना किसी रुकावट के बिना किसी अन्य वर्ण की सहायता के उच्चारित होते हैं। व्यञ्जनों के विषय में भी उन्होंने कहा है कि व्यञ्जन स्वर के पीछे या साथ ही उच्चारित हो सकते हैं।

संस्कृत वर्णमाला में कुल 63 वर्ण हैं। इनमें 22 स्वर तथा 33 व्यञ्जन हैं।

स्वर –

संस्कृत में कुल 22 स्वर हैं। इनको व्याकरण में अच् के नाम से जाना जाता है। ह्रस्व, दीर्घ एवं प्लुत के भेद से इनको तीन भागों में बाँटा गया है। जिन स्वरों का उच्चारण-काल एक मात्रा अर्थात् एक चुटकी भर काल का हो, वे ह्रस्व स्वर, जिन स्वरों का उच्चारण-काल दो मात्राएँ हों, वे दीर्घ स्वर एवं जिनका तीन मात्रात्मक अवधि का उच्चारण-काल हो, वे प्लुत स्वर कहलाते हैं। स्वर निम्न हैं –

ह्रस्व	दीर्घ	प्लुत
अ	आ	अ3
इ	ई	इ3
उ	ऊ	उ3
ऋ	ॠ	ऋ3
ऌ	०	ऌ3
०	ए	ए3
०	ऐ	ऐ3
०	ओ	ओ3
०	औ	औ3

पाणिनि के अनुसार 'ऌ' वर्ण का दीर्घ नहीं होता तथा ए, ओ, ऐ तथा औ वर्णों का ह्रस्व नहीं होता। इस अभाव को ऊपर की तालिका में शून्य (०) से दर्शाया गया है।

व्यञ्जन –

संस्कृत में कुल 33 व्यञ्जन हैं। ये व्यञ्जन अल्पप्राण एवं महाप्राण भेदों में विभक्त हैं। जो व्यञ्जन कोमलता से उच्चारित होते हैं या जिनके उच्चारण में प्राणवायु स्वल्प मात्रा में प्रयुक्त होता है, वे अल्पप्राण व्यञ्जन कहलाते हैं। जो व्यञ्जन कठोरता से उच्चारित होते हैं या जिनका उच्चारण अधिक प्राणवायु से किया जाता है, वे महाप्राण कहलाते हैं। व्यञ्जनों की सूची इस प्रकार है –

कवर्ग – क्, ख्, ग्, घ्, ङ् ।

चवर्ग – च्, छ्, ज्, झ्, ञ् ।

टवर्ग – ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्।

तवर्ग – त्, थ्, द्, ध्, न्।

पवर्ग – प्, फ्, ब्, भ्, म्।

अन्तःस्थ – य्, र्, ल्, व्।

ऊष्मवर्ण – श्, ष्, स्, ह्।

अयोगवाह –

पतञ्जलि ने इनकी व्युत्पत्ति इस प्रकार की है – **कथं पुनरयोगवाहाः ?**
यदयुक्ता वहन्ति, अनुपदिष्टाश्च श्रूयन्ते। (महाभाष्य-प्रत्याहाराह्निक)

जो अक्षरसमाम्नाय अर्थात् प्रत्याहार-सूत्रों में अपठित (अनुपदिष्ट) होते हुए भी प्रयोग में सुनाई देते हैं, वे अयोगवाह कहलाते हैं। ये संख्या में कुल 8 हैं –

1) विसर्ग (ः)

2) अनुस्वार (ं)

3) जिह्वामूलीय ≍ कु

4) उपध्मानीय ≍ पु

5-8) यम

प्रत्येक वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ वर्ण के पश्चात् जब किसी वर्ग का पञ्चम वर्ण उच्चारित होता है तो उन दोनों वर्णों के बीच में चौथाई मात्रा या इससे कम मात्रा की नासिका वाली ध्वनि होती है। उसी का नाम क्रमशः प्रथम यम, द्वितीय यम, तृतीय यम तथा चतुर्थ यम होता है। उदाहरणार्थ – **पलिक्वनी** शब्द में द्वितीय ककार नासिका ध्वनि से संवलित होकर उच्चारित होता है, क्योंकि इस द्वितीय ककार के अनन्तर नकार रूप पञ्चम वर्ण आ रहा है। यहाँ द्वितीय ककार की यम संज्ञा है। इसी प्रकार अन्य वर्णों के विषय में भी समझना चाहिए।

अयोगवाहों को छोड़कर ऊपर परिगणित समस्त स्वर तथा व्यञ्जनों को **पाणिनि** ने स्वरचित **अष्टाध्यायी** में शास्त्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए चौदह प्रत्याहार-सूत्रों में इस प्रकार संनिविष्ट किया है। चौदह **प्रत्याहार-सूत्र** हैं :

अइउण्,	**ऋलृक्,**	**एओङ्,**	**ऐऔच्,**
हयवरट्,	**लण्,**	**ञमङणनम्,**	**झभञ्,**
घढधष्,	**जबगडदश्,**	**खफछठथचटतव्,**	
कपय्,	**शषसर्,**	**हल्।**	

प्रत्याहार का अर्थ है – संक्षिप्तीकरण अर्थात् अल्प से अधिक का कथन। लोक में भी यह प्रक्रिया प्रचलित है। हम नामों को भी संक्षेप कर कहने के अभ्यस्त होते हैं, जैसे–देवेन्द्र मिश्र को मात्र दे० मिश्र से भी कहा जा सकता है। प्रत्याहार-निर्माण की प्रक्रिया पाणिनि ने स्वयं बताई है – आदि वर्ण अन्तिम इत्संज्ञक वर्ण से मिलकर एक प्रत्याहार बनाता है तथा अपना और मध्य में आने वाले वर्णों का ज्ञान कराता है। उदाहरणार्थ – अच् को लीजिए – इस 'अच्' प्रत्याहार में आदि वर्ण अकार है जो प्रथम प्रत्याहार सूत्र का पहला अक्षर है तथा चकार चौथे प्रत्याहार सूत्र का अन्तिम वर्ण है। इस अच् प्रत्याहार में आदि वर्ण अकार अपना तथा मध्य में आने वाले इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ तथा औ का बोध कराता है। इसी प्रकार हल् से हकार का तथा हकार से लकार तक आने वाले वर्णों का ज्ञान होता है। इन प्रत्याहारों में विद्यमान अन्तिम हलन्त व्यञ्जनों की गिनती नहीं होती। वे केवल प्रत्याहार

बनाने में निमित्त हैं।

पाणिनि द्वारा रचित **अष्टाध्यायी** की प्रसिद्ध **टीका काशिका** के अनुसार चौदह प्रत्याहार-सूत्रों से या इस वर्णसमाम्नाय से 42 प्रत्याहार बनते हैं। इनमें अच् तथा हल् प्रसिद्ध प्रत्याहार हैं। अच् से समस्त स्वरों का तथा हल् से समस्त व्यञ्जनों का बोध होता है।

बोध प्रश्न 1

i) वर्ण किसे कहते हैं?

.....

.....

.....

.....

ii) स्वर तथा व्यञ्जन में भेद बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

iii) संस्कृत-वर्णमाला को कितने भागों में विभाजित किया गया है?

.....

.....

.....

.....

iv) प्रत्याहार-सूत्रों का क्या प्रयोजन है?

.....

.....

.....

v) अच् तथा हल् प्रत्याहारों से किन वर्णों का बोध होता है?

.....

.....

.....

.....

1.3 वर्णोच्चारण की प्रक्रिया

वर्णों के सामान्य परिचय के अनन्तर वर्णों की उच्चारण-प्रक्रिया का ज्ञान कराना अत्यन्त उपादेय है। वर्णों की उच्चारण-प्रक्रिया में स्थान, करण तथा प्रयत्न के स्वरूप का ज्ञान अनिवार्य है।

1.3.1 वर्णोच्चारण में स्थान

पाणिनि ने स्थान की व्युत्पत्ति इस प्रकार की है – **यत्रस्था वर्णा उपलभ्यन्ते तत्स्थानम्। (पाणिनीय शिक्षा)**

अर्थात् जहाँ निष्पन्न होकर वर्ण श्रवण का विषय बनते हैं, उसे स्थान कहते हैं। वर्णों के उच्चारण-स्थानों का विवरण इस प्रकार है –

	वर्ण	उच्चारण-स्थान	वर्ण का नाम
1.	**अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः**		
	अ, कवर्ग, ह्, विसर्ग(ः)	कण्ठ	कण्ठ्य
2.	**इचुयशानां तालु**		
	इ, चवर्ग, य्, श्	तालु	तालव्य
3.	**ऋटुरषाणां मूर्धा**		
	ऋ, टवर्ग, र्, ष्	मूर्धा	मूर्धन्य
4.	**लृतुलसानां दन्ताः**		
	लृ, तवर्ग, ल्, स्	दन्त	दन्त्य
5.	**उपूपध्मानीयानामोष्ठौ**		
	उ, पवर्ग, उपध्मानीय (ᳵ प्, ᳵ फ्)	ओष्ठ	ओष्ठ्य
6.	**ञमङणनानां नासिका च**		
	ञ, म्, ङ्, ण्, न्	नासिका-सहित स्वस्थान	अनुनासिक
7.	**एदैतोः कण्ठतालु**		
	ए, ऐ	कण्ठ और तालु	कण्ठ्यतालव्य
8.	**ओदौतोः कण्ठोष्ठम्**		
	ओ, औ	कण्ठ और ओष्ठ	कण्ठ्यौष्ठ्य
9.	**वकारस्य दन्तोष्ठम्**		
	व्	दन्त और ओष्ठ	दन्त्यौष्ठ्य
10.	**जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्**		
	जिह्वामूलीय (ᳵक, ᳵ ख)	जिह्वामूलीय	जिह्वामूलीय
11.	**नासिकानुस्वारस्य**		
	अनुस्वार (–̇)	नासिका	नासिक्य
12.	**यमानां नासिका**		
	यम	नासिका	नासिक्य

1.3.2 वर्णोच्चारण में करण

साधकतमं करणम् (अष्टा०1/4/42) पाणिनि के इस सूत्र के अनुसार उच्चारण-क्रिया में जो अवयव अत्यन्त सहायक हो, वही करण माना जाता है।

पाणिनि-शिक्षा के अनुसार –

येन निर्वृत्यन्ते तत्करणम् (पा०शि०)

उच्चारण-स्थानों में जीभ आदि के जिस भाग की सहायता से वर्णों का उच्चारण होता है, उसे **करण** कहते हैं।

वर्ण	करण	करण का विशेष भाग
जिह्व्य	जिह्वा	जिह्वामूल
तालव्य	,,	जिह्वामध्य
मूर्धन्य	,,	जिह्वोपाग्र
दन्त्य	,,	जिह्वाग्र
शेष वर्ण	स्व-स्व स्थान	–

1.3.3 वर्णोच्चारण में प्रयत्न

प्रयतनं प्रयत्नः (पा० शि०)

वर्णोच्चारण में प्रकृष्ट अर्थात् विशेष प्रयास यहाँ प्रयत्न शब्द से अभिप्रेत है। पाणिनि-शिक्षा में दो प्रयत्न उपलब्ध होते हैं –

1. आभ्यन्तर प्रयत्न।
2. बाह्य प्रयत्न।

आभ्यन्तर प्रयत्न –

आभ्यन्तर प्रयत्न वह है जिसका कार्य मुख के भीतर (ओष्ठ से लेकर काकलक से पहले) होता है अथवा वर्णों के उच्चारण से पहले जो प्रयत्न होता है, वह आभ्यन्तर प्रयत्न है। इसके पाँच भेद हैं –

1. स्पृष्ट
2. ईषत्स्पृष्ट
3. विवृत
4. ईषद्विवृत
5. संवृत

स्पृष्ट – वर्णोत्पत्ति से पूर्व जब जिह्वाग्र आदि भाग तालु आदि स्थानों का पूर्णतया स्पर्श करते हैं, तब वह प्रयत्न स्पृष्ट कहलाता है। क् से लेकर म् तक 25 वर्ण (स्पर्श) स्पृष्ट प्रयत्न वाले हैं।

ईषत्स्पृष्ट – जिनके उच्चारण में जिह्वाग्र आदि भाग तालु आदि स्थानों के पास पहुँचते तो हैं; परन्तु पूर्णतः स्पर्श नहीं करते, वे ईषत्स्पृष्ट कहलाते हैं। अन्तःस्थ वर्णों (य्, र् ल्, व्) का ईषत्स्पृष्ट प्रयत्न है।

ईषद्विवृत – स्वरों की अपेक्षा जब किसी वर्ण के उच्चारण में मुख-विवर थोड़ा खुला रहता है, तब वह प्रयत्न ईषद्विवृत होता है। ऊष्म वर्ण (श्, ष्, स्, ह्) ईषद्विवृत प्रयत्न वाले हैं। पाणिनि ने इन ऊष्म वर्णों का विवृत प्रयत्न भी माना है।

संवृत – जब जिह्वा का मूल तथा मध्य भाग ऐसा ऊपर उठा रहता है जिससे कण्ठ-विवर संकुचित हो जाता है तब यह प्रयत्न संवृत कहलाता है। ह्रस्व अकार का प्रयत्न संवृत है।

बाह्य प्रयत्न –

वर्णोच्चारण में प्राणवायु के उपयुक्त होने के अनन्तर होने वाले नाद, घोष आदि अवस्थाओं को बाह्य प्रयत्न कहते हैं। इसके 11 भेद हैं।

1. विवार 2. संवार 3. श्वास 4. नाद 5. घोष 6. अघोष 7. अल्पप्राण 8. महाप्राण 9. उदात्त 10. अनुदात्त 11. स्वरित ।

काकलक के मुँह पर दो स्वर-तन्त्रियाँ हैं, जो रबर की तरह फैलने और सिकुड़ने वाले दो पर्दे हैं। इनका **विवार** (खुलना) और **संवार** (सटना, बन्द होना) फेफड़े से निकले हुए वायु को अलग-अलग रूप देता है। संवार की अवस्था में वायु स्वर-तन्त्रियों के कम्पन के कारण **नादयुक्त** होकर और विवार की अवस्था में श्वास रूप में होकर मुख-विवर में पहुँचता है। काकलक से आये नादवान् वायु से उच्चारित वर्ण घोष कहलाते हैं, और केवल श्वास रूप में आए वायु से उच्चारित वर्ण अघोष कहलाते हैं।

प्रत्येक स्वर-वर्ण के उदात्त, अनुदात्त और स्वरित – ये तीन भेद होते हैं। **उच्चैरुदात्तः। (अष्टा० 1/2/29)** पाणिनि के इस सूत्र के अनुसार अपने निर्धारित स्थान के ऊपरी भाग से उच्चारित होने पर स्वर उदात्त कहलाता है।

नीचैरनुदात्तः (अष्टा० 1/2/30) अपने निर्धारित स्थान के निचले भाग से उच्चारित होने पर स्वर **अनुदात्त** कहलाता है।

समाहारः स्वरितः (अष्टा० 1/2/31) जब कोई स्वर अपने निर्धारित स्थान के ऊपरी एवं निचले दोनों भागों से सम्मिलित रूप में उच्चारित होता है तो वह **स्वरित** कहलाता है।

विभिन्न वर्णों के बाह्य-प्रयत्न इस प्रकार हैं –

विवार, भवास, अघोष	संवार, नाद, घोष	अल्पप्राण	महाप्राण	उदात्त, अनुदात्त, स्वरित
वर्गों के प्रथम, द्वितीय वर्ण एवं श्, ष्, स्	वर्गों के तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण, अन्तःस्थ एवं ह्	वर्गों के प्रथम, तृतीय, पञ्चम वर्ण एवं अन्तःस्थ	वर्गों के द्वितीय, चतुर्थ वर्ण एवं ऊष्म	सभी स्वर वर्ण

1.3.4 शुद्धोच्चारण की आवश्यकता

व्यवहार में शब्द वर्णात्मक हैं, इसीलिए शब्द की अभिव्यक्ति में उसमें स्थित वर्णों का ठीक प्रकार से उच्चारण करना अत्यन्त आवश्यक है। अन्यथा वक्ता को अभीष्ट की सिद्धि नहीं होती। **महाभाष्यकार** के अनुसार –

दुष्टः शब्दः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्।।
(महा० पस्पशाह्निक)

स्वर (उदात्त, अनुदात्त एवं स्वरित) तथा वर्ण-सम्बन्धी त्रुटि से युक्त दोषपूर्ण शब्द अपने अभीष्ट अर्थ की प्रतीति नहीं करा सकता। प्रत्युत अनिष्ट को ही जन्म देता है। इस बात को स्पष्ट करने के लिए महाभाष्यकार पतञ्जलि ने एक वैदिक आख्यान प्रस्तुत किया है कि एक बार वृत्रासुर ने अपने बलवान् शत्रु इन्द्र को नष्ट करने के लिए एक विशेष यज्ञ (अभिचार याग) का अनुष्ठान किया था। उसमें ऋत्विजों ने **'इन्द्रशत्रुर्वर्धस्व'** इस वाक्य में **'इन्द्रशत्रुः'** इस पद का उच्चारण करते हुए इन्द्र के इकार को उदात्त उच्चारित किया। वास्तव में यहाँ अन्तोदात्त स्वर अभीष्ट है; क्योंकि 'इन्द्रशत्रुः' इस सामासिक पद में आद्युदात्त का उच्चारण करते हैं तो बहुव्रीहि समास होता है। तब उस पद का अर्थ होगा – 'इन्द्र है मारने वाला जिसका वह'। किन्तु अन्तोदात्त के प्रयोग से तत्पुरुष समास होता है। तब उस पद का अर्थ होगा – 'इन्द्र को मारनेवाला'। इस स्वर-दोष के कारण से वृत्रासुर ही इन्द्र के द्वारा वध्य होने के कारण मारा गया।

वर्ण-दोष भी; जैसे –

स्वजनः श्वजनो मा भूत् सकलं शकलं सकृच्छकृत्।।

इस श्लोक में सकार के स्थान में शकार के प्रयोग से जो अनर्थ उत्पन्न होते हैं, उनका उल्लेख उदाहरणों से किया गया है; जैसे – स्वजनः 'अपने लोग' एवं श्वजनः का अर्थ 'कुत्ते के लोग' है। सकलं का अर्थ 'सारा' है तथा शकलं का 'टुकड़ा'। सकृत् का अर्थ 'एक बार' है एवं शकृत्' का 'मल'। यहाँ यदि सकार का उच्चारण शकार के रूप में किया जाए तो शब्द वर्णदोष से दुष्ट होकर अनर्थ को जन्म देगा। इसलिए शुद्धोच्चारण हर तरह से हो; यह बात सर्वथा ध्यान देने योग्य है।

बोध प्रश्न 2

i) उच्चारण-प्रक्रिया के कितने अङ्ग हैं? उनके नाम बताइए।

ii) निम्न वर्णों का उच्चारण-स्थान बताइए।

ऋ, इ, औ, ए, ह्, श्, ष्, स्, ट्, म्, य्।

iii) करण किसे कहते हैं?

iv) स्थान तथा करण में अन्तर बताइए?

v) मूर्धन्य वर्ण जिह्वा के किस भाग की सहायता से उच्चारित होते हैं?

vi) प्रयत्न कितने प्रकार के होते हैं?

1.4 वर्णोच्चारण में संहिता का प्रभाव

पाणिनि ने वर्णों के अत्यन्त सामीप्य को संहिता कहा है। संहिता की स्थिति या व्यवधान-रहित उच्चारण की स्थिति में वर्णों के विषय में जो परिवर्तन होते हैं उनमें लाघव तथा मुख-सुख ये दो महत्त्वपूर्ण प्रवृत्तियाँ हेतु हैं। उदाहरण के तौर पर वृक्षच्छाया (तुगागम), देवालयः, यद्यपि, ब्रह्मैक्यम् में स्वरों में परिवर्तन अर्थात् स्वर-सन्धि, वागीशः, देवश्चलति में हलों में विकार अर्थात् व्यञ्जन-सन्धि आदि सन्धि-स्थलों में संहिताकार्य से उच्चारण में बहुत ही

लाघव एवं मुखसुख की प्राप्ति हो रही है। यदि संहिताकार्य न करें तो गौरव एवं उच्चारण में सहजता कुण्ठित हो जाती है।

1.4.1 सन्धि

संहिता की परिस्थिति में अर्थात् उच्चारण की दृष्टि से वर्णों के अत्यन्त समीप होने पर वर्णों में जो परिवर्तन होता है, उसे सन्धि कहते हैं। लघुसिद्धान्तकौमुदी के आधार पर हम तीन प्रकार की सन्धि से परिचय प्राप्त करेंगे। अच्-सन्धि (स्वर-सन्धि), हल्-सन्धि (व्यञ्जन-सन्धि) तथा विसर्ग-सन्धि।

1.4.2 अच्-सन्धि (स्वर-सन्धि)

दो स्वरों (अचों) के अत्यन्त समीप होने पर अच् में जो परिवर्तन होता है उसे स्वर-सन्धि (अच्-सन्धि) कहते हैं।

दीर्घ-सन्धि (अकः सवर्णे दीर्घः)

ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ और ऋ के परे ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ और ऋ हों तो दोनों के स्थान पर क्रमशः आ, ई, ऊ और ॠ हो जाते हैं।

यथा–	अ	+ अ =	आ	परम	+	अर्थः	=	परमार्थः
	अ	+ आ =	आ	हिम	+	आलयः	=	हिमालयः
	आ	+ आ =	आ	विद्या	+	आलयः	=	विद्यालयः
	आ	+ अ =	आ	विद्या	+	अर्थी	=	विद्यार्थी
	इ	+ इ =	ई	अति	+	इव	=	अतीव
	इ	+ ई =	ई	मुनि	+	ईशः	=	मुनीशः
	ई	+ ई =	ई	लक्ष्मी	+	ईशः	=	लक्ष्मीशः
	ई	+ इ =	ई	नदी	+	इन्द्रः	=	नदीन्द्रः
	उ	+ उ =	ऊ	भानु	+	उदयः	=	भानूदयः
	उ	+ ऊ =	ऊ	लघु	+	ऊर्मिः	=	लघूर्मिः
	ऊ	+ ऊ =	ऊ	वधू	+	ऊर्जा	=	वधूर्जा
	ऊ	+ उ =	ऊ	वधू	+	उत्सवः	=	वधूत्सवः
	ऋ	+ ऋ =	ॠ	पितृ	+	ऋणम्	=	पितॄणम्

गुण-सन्धि : (आद्गुणः)

ह्रस्व या दीर्घ अ से परे यदि ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ या ऌ हो तो दोनों के स्थान पर क्रमशः ए, ओ, अर्, और अल् हो जाते हैं।

यथा–	अ	+ इ =	ए	देव	+	इन्द्रः	=	देवेन्द्रः
	अ	+ उ =	ओ	हित	+	उपदेशः	=	हितोपदेशः
	आ	+ इ =	ए	महा	+	इन्द्रः	=	महेन्द्रः
	आ	+ उ =	ओ	गङ्गा	+	उदकम्	=	गङ्गोदकम्

	अ	+ ई =	ए	नर	+ ईशः	=	नरेशः
	अ	+ ऊ =	ओ	जल	+ ऊर्मिः	=	जलोर्मिः
	आ	+ ई =	ए	महा	+ ईशः	=	महेशः
	आ	+ ऊ =	ओ	महा	+ ऊर्मिः	=	महोर्मिः
	अ	+ ऋ =	अर्	देव	+ ऋषिः	=	देवर्षिः
	अ	+ ऌ =	अल्	तव	+ ऌकारः	=	तवल्कारः
	आ	+ ऋ =	अर्	महा	+ ऋषिः	=	महर्षिः

वृद्धि-सन्धि : (वृद्धिरेचि)

1) ह्रस्व या दीर्घ अ से परे ए अथवा ऐ हो तो दोनों के स्थान पर 'ऐ' हो जाता है।

यथा –	अ	+ ए =	ऐ	तव	+ एव	=	तवैव
	अ	+ ऐ =	ऐ	देव	+ ऐश्वर्यम्	=	देवैश्वर्यम्
	आ	+ ए =	ऐ	तथा	+ एव	=	तथैव
	आ	+ ए =	ऐ	महा	+ ऐश्वर्यम्	=	महैश्वर्यम्

2) ह्रस्व या दीर्घ अ से परे ओ या औ हो तो दोनों के स्थान पर 'औ' हो जाता है।

यथा –	अ	+ ओ =	औ	तण्डुल	+ ओदनम्	=	तण्डुलौदनम्
	अ	+ औ =	औ	मम	+ औषधम्	=	ममौषधम्
	आ	+ ओ =	औ	महा	+ ओषधिः	=	महौषधिः
	आ	+ औ =	औ	सदा	+ औत्सुक्यम्	=	सदौत्सुक्यम्

यण्-सन्धि : (इकोयणचि)

ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ और ऌ के परे यदि कोई भिन्न स्वर आए तो इ और ई को य्, उ और ऊ को व्, ऋ और ॠ को र् और ऌ को ल् हो जाता है।

यथा –	इ	+ अ =	य	यदि	+ अपि	=	यद्यपि
	ई	+ अ =	य	देवी	+ अस्ति	=	देव्यस्ति
	इ	+ आ =	या	इति	+ आदि	=	इत्यादि
	ई	+ आ =	या	नारी	+ आभरणम्	=	नार्याभरणम्
	उ	+ आ =	वा	सु	+ आगतम्	=	स्वागतम्
	ऋ	+ अ =	र्	पितृ	+ अर्थम्	=	पित्रर्थम्।
	ऊ	+ आ =	वा	वधू	+ आज्ञा	=	वध्वाज्ञा

अयादि-सन्धि : (एचोऽयवायावः)

ए, ऐ, ओ तथा औ से परे कोई स्वर हो तो ए को अय्, ऐ को आय्, ओ को अव् और औ को आव् हो जाता है।

यथा –	ए	+ अ =	अय्	ने	+ अनम्	=	नयनम्

ओ + अ = अव् पो + अनः = पवनः

ऐ + अ = आय् गै + अकः = गायकः

औ + अ = आव् पौ + अकः = पावकः

पूर्वरूप-सन्धि : (एङः पदान्तादति)

पद के अन्त में ए या ओ हो और उससे परे ह्रस्व अ आए तो उस अ को पूर्वरूप हो जाता है।

यथा – ए + अ = ए ते + अपि = तेऽपि

ओ + अ = ओ साधो + अत्र = साधोऽत्र

'अ' के स्थान पर दर्शाए गये इस 'ऽ' चिह्न को **अवग्रह** कहते हैं।

1.4.3 हल्-सन्धि (व्यञ्जन-सन्धि)

स्वर या व्यञ्जन के अत्यन्त समीप होने पर व्यञ्जन में जो परिवर्तन होता है उसे व्यञ्जन-सन्धि कहते हैं।

1. तवर्ग या स् के बाद या पहले चवर्ग या श् हो तो तवर्ग को चवर्ग और स् को श् हो जाता है : **(स्तोः श्चुना श्चुः) –**

   यथा – सत् + चित् = सच्चित् । मनस् + चलति = मनश्चलति।

   महद् + जलम् = महज्जलम् । शत्रून् + जय = शत्रूञ्जय ।

2. व्यञ्जन के परे रहते पदान्त म् को अनुस्वार हो जाता है : **(मोऽनुस्वारः)** –

   यथा – पत्रम् + पतति = पत्रं पतति।

   अहम् + दुग्धम् + पिबामि = अहं दुग्धं पिबामि।

3. यदि पद के अन्त में वर्णों के प्रथम वर्ण हों और उससे परे स्वर अथवा वर्गों के तृतीय, चतुर्थ या पञ्चम वर्ण अथवा य्, र्, ल्, व् हों तो प्रथम वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तृतीय वर्ण हो जाता है : **(झलां जशोऽन्ते)**

   यथा – वाक् + ईशः = वागीशः । जगत् + ईशः = जगदीशः ।

   अच् + अन्तः = अजन्तः । महत् + दुःखम् = महद्दुःखम् ।

4. वर्ग के प्रथम वर्ण के परे ङ्, ञ्, ण्, न् या म् हो तो क् को ङ्, च् को ञ्, ट् को ण्, त् को न् और प् को म् हो जाता है।

यथा – पृथक् + नास्ति = पृथङ्नास्ति

जगत् + नाथः = जगन्नाथः

षट् + मुखः = षण्मुखः

अप् + मानम् = अम्मानम्

1.4.4 विसर्ग-सन्धि

विसर्ग (:) से परे स्वर या व्यञ्जन हो तो विसर्ग के स्थान पर जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग-सन्धि कहते हैं।

1. विसर्ग से पूर्व अ हो और विसर्ग से परे वर्गों के तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण अथवा य्, र्, ल्, व्, ह् हों तो विसर्ग को उ हो जाता है।

यथा – नरः + गच्छति = नरो गच्छति

बालः + नमति = बालो नमति

2. विसर्ग से परे श्, ष्, स् हो तो विसर्ग को क्रमशः श्, ष्, स् हो जाता है।

यथा – हरिः + शेते = हरिश्शेते।

3. विसर्ग के परे ट् या ठ् हो तो विसर्ग को ष्, यदि त् या थ् हो तो विसर्ग को स् हो जाता है।

यथा – रामः + टीकते = रामष्टीकते

देवः + तरति = देवस्तरति

4. विसर्ग के परे च् या छ् हो तो विसर्ग को श् हो जाता है।

यथा – रामः + चलति = रामश्चलति

5. ह्रस्व अ के अतिरिक्त कोई वर्ण सः तथा एषः के परे हो तो सः तथा एषः के विसर्ग का लोप हो जाता है।

यथा – सः पठति = स पठति

एषः गच्छति = एष गच्छति

6. यदि विसर्ग से पूर्व अ तथा आ के अतिरिक्त कोई स्वर हो और विसर्ग के परे स्वर, वर्गों के तृतीय, पञ्चम वर्ण या य्, व्, र् ल्, ह् हो तो विसर्ग को र् हो जाता है।

यथा – क्रतुः + इह = क्रतुरिह

हरिः + आगच्छति = हरिरागच्छति

7. यदि विसर्ग से पहले और बाद में ह्रस्व अ हो तो विसर्ग को उ हो जाता है। तब अ और उ में गुण-सन्धि होकर अ + उ के स्थान पर 'ओ' हो जाता है और बाद में आने वाले अ को पूर्वरूप हो जाता है।

यथा – रामः + अवदत् = रामोऽवदत्

बोध प्रश्न – 3

(i) संहिता किसे कहते हैं?

(ii) सन्धि का क्या अर्थ है?

(iii) सन्धि कितने प्रकार की होती है? उनके नाम बताइए।

(iv) अधोलिखित में सन्धिविच्छेद करके सन्धि का नाम बताइए।

विद्यालयः, अतीव, भानूदयः, महेशः, देवर्षिः, तथैव, महौषधिः, स्वागतम्, पित्रर्थम्, गायकः, सच्चित्, वागीशः, जगन्नाथः, देवस्तरति, रामोऽवदत् ।

(v) अधोलिखित में सन्धि कीजिए।

गुरु + उपदेशः, हित + उपदेशः, तव + लृकारः, यदि + अपि, अच् + अन्तः, नरः + गच्छति, हरिः + आगच्छति, शत्रून् + जय।

1.5 सारांश

इस इकाई में आपने वर्ण के स्वरूप तथा उसकी उच्चारण-प्रक्रिया के विषय में पढ़ा। वर्ण के उच्चारण में जिह्वा के अग्र, उपाग्र, मध्य तथा मूल भागों की सहायता से प्राण-वायु मुखवर्ती कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ आदि स्थानों से टकराता है तथा विभिन्न सार्थक मूल ध्वनियों को उत्पन्न करता है। करण, स्थान तथा प्रयत्न की भिन्नता पर आधारित है।

- संस्कृत वर्णमाला में कुल 63 वर्ण हैं, जिनमें 22 स्वर तथा 33 व्यञ्जन हैं।
- स्वर का उच्चारण करते समय प्राण-वायु के निष्कासन में कोई अवरोध नहीं होता, जबकि व्यञ्जन के उच्चारण में प्राण-वायु के निष्कासन में रुकावट होती है।
- 63 वर्णों के अतिरिक्त 8 प्रकार के अयोगवाह भी होते हैं। इनमें विसर्ग, अनुस्वार, जिह्वामूलीय, उपध्मानीय तथा 4 यम आते हैं।
- अयोगवाहों को छोड़कर पाणिनि ने इन वर्णों को शास्त्र की आवश्यकता के अनुसार 14 प्रत्याहार सूत्रों में संनिविष्ट किया है। इन प्रत्याहार सूत्रों से 42 प्रत्याहार बनते हैं।
- शुद्ध वर्णोच्चारण के महत्त्व की जानकारी भी आपको मिल गई है।
- वर्णोच्चारण की प्रक्रिया पर संहिता का प्रभाव पड़ता है। परिणामस्वरूप सन्धि का जन्म होता है। इसमें लाघव तथा मुख-सुख ये दो प्रवृत्तियाँ हेतु हैं।
- वर्णों के सामीप्य के कारण वर्ण-विकार को सन्धि कहते हैं। यह तीन प्रकार की होती है – अच्-सन्धि, हल्-सन्धि तथा विसर्ग-सन्धि।

1.6 शब्दावली

वर्णोच्चारण	–	वर्णों का उच्चारण।
इच्छानुवर्ती	–	इच्छा का अनुसरण करने वाला।
शरीरस्थ	–	शरीर में स्थित या अन्दर।
मुखविवर	–	मुख का छेद।
प्रादुर्भाव	–	उत्पत्ति, उद्भव।
वाक्तन्तुओं	–	वाणी के प्रादुर्भाव में सहायक तन्तुओं में।
अभीष्ट	–	इच्छित वस्तु या पदार्थ।
लाघव	–	लघुता या सरलता।

1.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. पाणिनीयशिक्षा-दयानन्द सरस्वती – वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
2. वाक्यपदीय, ब्रह्मकाण्ड, भर्तृहरि – चौखम्बा औरियण्टालिया, दिल्ली।

3. महाभाष्य पस्पशाह्निक तथा प्रत्याहाराह्निक-पतञ्जलि – साहित्य भण्डार, मेरठ।

4. लघुसिद्धान्तकौमुदी-वरदराज – मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1.

i) भाषा की वह मूलध्वनि जो अर्थ का सम्प्रेषण करती है, वर्ण कहलाती है।

ii) जिन वर्णों के उच्चारण से प्राणवायु में कोई अवरोध उत्पन्न न हो, वे स्वर कहलाते हैं। जिन वर्णों के उच्चारण में प्राणवायु के निष्कासन में किञ्चित् अवरोध उत्पन्न हो, वे व्यञ्जन कहलाते हैं।

iii) संस्कृत-वर्णमाला को तीन भागों में विभाजित किया गया है –

(1) स्वर (2) व्यञ्जन (3) अयोगवाह ।

iv) संक्षिप्तीकरण । प्रत्याहारों की संख्या 42 है।

v) अच् से स्वरों का तथा हल् से व्यञ्जनों का।

बोध प्रश्न 2

i) उच्चारण-प्रक्रिया के तीन अङ्ग हैं : (1) स्थान (2) करण (3) प्रयत्न।

ii) मूर्धा, तालु, कण्ठोष्ठ, कण्ठतालु, कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, मूर्धा तथा नासिका, तालु। मकार का उच्चारण ओष्ठ तथा नासिका से, य् का तालु से।

iii) उच्चारण-प्रक्रिया में जिह्वा का वह भाग जिससे प्राणवायु उच्चारण-स्थान पर टकराता है, उसे (जिह्वा के उस भाग को) करण कहते हैं।

iv) जहाँ निष्पन्न होकर वर्ण श्रवण का विषय बनते हैं, उसे 'स्थान' कहते हैं, तथा उच्चारण-स्थानों में जीभ आदि के जिस भाग की सहायता से वर्णों का उच्चारण होता है, उसे 'करण' कहते हैं।

v) मूर्धन्य वर्ण जिह्वोपाग्र भाग से उच्चारित होते हैं।

vi) प्रयत्न दो प्रकार के होते हैं – आभ्यन्तर तथा बाह्य।

बोध प्रश्न 3

i) वर्णों के अत्यन्त सामीप्य को संहिता कहते हैं।

ii) वर्णों का अत्यन्त सामीप्य होने पर वर्णों में जो विकार उत्पन्न होता है, उसे सन्धि कहते हैं।

iii) सन्धि तीन प्रकार की होती है –

1) अच् (स्वर)–सन्धि

2) हल् (व्यञ्जन)–सन्धि

3) विसर्ग-सन्धि।

iv) तथा (v) प्रश्नों के उत्तर इस इकाई के सन्धि के पृष्ठों पर निर्दिष्ट हैं।

इकाई 2 पद, लिङ्ग, वचन, पुरुष और काल

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 पद – परिभाषा और विभाजन

2.3 लिङ्ग – परिभाषा और विभाजन

2.4 वचन – परिभाषा और विभाजन

2.5 पुरुष – परिभाषा और विभाजन

2.6 काल – परिभाषा और विभाजन

2.7 सारांश

2.8 शब्दावली

2.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप :

- संस्कृत भाषा के पद, लिङ्ग, वचन, पुरुष और काल के बारे में आवश्यक जानकारी प्राप्त कर लेंगे।
- शब्द (पद) के निर्माण की प्रक्रिया के बारे में बता सकेंगे तथा पद एवं पदार्थ के भेदक तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ हो सकेंगे।
- पद के लिङ्ग का निर्धारण करने तथा उसके अनुसार उसका प्रयोग करने में सक्षम हो सकेंगे।
- पद को आवश्यकतानुसार वचनों में परिवर्तित कर सकेंगे तथा प्रयोग की प्रक्रिया का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- लकारों का सामान्य परिचय प्राप्त करते हुए प्रयोक्ता द्वारा प्रयुक्त क्रिया के काल को पहचान सकेंगे तथा काल के अनुसार क्रिया का प्रयोग करने में समर्थ हो सकेंगे।
- उपर्युक्त सभी बिन्दुओं के महत्त्व को जान सकेंगे तथा संस्कृत भाषा में उनके प्रयोग की प्रक्रिया को सरलतापूर्वक सम्पादित कर सकेंगे।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप संस्कृत भाषा के पद, लिङ्ग, वचन, पुरुष और काल का आधारभूत ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे और उनका सही प्रयोग करने में समर्थ होंगे।

2.1 प्रस्तावना

आधुनिक भारतीय भाषा के इस पाठ्यक्रम का यह प्रथम खंड है। जिसकी पहली इकाई के माध्यम से आपने वर्णोच्चारण की प्रक्रिया, सन्धि, शुद्धोच्चारण आदि विषयों का परिचय प्राप्त

किया। अब आप पद, लिङ्ग, वचन, पुरुष और काल के विषय में अध्ययन करेंगे।

इस इकाई में आप संस्कृत भाषा में पद, लिङ्ग, वचन, पुरुष और काल के महत्त्व तथा उसके प्रयोग पर चर्चा करेंगे। जैसा कि आप जानते हैं कि संस्कृत भाषा विश्व की प्राचीन भाषाओं में से एक है। अतः इस भाषा की जानकारी प्राप्त करने से भाषाओं के विकास और विशेष रूप से भारतीय भाषाओं के विकास को समझने में मदद मिलेगी।

2.2 पद – परिभाषा और विभाजन

आपने इकाई-1 में वर्णोच्चारण की प्रक्रिया सहित सम्पूर्ण संस्कृत वर्णमाला का परिचय प्राप्त किया। इस क्रम में आपने वर्णों के उच्चारण-स्थान, करण, प्रयत्न आदि का ज्ञान प्राप्त किया। अब आप पद एवं शब्द में अन्तर, पद की परिभाषा, पद के भेद आदि के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

'पद' एवं 'शब्द' प्रायः एकार्थक माने जाते हैं; किन्तु ऐसा नहीं है। व्याकरण की दृष्टि से दोनों भिन्न अर्थ का बोध कराते हैं। पद का मूलरूप जो सार्थक वर्णसमूह है 'शब्द' कहलाता है। संस्कृत भाषा में शब्द को प्रातिपदिक या प्रकृति कहा जाता है। महर्षि पतञ्जलि शब्द को स्पष्ट करते हुए कहते हैं :– **'प्रतीतपदार्थको लोके ध्वनिः शब्द इत्युच्यते'**। अर्थात् 'लोकव्यवहार में जिस ध्वनि से अर्थ का बोध होता है वह शब्द कहलाता है। किन्तु शब्द जब तक पद नहीं बन जाता है तब तक उसका वाक्य में प्रयोग नहीं किया जा सकता है तथा पद बनाने के लिए शब्द (प्रातिपदिक/प्रकृति) में विशिष्ट अर्थ का बोध कराने वाले प्रत्यय लगाए जाते हैं, जिन्हें सुप् एवं तिङ् कहा जाता है। शब्द को चार भागों में विभक्त किया गया है :

क) रूढ शब्द : जिनमें प्रकृति-प्रत्यय को अलग न किया जा सके, ऐसे शब्द 'रूढ शब्द' कहे जाते हैं। जैसे – गो, मणि, नूपुर आदि।

ख) यौगिक शब्द : जो शब्द प्रकृति-प्रत्यय के संयोग से बनते हैं, वे 'यौगिक शब्द' कहे जाते हैं। जैसे – कृ+तृ=कर्तृ, भूत+इक=भौतिक आदि।

ग) योगरूढ शब्द : जो शब्द यौगिक होते हुए भी किसी विशेष अर्थ में रूढ हो जाते हैं, वे 'योगरूढ शब्द' कहे जाते हैं। जैसे – 'जलज' शब्द से जल में उत्पन्न किसी भी पदार्थ का बोध होना चाहिये; किन्तु 'जलज' शब्द से कमल का ही बोध होता है क्योंकि वह कमल के अर्थ में ही रूढ है।

घ) यौगिकरूढ शब्द : वे शब्द जिनका यौगिक अर्थ होने के साथ-साथ रूढि से भी अर्थ का बोध हो, यौगिकरूढ शब्द कहलाते हैं। इसका उदाहरण 'उद्भिद' शब्द है। इस शब्द का यौगिक अर्थ है – वृक्ष, गुल्म (झाड़ी) जबकि रूढि से यह याग-विशेष का वाचक है।

अब आप पद के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

संस्कृत के प्रारम्भिक भाषाविद् वैयाकरणों ने पद को अपने ढंग से परिभाषित करने का प्रयास किया है। ऋक्प्रातिशाख्यकार एवं अर्थशास्त्रकार ने ''वर्णसंघातः पदम्'' कहा, आचार्य यास्क ने ''अर्थः पदमैन्द्राणाम्'', शुक्लयजुःप्रातिशाख्यकार ने ''अर्थः पदम्'', बृहद्देवताकार ने ''अर्थात् पदं स्वाभिधेयम्'', महर्षि पाणिनि ने "सुप्तिङन्तं पदम्'', महर्षि पतञ्जलि ने "विभक्तयन्तं पदम्'' कहकर पद को परिभाषित करने का प्रयास किया। इस प्रकार उपर्युक्त परिभाषाओं

को देखने पर यह निश्चय होता है कि सुबन्त एवं तिङन्त अर्थात् "सुप् एवं तिङ् प्रत्यय से युक्त सार्थक वर्णसमूह को पद कहा गया है"। अब आप यह जानना चाहेंगे कि उपर्युक्त प्रत्यययुक्त सार्थक वर्णसमूह रूपी पद के कितने भेद हैं।

पद को विद्वानों ने चार भागों में विभाजित किया है – **"चत्वारि पदजातानि नामाख्यातोपसर्गनिपाताः"**। अर्थात् पद चार भागों में विभक्त हैं – नाम, आख्यात, उपसर्ग एवं निपात। पद के चार विभाग मानने वालों में महर्षि यास्क, शौनक, पतञ्जलि आदि प्रमुख हैं। महर्षि पाणिनि सुबन्त एवं तिङन्त भेद से पद को दो भागों में विभाजित करते हैं। इस प्रकार पद का विभाजन दो प्रकार से किया गया :

क) नाम, आख्यात, उपसर्ग एवं निपात।

ख) सुबन्त एवं तिङन्त।

उपर्युक्त पद-भेदों में समन्वय करते हुए आचार्य नागेशभट्ट का कहना है कि नाम शब्द से सुबन्त का तथा आख्यात शब्द से तिङन्त का बोध होता है। उपसर्ग एवं निपात गोबलीवर्दन्याय से इनमें अन्तर्भावित हो गये हैं :

नामाख्यातेति-नामशब्देन सुबन्तम्, नमत्याख्यातार्थं प्रति विशेषणीभवतीति व्युत्पत्तेः। आख्यातं तिङन्तम्। उपसर्गनिपातयोः पृथगुपादानं गोबलीवर्दन्यायेन।

अब तक आप पद की परिभाषा एवं उसके भेदों के बारे में जान गए होंगे। अब आप यह जानना चाहेंगे; कि सुप् एवं तिङ् प्रत्ययों से पद का निर्माण कैसे होता है? मूलशब्द अर्थात् प्रातिपदिक या प्रकृति में जब प्रत्यय का योग होता है तब 'पद' अर्थात् रूप का निर्माण होता है। यह रूप दो प्रकार का होता है : सुबन्त एवं तिङन्त।

क) सुबन्त : प्रातिपदिक शब्द को वाक्यप्रयोग के योग्य बनाने के लिए उनमें सुप् प्रत्यय लगाया जाता है। इन प्रत्ययों के योग से जब पद का निर्माण होता है तो उसे 'शब्दरूप' कहा जाता है। सुप् प्रत्यय–'सु, औ, जस्; अम्, औट्, शस्; टा, भ्याम्, भिस्; ङे, भ्याम्, भ्यस्; ङसि, भ्याम्, भ्यस्; ङस्, ओस्, आम्; ङि, ओस्, सुप्–' कुल 21 हैं। इनका विभक्तियों के अनुसार प्रयोग 'वचन' प्रकरण में बताया जाएगा। जैसे– 'बालक' शब्द में 'सु' प्रत्यय लगाने से 'बालकः' पद बना, जिसका अर्थ है 'बालक ने'। शब्दरूप के निर्माण की प्रक्रिया इकाई 3 में बताई जाएगी।

ख) तिङन्त : धातु अर्थात् क्रिया को वाक्यप्रयोग के योग्य बनाने के लिए उनमें तिङ् प्रत्यय लगाए जाते हैं। तिङ् प्रत्ययों के योग से जब पद का निर्माण होता है तो उसे क्रियापद या धातुरूप कहा जाता है। तिङ् प्रत्यय – तिप्, तस्, झि; सिप्, थस्, थ; मिप्, वस्, मस्; त, आताम्, झ; थास्, आथाम्, ध्वम्; इट्, वहि, महिङ् – कुल 18 हैं। जिनमें प्रारम्भ के 9 प्रत्यय परस्मैपद तथा अन्त के 9 प्रत्यय आत्मनेपद हैं। जिन धातुरूपों के द्वारा परार्थ का बोध होता है उन्हें परस्मैपदी तथा जिन धातुरूपों के द्वारा स्वार्थ का बोध होता है उन्हें आत्मनेपदी कहा जाता है अर्थात् जब क्रिया कर्ता को छोड़कर किसी अन्य के लिए की जाती है तो परस्मैपद का प्रयोग किया जाता है और जब क्रिया का फल कर्ता को ही प्राप्त होता है अर्थात् क्रिया कर्ता के लिए ही की जाती है, तो आत्मनेपद का प्रयोग किया जाता है। जैसे– पठ् धातु (क्रियाशब्द) में 'तिप्' प्रत्यय लगाने से 'पठति' पद बना, जिसका अर्थ है 'पढ़ता है'। धातुरूप के निर्माण की प्रक्रिया विस्तारपूर्वक इकाई 4 में बताई जाएगी।

अब आप यह जान गए होंगे कि शब्दरूप में लगने वाले प्रत्ययों को 'सुप्' कहा जाता है, जो कारक एवं वचन के चिह्न हैं (कारक के बारे में आपको इकाई 5 में बताया जाएगा) तथा धातुरूप में लगने वाले प्रत्ययों को 'तिङ्' कहा जाता है, जो काल एवं वृत्ति के बोधक चिह्न हैं। काल के बारे में उसी इकाई में आगे बताया जाएगा।

बोध प्रश्न 1

क) अधोलिखित वाक्यों में सही/गलत का चयन करें :–

1) नाम को सुबन्त नहीं कहते हैं। सही ☐ गलत ☐

2) तिङन्त पद का एक भेद है। सही ☐ गलत ☐

3) पद का विभाजन दो प्रकार से किया गया है। सही ☐ गलत ☐

4) "सुप्तिङन्तं पदम्" महर्षि पतञ्जलि का कथन है। सही ☐ गलत ☐

5) गोबलीवर्दन्याय से नाम एवं आख्यात में उपसर्ग एवं निपात का अन्तर्भाव हो जाता है। सही ☐ गलत ☐

ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :–

1) बालकः पद ..... रूप है।

2) शब्द को संस्कृत भाषा में ..... कहते हैं।

3) धातुरूप को .....भी कहा जाता है।

4) शब्द के ..... भेद होते हैं।

ग) अधोलिखित शब्दों में से रूढ, यौगिक, योगरूढ तथा यौगिकरूढ शब्द अलग करें :

रत्न, सरसिज, लौकिक, क्षीण, वनज, सारथि, बली, रथी, नर, गृह, गृही, राम, पितर, मौलिक, मागध, उद्भिद्, अश्वगन्धा।

घ) अधोलिखित प्रत्ययों में से सुप् एवं तिङ् प्रत्ययों को अलग करें :

तिप्, सुप्, टा, थस्, भिस्, त, भ्याम्, ध्वम्, भ्यस्, मि, महिङ्, ङि, झि, ओस्, सु, जस्, वस्।

2.3 लिङ्ग – परिभाषा और विभाजन

किसी वस्तु के स्वरूप की पहचान कराने वाले 'चिह्न' को लिङ्ग कहा जाता है। महर्षि पाणिनि ने लिङ्ग-ज्ञान के विषय में लोक-व्यवहार को प्रामाणिक माना है : **तदशिष्यं संज्ञाप्रमाणत्वात्।** 1/2/53 ।। जबकि आचार्य भर्तृहरि ने वक्ता के कहने की इच्छा को लिङ्ग-ज्ञान का आधार माना है : **स्थितेषु त्रिषु लिङ्गेषु विवक्षा नियमाश्रयः। कस्यचित् शब्दसंस्कारे व्यापारः क्वचिदिष्यते** ।। वाक्यपदीय, तृतीयकाण्ड,11।।

संस्कृत भाषा में लिङ्ग तीन प्रकार के होते हैं :

क) पुंल्लिङ्ग

ख) स्त्रीलिङ्ग

ग) नपुंसकलिङ्ग।

क) पुंल्लिङ्ग :– जो शब्द पुरुषत्व व्यवहार के वाचक होते हैं, वे पुंल्लिङ्गवाची शब्द कहे जाते हैं। जैसे :– राम, पति, भगवत्, आत्मन्, वणिज्, नर, गुरु, राजन्, अश्व, सखि, साधक, अध्यापक, कामिन्, पितामह आदि।

ख) स्त्रीलिङ्ग :– जो शब्द स्त्रीत्व व्यवहार के वाचक होते हैं, वे स्त्रीलिङ्गवाची शब्द कहे जाते हैं। जैसे :– रमा, बालिका, मति, स्त्री, धेनु, वधू, मातृ, नारी, मृगी, नदी, कोकिला, भगिनी, वेश्या, कामिनी, पितामही आदि।

ग) नपुंसकलिङ्ग :– ऐसे पदार्थवाचक शब्द जिनकी गणना पुंल्लिङ्ग एवं स्त्रीलिङ्गवाची शब्दों में नहीं की जाती है, वे नपुंसकलिङ्गवाची शब्द कहे जाते हैं। जैसे :– पत्र, गृह, अक्षि, वारि, अस्थि, जगत्, अहन्, धनुष्, पयस्, मनस् आदि।

अब तो आप जान ही गए होंगे कि लिङ्ग किसे कहते हैं एवं लिङ्ग के कितने प्रकार हैं। अब लिङ्ग-ज्ञान के विषय में कुछ विशेष बातों पर ध्यान दीजिए; संस्कृत भाषा के शब्दों की प्रकृति ऐसी है कि पुंल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग का बोध कराने के लिए शब्द में किसी लिङ्गद्योतक प्रत्यय की आवश्यकता नहीं होती है, वरन् लिङ्ग के अनुसार ही उनके विभक्तिरूपों में उचित परिवर्तन कर दिया जाता है। परन्तु संस्कृत-व्याकरण में स्त्रीलिङ्ग का बोध कराने के लिए स्त्रीत्व-द्योतक प्रत्ययों का विधान किया गया है, जिन्हें स्त्रीप्रत्यय कहा गया है; स्त्रीप्रत्यय का प्रयोग पुंल्लिङ्गवाची शब्द को स्त्रीलिङ्गवाची बनाने के लिए किया जाता है। संस्कृत-भाषा में कुछ शब्द ऐसे भी हैं जो अलिङ्ग कहे जाते हैं : अस्मद्, युष्मद् तथा षान्त एवं नान्त संख्यावाची शब्द। इन शब्दों का तीनों लिङ्गों में एक समान प्रयोग किया जाता है।

बोध प्रश्न 2

क) अधोलिखित वाक्यों में सही/गलत का चयन करें :–

i) संस्कृत भाषा में लिङ्ग तीन प्रकार के होते हैं। सही ☐ गलत ☐

ii) युष्मद् शब्द नपुंसकलिङ्ग का वाचक है। सही ☐ गलत ☐

iii) किसी वस्तु के स्वरूप का बोधक चिह्न लिङ्ग कहलाता है। सही ☐ गलत ☐

iv) युवन् शब्द अलिङ्गवाची है। सही ☐ गलत ☐

ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :–

i) पुंल्लिङ्गवाची शब्द को स्त्रीलिङ्गवाची बनाने के लिए ..... का प्रयोग किया जाता है।

ii) अस्मद् शब्द ..... वाची है।

iii) पाणिनि ने ..... को लिङ्गज्ञान के विषय में प्रामाणिक माना है।

iv) पुंल्लिङ्ग शब्द बनाने के लिए लिङ्गद्योतक प्रत्यय की आवश्यकता ..... पड़ती है।

ग) अधोलिखित शब्दों में से पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग एवं नपुंसकलिङ्ग के शब्द अलग करें :–

वारि, नर, आत्मन्, गुरु, वधू, रथ, नेत्र, राजन्, लता, मातृ, मधु, धेनु, सखि, अहन्, पुंस्, पयस्, सरित्।

2.4 वचन – परिभाषा और विभाजन

संस्कृत भाषा में एकत्वविशिष्ट कारक का बोध कराने के लिए एकवचनविभक्तिप्रत्यय, द्वित्वविशिष्टकारक का बोध कराने के लिए द्विवचनविभक्तिप्रत्यय एवं बहुत्वविशिष्टकारक का बोध कराने के लिए बहुवचनविभक्तिप्रत्यय का विधान किया गया है। इसे आप इस प्रकार समझ सकते हैं कि – एक वस्तु का निर्देश करने के लिए एकवचन, दो वस्तुओं का निर्देश करने के लिए द्विवचन तथा दो से अधिक वस्तुओं का निर्देश करने के लिए बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। सुप् एवं तिङ् प्रत्ययों का विभाजन निम्नवत् है :

1) **सुप् प्रत्ययों का विभक्ति एवं वचन के अनुसार विभाजन :–** सुप् प्रत्यय संख्या में 21 हैं तथा प्रत्येक विभक्ति में 3 प्रत्यय एवं प्रत्येक वचन में 7 प्रत्यय होते हैं।

विभिक्त	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा (कर्ता)	सु	औ	जस्
द्वितीया (कर्म)	अम्	औट्	शस्
तृतीया (करण)	टा	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी (सम्प्रदान)	ङे	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी (अपादान)	ङसि	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी (सम्बन्ध)	ङस्	ओस्	आम्
सप्तमी (अधिकरण)	ङि	ओस्	सुप्

2) **तिङ्प्रत्ययों का पुरुष एवं वचन के अनुसार विभाजन :–** तिङ्प्रत्यय संख्या में 18 हैं। जिनमें से 9 प्रत्यय परस्मैपद तथा 9 प्रत्यय आत्मनेपद हैं।

(क) परस्मैपद प्रत्यय :-

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम	तिप्	तस्	झि
मध्यम	सिप्	थस्	थ
उत्तम	मिप्	वस्	मस्

(ख) आत्मनेपद प्रत्यय :-

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम	त	आताम्	झ
मध्यम	थास्	आथाम्	ध्वम्
उत्तम	इट्	वहि	महिङ्

यहाँ तक आपने विभक्ति एवं पुरुष के अनुसार सुप् एवं तिङ् प्रत्ययों के एकवचन, द्विवचन एवं बहुवचनपरक विभाजन को जाना। अब वचन के सम्बन्ध में कुछ ध्यान देने योग्य विशेष बातें :–

- **'आदरार्थे बहुवचनम्'** अर्थात् किसी के प्रति आदर या सम्मान प्रकट करने के अर्थ में एकवचन या द्विवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग होता है। जैसे गुरू जी आ रहे हैं के लिए 'गुरवः आगच्छन्ति'–यह प्रयोग किया जा सकता है।

- उत्तम पुरुष के प्रयोग में भी एकवचन या द्विवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग होता है। जैसे– मैं जा रहा हूँ या हम दोनों जा रहे हैं के लिए 'वयं गच्छामः' – यह प्रयोग किया जा सकता है। कुछ शब्दों का प्रयोग केवल द्विवचन में ही होता है। जैसे– उभौ, दम्पती, पितरौ, अश्विनौ, द्वौ आदि।
- कुछ शब्दों का प्रयोग केवल बहुवचन में ही होता है। जैसे– दाराः, असवः, प्राणाः, आपः, वर्षाः, सुमनसः, कति, 3 से 18 तक की संख्यायें आदि।
- क्रिया के भाववाच्य में केवल प्रथम पुरुष एकवचन का ही प्रयोग होता है।

बोध प्रश्न 3

क) अधोलिखित वाक्यों में से सही/गलत का चयन करें :–

i) वचन का प्रयोग संख्या का बोध कराने के लिए होता है। सही ☐ गलत ☐

ii) द्विवचन से अनेक संख्याओं का बोध होता है। सही ☐ गलत ☐

iii) आदर प्रकट करने के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है। सही ☐ गलत ☐

iv) 'कति' शब्द एकवचन में प्रयुक्त होता है। सही ☐ गलत ☐

v) 'दम्पती' शब्द बहुवचन में प्रयुक्त होता है। सही ☐ गलत ☐

iv) 'भ्याम्' प्रत्यय द्विवचन में प्रयुक्त होता है। सही ☐ गलत ☐

ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :–

i) टा, भ्याम्, भिस् प्रत्ययों का प्रयोग ..... विभक्ति में होता है।

ii) परस्मैपदी मध्यमपुरुष के एकवचन में ..... प्रत्यय होता है।

iii) परस्मैपदी उत्तमपुरुष के बहुवचन में ..... प्रत्यय होता है।

iv) 'द्वि' शब्द का प्रयोग केवल ..... वचन में होता है।

v) क्रिया के भाववाच्य में केवल ..... का प्रयोग होता है।

vi) आत्मनेपद में कुल ..... प्रत्यय हैं।

2.5 पुरुष – परिभाषा और विभाजन

जब तिङ् प्रत्यय से युक्त क्रियापदों को वक्ता, श्रोता अथवा इन दोनों से भिन्न अन्य व्यक्ति के अनुरूप प्रयुक्त किया जाता है, तब इन क्रियापदों के द्वारा वाच्य शब्दरूप के आश्रित रहने वाले धर्म को 'पुरुष' कहा जाता है। संस्कृत भाषा में इन क्रियापदों को तीन पुरुषों में विभक्त किया गया है :– (क) प्रथम पुरुष, (ख) मध्यम पुरुष एवं (ग) उत्तम पुरुष।

(क) प्रथम पुरुष :– वक्ता एवं श्रोता से भिन्न अन्य व्यक्ति का बोध कराने वाले शब्दरूप के आश्रित रहने वाले पुरुष को प्रथम पुरुष या अन्य पुरुष कहा जाता है। जैसे :– सः, रामः, मृगः, पत्रम् आदि। प्रथम पुरुष के क्रियापद के निर्माण में परस्मैपद प्रत्यय तिप्, तस्, झि तथा आत्मनेपद प्रत्यय त, आताम्, झ का प्रयोग किया जाता है।

जैसे : –

1. **एकवचन कर्ता के साथ :–**

परस्मैपद :– पठ् + तिप् = पठति।

आत्मनेपद :– याच् + त = याचते।

2. **द्विवचन कर्ता के साथ :–**

परस्मैपद :– पठ् + तस् = पठतः।

आत्मनेपद :– याच् + आताम् = याचेते।

3. **बहुवचन कर्ता के साथ :–**

परस्मैपद :– पठ् + झि = पठन्ति।

आत्मनेपद :– याच् + झ = याचन्ते।

ख) **मध्यम पुरुष :** श्रोता अर्थात् 'युष्मद्' शब्दरूप के आश्रित रहने वाले पुरुष को 'मध्यम पुरुष' कहा जाता है। मध्यम पुरुष के क्रियापद के निर्माण में परस्मैपद प्रत्यय सिप्, थस्, थ तथा आत्मनेपद प्रत्यय थास्, आथाम्, ध्वम् का प्रयोग किया जाता है। जैसे :–

1. **एकवचन कर्ता के साथ :–**

परस्मैपद :– पठ् + सिप् = पठसि।

आत्मनेपद :– याच् + थास् (से) = याचसे।

2. **द्विवचन कर्ता के साथ :–**

परस्मैपद : पठ् + थस् = पठथः ।

आत्मनेपद :– याच् + आथाम् = याचेथे।

3. **बहुवचन कर्ता के साथ :–**

परस्मैपद :– पठ् + थ = पठथ।

आत्मनेपद :– याच् + ध्वम् = याचध्वे।

ग) **उत्तम पुरुष :** वक्ता अर्थात् 'अस्मद्' शब्दरूप के आश्रित रहने वाले पुरुष को 'उत्तम पुरुष' कहा जाता है। उत्तम पुरुष के क्रियापद के निर्माण में परस्मैपद प्रत्यय मिप्, वस्, मस् तथा आत्मनेपद प्रत्यय इट्, वहि, महिङ् का प्रयोग किया जाता है। जैसे :–

1. **एकवचन कर्ता के साथ :–**

परस्मैपद :– पठ् + मिप् = पठामि।

आत्मनेपद :– याच् + इट् = याचे।

2.. **द्विवचन कर्ता के साथ :–**

परस्मैपद :– पठ् + वस् = पठावः।

आत्मनेपद :– याच् + वहि = याचावहे।

3. बहुवचन कर्ता के साथ :–

परस्मैपद :– पठ् + मस् = पठामः।

आत्मनेपद :– याच् + महिङ् = याचामहे।

अब आप पुरुष के भेद तथा वचन के अनुसार क्रियापद के प्रयोग के बारे में भली भाँति जान गए होंगे। पुरुष के सम्बन्ध में कुछ बातें विशेष ध्यान देने योग्य हैं :

- अस्मद् एवं युष्मद् को छोड़कर शेष शब्द प्रथम पुरुष के वाचक होते हैं।
- जहाँ पर क्रियापद के द्वारा प्रथम, मध्यम एवं उत्तम पुरुष के कर्ताओं का बोध कराना होता है, वहाँ पर क्रियापद के साथ केवल उत्तम पुरुष का प्रयोग होता है। जैसे – स च, त्वं च, अहं च गच्छामि, के लिए 'वयं गच्छामः' का प्रयोग करेंगे।
- जहाँ पर क्रियापद के द्वारा प्रथम एवं मध्यम पुरुष के कर्ताओं का बोध कराना होता है, वहाँ पर क्रियापद के साथ केवल मध्यम पुरुष का प्रयोग होता है। जैसे – स च, त्वं च गच्छसि, के लिए 'युवां गच्छथः' का प्रयोग करेंगे।

बोध प्रश्न 4

क) अधोलिखित वाक्यों में से सही/गलत का चयन करें :–

i) श्रोता को अस्मद् कहा जाता है। सही ☐ गलत ☐

ii) पुरुष तीन प्रकार के होते हैं। सही ☐ गलत ☐

iii) ध्वम् आत्मनेपद प्रत्यय है। सही ☐ गलत ☐

iv) 'आथाम्' परस्मैपद प्रत्यय है। सही ☐ गलत ☐

v) प्रथम पुरुष को अन्य पुरुष नहीं कहा जाता है। सही ☐ गलत ☐

ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :–

i) तिप् प्रत्यय ..... पद है।

ii) पठ् के साथ थस् प्रत्यय लगाने पर ..... क्रियापद बनेगा।

iii) वक्ता को ..... पुरुष कहा जाता है।

iv) प्रथम एवं मध्यम पुरुष के कर्ताओं का बोध कराने के लिए ..... पुरुष का प्रयोग किया जाता है।

2.6 काल – परिभाषा और विभाजन

काल अर्थात् समय के सामान्य रूप से तीन भेद किए गए हैं – वर्तमान, भूत एवं भविष्यत्। यदि घटना तुरन्त की है या हो रही है तो वर्तमानकाल, हो चुकी है तो भूतकाल एवं आगे होने वाली है तो भविष्यत् काल कहा जाएगा। संस्कृत भाषा में काल एवं वृत्ति का बोध कराने के लिए धातुरूपों के द्वारा लकारों का प्रयोग किया जाता है। लकार 10 प्रकार के

होते हैं : लट्, लिट्, लुट्, लृट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, आशीर्लिङ्, लुङ् एवं लृङ्।

इनका काल के अनुसार विभाजन इस प्रकार है :–

1. वर्तमान काल – लट् लकार।
2. भूत काल – यह तीन प्रकार से विभाजित है :
   - क) सामान्य भूतकाल – लुङ् लकार।
   - ख) अनद्यतन भूतकाल – लङ् लकार।
   - ग) परोक्ष भूतकाल – लिट् लकार।
3. भविष्यत् काल :– यह भी तीन प्रकार से विभाजित है :
   - क) सामान्य भविष्यत् काल – लृट् लकार।
   - ख) अनद्यतन भविष्यत् काल – लुट् लकार।
   - ग) हेतुहेतुमद् भविष्यत् काल – लुङ् लकार।

उपर्युक्त सात लकार क्रिया के काल का बोध कराते हैं। इनके अतिरिक्त शेष तीन–लोट्, विधिलिङ् एवं आशीर्लिङ् लकार क्रमशः भविष्यत्कालिक, आज्ञा अर्थ, चाहिए अर्थ एवं आशीर्वाद अर्थ का बोध कराते हैं।

इस प्रकार आपने काल के अनुसार लकारों के भेद के बारे में जानकारी प्राप्त की। अब आप उपर्युक्त लकारों का सामान्य परिचय जानना चाहेंगे। वह इस प्रकार है :–

1. **लट् लकार** :– लट् लकार से वर्तमान काल का बोध होता है। इसके अनुसार धातुरूप इस प्रकार चलेगा :–

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम	भवामि	भवावः	भवामः

2. **लुङ् लकार** :– लुङ् लकार से सामान्य भूतकाल का बोध होता है। इसके अनुसार धातुरूप इस प्रकार चलेगा :–

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
मध्यम	अभूः	अभूतम्	अभूत
उत्तम	अभूवम्	अभूव	अभूम

3. **लङ् लकार** :– लङ् लकार से अनद्यतन भूतकाल का बोध होता है। आज के 24 घंटों में घटित एवं परोक्ष को छोड़कर शेष भूतकाल को अनद्यतन भूतकाल कहते हैं। इसके अनुसार धातुरूप इस प्रकार चलेगा :–

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तम	अभवम्	अभवाव	अभवाम

4. **लिट् लकार :–** लिट् लकार से परोक्ष भूतकाल का बोध होता है। इसके अनुसार धातुरूप इस प्रकार चलेगा :–

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
मध्यम	बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
उत्तम	बभूव	बभूविव	बभूविम

5. **लृट् लकार :–** लृट् लकार से भविष्यत् काल का बोध होता है। इसके अनुसार धातुरूप इस प्रकार चलेगा :–

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

6. **लुट् लकार :–** लुट् लकार से अनद्यतन भविष्यत् काल का बोध होता है। इसके अनुसार धातुरूप इस प्रकार चलेगा :–

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	भविता	भवितारौ	भवितारः
मध्यम	भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थ
उत्तम	भवितास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः

7. **लुङ् लकार :–** लुङ् लकार से हेतुहेतुमद् भविष्यत् काल का बोध होता है। इसके अनुसार धातुरूप इस प्रकार चलेगा :–

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्
मध्यम	अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत
उत्तम	अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम

8. **लोट् लकार :–** लोट् लकार का प्रयोग 'आज्ञा' अर्थ में होता है। इसके अनुसार धातुरूप इस प्रकार चलेगा :–

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	भवतु	भवताम्	भवन्तु
मध्यम	भव	भवतम्	भवत
उत्तम	भवानि	भवाव	भवाम

9. **विधिलिङ् लकार :–** विधिलिङ् लकार का प्रयोग 'चाहिए' अर्थ में होता है। इसके अनुसार धातुरूप इस प्रकार चलेगा :–

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
मध्यम	भवेः	भवेतम्	भवेत
उत्तम	भवेयम्	भवेव	भवेम

10. **आशीर्लिङ् लकार :–** आशीर्लिङ् लकार का प्रयोग 'आशीर्वाद' अर्थ में होता है। इसके अनुसार धातुरूप इस प्रकार चलेगा :–

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः
मध्यम	भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त
उत्तम	भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म

यहाँ पर आपने सभी लकारों का सामान्य परिचय 'भू' धातुरूप के द्वारा प्राप्त किया। धातु-रूपों के निर्माण की प्रक्रिया इकाई–4 में विस्तार-पूर्वक बतायी जाएगी।

अभ्यास प्रश्न

1. **निम्न काल-सम्बन्धी वाक्यों का सावधानी से अनुवाद कीजिए :–**

क) मैं घर जाता हूँ।

ख) मैं आज सुबह विद्यालय गया।

ग) मैं एक वर्ष पहले भुवनेश्वर गया था।

घ) मेरे दादा/परदादा आगरा नगर में रहे।

ङ) मैं कुछ दिनों बाद कानपुर जाऊँगा।

च) यदि रमेश आया तो मैं बाजार (आपणम्) जाऊँगा।

छ) छात्रों, अब आप सब भोजन करें।

ज) ऐसा हो कि हम सब एकसाथ समुद्र-यात्रा पर जायें।

झ) प्रभु करें कि यह बालक शतायु होवे।

ञ) हम दोनों आज सिनेमा देखेंगे।

2.7 सारांश

इस प्रकार आपने देखा कि पद एवं शब्द में अन्तर होता है। सार्थक वर्णसमूह को शब्द कहा जाता है इसे प्रातिपदिक या प्रकृति भी कहते हैं तथा जब यह प्रातिपदिक सुप् या तिङ् प्रत्ययों से युक्त होता है तब पद की संज्ञा प्राप्त करता है। यह पद नाम, आख्यात, उपसर्ग एवं निपात तथा सुबन्त एवं तिङन्त भेद से दो प्रकार से विभाजित है। इसके बाद आपने पद की परिभाषा और भेद, लिङ्ग की परिभाषा और भेद, वचन की परिभाषा और भेद, पुरुष की परिभाषा और भेद तथा काल की परिभाषा और भेद–सहित लकारों का सामान्य परिचय प्राप्त किया।

2.8 शब्दावली

परिवर्तित : बदला हुआ।

गोबलीवर्दन्याय : गाय और बैल दोनों को 'गो' एक नाम से ही पुकारना या गो कहने से गाय और बैल दोनों की जानकारी गोबलीवर्दन्याय कहलाता है।

अन्तर्भावित : एक से ही दूसरे का बोध हो जाना अथवा एक में दूसरे का समा जाना।

लिङ्गद्योतक : लिङ्ग की पहचान कराने वाला।

एकत्वविशिष्ट : जहाँ एक पर विशेष रूप से बल दिया जाये।

सार्थक : अर्थ-सहित।

लोक-व्यवहार : बोल-चाल की भाषा।

बहुत्वविशिष्टकारक : अधिक संख्या का ज्ञान कराने वाले।

2.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. बृहद् अनुवाद चन्द्रिका-चक्रधर हंस नौटियाल, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।
2. संस्कृत शिक्षा 1-3 भाग–डॉ० कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
3. प्रारम्भिक रचनानुवादकौमुदी – डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।
4. रचनानुवादकौमुदी – डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।
5. प्रौढ रचनानुवादकौमुदी – डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।

बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

क) (1) गलत, (2) सही, (3) सही, (4) गलत, (5) सही।

ख) (1) शब्द, (2) प्रातिपदिक या प्रकृति, (3) क्रियारूप, (4) चार।

ग) रूढशब्द :– रत्न, नर, गृह, राम, पितर

यौगिकशब्द :– लौकिक, मौलिक, क्षीण

योगरूढशब्द :– सरसिज, वनज, गृही, मागध

यौगिकरूढ :– उद्भिद्, अश्वगन्धा

घ) सुप् प्रत्यय :– सुप्, टा, भ्याम्, भ्यस्, ङि, भिस्, ओस्, सु, जस्।

तिङ् प्रत्यय : तिप्, थस्, त, मिप्, महिङ्, झि, ध्वम्, वस्।

बोध प्रश्न 2

क) (i) सही, (ii) गलत, (iii) सही, (iv) गलत।

ख) (i) स्त्रीप्रत्यय, (ii) अलिङ्ग, (iii) लोकव्यवहार, (iv) नहीं।

ग) पुंल्लिङ्ग :– नर, आत्मन्, गुरु, राजन्, सखि, पुंस्।

स्त्रीलिङ्ग :– वधू, लता, मातृ, धेनु, सरित्।

नपुंसकलिङ्ग :– वारि, नेत्र, मधु, अहन्, पयस्।

बोध प्रश्न 3

क) (i) सही, (ii) गलत, (iii) सही, (iv) गलत, (v) गलत, (vi) सही।

ख) (i) तृतीया, (ii) सिप्, (iii) मस्, (iv) द्विवचन, (v) एकवचन, (vi) 9।

बोध प्रश्न 4

क) (i) गलत, (ii) सही, (iii) सही, (iv) गलत, (v) गलत।

ख) (i) परस्मै, (ii) पठथः, (iii) उत्तम, (iv) मध्यम।

अभ्यास प्रश्न

क) अहं गृहं गच्छामि।

ख) अहम् अद्य प्रातः विद्यालयम् अगमम्।

ग) अहम् एकवर्षपूर्वं भुवनेश्वरम् अगच्छम्।

घ) मम पितामहाः/प्रपितामहाश्च अर्गलपुरनगरे ऊषुः।

ङ) अहं कतिपयदिवसानन्तरं कर्णपुरं गन्तास्मि।

च) यदि रमेशः आगमिष्यत् तदा अहम् आपणम् अगमिष्यम्।

छ) छात्राः, अधुना भवन्तः सर्वे भोजनं कुर्वन्तु।

ज) एवं भवेत् यद् वयं सर्वे सहैव समुद्रयात्रां गच्छेम।

झ) प्रभुः करोतु यदयं बालः शतायुः भूयात्।

ञ) आवाम् अद्य चलचित्रं द्रक्ष्यावः।

इकाई 3 शब्दरूप

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 शब्दरूप : व्यवस्था एवं प्रयोग के आधार

3.3 शब्दरूपों के आधार पर वाक्य-रचना

3.4 कुछ कृत् एवं तद्धित प्रत्ययों का परिचय एवं प्रयोग

3.5 सारांश

3.6 शब्दावली

3.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :–

- संस्कृत भाषा में शब्दरूप की व्यवस्था एवं प्रयोग की आधारभूत जानकारी प्राप्त करने के साथ ही शब्दरूप के निर्माण की प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त कर लेंगे।
- शब्दरूप के निर्माण की प्रक्रिया का ज्ञान हो जाने पर संस्कृत-वाक्य-रचना में समर्थ हो सकेंगे।
- कुछ कृत् एवं तद्धित प्रत्ययों का परिचय प्राप्त कर लेंगे तथा उन प्रत्ययों के द्वारा पदनिर्माण की प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त कर लेंगे।
- उपर्युक्त सभी बिन्दुओं के महत्त्व को जान सकेंगे तथा संस्कृत भाषा में उनके प्रयोग की प्रक्रिया को सरलतापूर्वक सम्पादित कर सकेंगे।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप संस्कृत भाषा में शब्दरूपों की व्यवस्था और उनके प्रयोग के आधार को भली-भाँति समझ सकेंगे। कुछ कृत् एवं तद्धित प्रत्ययों से परिचित होते हुए उनसे सम्बन्धित पद-निर्माण की प्रक्रिया को समझकर उनका सही प्रयोग करने में समर्थ हो सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

पिछली इकाइयों में आपने वर्णोच्चारण की प्रक्रिया, संस्कृतभाषा की प्रकृति तथा पद, लिङ्ग, वचन, पुरुष और काल के बारे में सीखा। संस्कृत भाषा में तीन वचन तथा सम्बन्धबोधक चिह्नों के शब्दों के साथ जुड़े रहने से भाषा के लिये शब्दरूपों का बहुत महत्त्व है। इन बातों पर ध्यान देने से सही संस्कृत समझने एवं लिखने में सरलता रहती है; अन्यथा थोड़ा सा भी प्रमाद भाषा को अशुद्ध बना देता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर इस इकाई में शब्दरूपों से सम्बन्धित सभी पक्षों को समझाने का प्रयत्न किया जा रहा है।

3.2 शब्दरूप : व्यवस्था एवं प्रयोग के आधार

आपने पिछली इकाई में पढ़ा कि 'लोक-व्यवहार में जिस ध्वनि से अर्थ का बोध होता है। वह शब्द कहा जाता है। इसे प्रातिपदिक भी कहते हैं। यह शब्द जब सुप् आदि प्रत्ययों से युक्त होता है तो पद या शब्दरूप कहा जाता है। इन शब्दरूपों को सुबन्त भी कहा जाता है। प्राचीन वैयाकरणों द्वारा प्रयोग एवं सुविधा की दृष्टि से सुबन्तरूप शब्दरूपों को अजन्त एवं हलन्त भेद से दो वर्गों में विभक्त किया गया है। शब्दरूप बनाने के लिए सुप् आदि प्रत्ययों का प्रयोग वचनों एवं विभक्तियों के अनुरूप किया जाता है। इसके अनुसार सुबादि प्रत्यय इस प्रकार प्रयुक्त होंगे :–

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा (कर्ता)	सु	औ	जस्
द्वितीया (कर्म)	अम्	औट्	शस्
तृतीया (करण)	टा	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी (सम्प्रदान)	ङे	भ्याम्	भ्यस्
पंचमी (अपादान)	ङसि	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी (सम्बन्ध)	ङस्	ओस्	आम्
सप्तमी (अधिकरण)	ङि	ओस्	सुप्
सम्बोधन	(इसमें रूप प्रथमा विभक्ति के अनुसार ही चलेगा)		

यहाँ पर आपने वचन एवं विभक्ति के अनुसार सुबादि प्रत्ययों के प्रयोग-विभाजन को देखा। वचन एवं सुबन्त के बारे में आपने इकाई 2 में पढ़ा। हाँ! विभक्ति के बारे में आपको जानकारी नहीं होगी। आइए इस पर सामान्य जानकारी प्राप्त करें; तब शब्दरूप-निर्माण की प्रक्रिया पर आगे बढ़ें।

विभक्ति को कारक कहा जा सकता है। इस पर इकाई 5 में विस्तारपूर्वक चर्चा की जाएगी। यहाँ पर प्रसंग उपस्थित होने के कारण इसके बारे में आपको इसकी सामान्य जानकारी दी जा रही है। आपने विभक्ति एवं वचन के अनुसार सुबादि के विभाजन में देखा होगा कि वहाँ पर सम्बोधन-सहित आठ विभक्तियाँ दी गयी हैं। वस्तुतः इनमें से संस्कृत में छः कारक ही माने जाते हैं। सम्बन्ध एवं सम्बोधन कारक हिन्दी व्याकरण की देन हैं। सम्बोधन में चूँकि प्रथमा विभक्ति का ही प्रयोग होता है; अतः उसे स्वतन्त्र कारक/नहीं कहा जा सकता। रही बात सम्बन्ध की तो, उसे भी कारक इसलिए नहीं कहा जा सकता, क्योंकि उसका क्रिया के साथ सम्बन्ध नहीं होता। इस बारे में विस्तृत चर्चा इकाई 5 में ही की जाएगी। यहाँ सामान्यतया उपर्युक्त विभक्तियों का प्रयोग किस अवस्था में किया जाएगा, यह निम्नवत् है–

1) **प्रथमा विभक्ति** – क्रिया के सम्पादन में प्रधान सहायक को कर्ता कहा जाता है। उक्त 'कर्ता' का बोध प्रथमा विभक्ति के द्वारा होता है। प्रथमा विभक्ति केवल नाम की ओर संकेत करती है। आचार्य पाणिनि के अनुसार **'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाण–वचनमात्रे प्रथमा 2/3/46'** अर्थात् प्रथमा का प्रयोग केवल किसी शब्द के मूलरूप, लिङ्ग, परिमाण या तौल और वचन को व्यक्त करने के लिए ही होता है। जैसे – बालकः, लता, ज्ञानम्, द्रोणो व्रीहिः, एकः, द्वौ, बहवः आदि।

2) **द्वितीया विभक्ति –** जिस किसी पदार्थ अथवा व्यक्ति के ऊपर क्रिया का फल आश्रित रहता है, वह उस क्रिया का कर्म कहलाता है। 'कर्म' का बोध द्वितीया विभक्ति के द्वारा होता है। पाणिनीय सूत्र के अनुसार – **कर्तुरीप्सिततमं कर्म 1/4/49** अर्थात् कर्ता का अत्यधिक अभीष्ट फल कर्म कहलाता है। जैसे – रामः गृहं गच्छति। अर्थात् राम घर जाता है। इस वाक्य में कर्ता राम को अत्यधिक अभीष्ट है, घर को जाना । अतः गृहम् में **कर्मणि द्वितीया 2/3/2;** से द्वितीया विभक्ति का प्रयोग हुआ।

3) **तृतीया विभक्ति –** क्रिया की फलसिद्धि में जो सबसे अधिक सहायक होता है उसे 'करण' कहा जाता है। 'करण' का बोध तृतीया विभक्ति के द्वारा होता है अर्थात् **साधकतमं करणम् 1/4/42;** जैसे – सः नेत्रेण पश्यति अर्थात् वह नेत्र से देखता है। यहाँ दर्शन क्रिया में सर्वाधिक सहायक नेत्र है। अतः नेत्र में **कर्तृकरणयोस्तृतीया 2/3/18;** से तृतीया विभक्ति होगी। अनुक्त कर्ता में भी तृतीया विभक्ति आती है। जब कर्ता के अनुसार क्रियापद में प्रत्यय नहीं होता तब वह कर्ता अनुक्त होता है।

4) **चतुर्थी विभक्ति –** दान क्रिया के कर्म के द्वारा कर्ता जिसे विशेषरूप से कुछ देता है, तो वह 'सम्प्रदान' कारक कहलाता है और सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। अर्थात् – **कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् 1/4/32; चतुर्थी सम्प्रदाने 3/3/13;** जैसे – रामाय भोजनं ददाति अर्थात् राम के लिए भोजन देता है। इस वाक्य में व्यक्ति के द्वारा भोजन राम को दिया जा रहा है। अतः 'राम' में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होगा।

5) **पञ्चमी विभक्ति –** जहाँ से मानसिक अथवा प्रत्यक्ष रूप से वियोग या अलगाव पाया जाता है, वह 'अपादान' कारक होता है एवं इसका बोध पञ्चमी विभक्ति के द्वारा होता है। अलगाव होने में अवधिरूप सीमा अपादान कहलाती है। अर्थात् **ध्रुवमपायेऽपादानम् 1/4/24; अपादाने पञ्चमी 2/3/28;** जैसे – वृक्षात् पर्णम् पतति अर्थात् वृक्ष से पत्ता गिरता है। यहाँ पर पत्ते का वृक्ष से अलगाव हो रहा है, अतः वृक्ष में पञ्चमी विभक्ति होगी।

6) **षष्ठी विभक्ति –** संस्कृत में इस विभक्ति को कारकत्व प्राप्त नहीं है। षष्ठी विभक्ति एक वाक्य में प्रयुक्त एक संज्ञा पद से दूसरे संज्ञा पद का सम्बन्ध सूचित करती है। आचार्य पाणिनि के अनुसार – **'षष्ठी शेषे 2/3/50'** अर्थात् जब कारक और प्रातिपदिकार्थ से भिन्न 'स्वस्वामिभाव' आदि सम्बन्ध विवक्षित हो, तो उस अर्थ में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे – राज्ञः पुरुषः अर्थात् राजा का आदमी। इस वाक्य में 'राजा' पदार्थ का 'पुरुष' पदार्थ के साथ सम्बन्ध बताया गया है। अतः यहाँ पर षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होगा।

7) **सप्तमी विभक्ति –** कर्ता या कर्म के द्वारा उनमें रहने वाली क्रिया के आधार कारक को 'अधिकरण' कहा जाता है और 'अधिकरण' का बोध सप्तमी विभक्ति के द्वारा होता है। अर्थात् – **आधारोऽधिकरणम् 1/4/45; सप्तम्यधिकरणे च 2/3/36;** जैसे – रामः स्थाल्याम् ओदनं पचति, अर्थात् राम स्थाली में चावल पकाता है। इस वाक्य में कर्म की क्रिया का आधार स्थाली है, अतः स्थाली में सप्तमी विभक्ति होगी।

8) **सम्बोधन –** सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति का ही प्रयोग किया जाता है। जैसे :– हे! बालकाः, किं कुरुथ? अर्थात् हे बालकों! क्या कर रहे हो? इस वाक्य में बालकों को सम्बोधित किया जा रहा है, अतः सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति का ही प्रयोग किया गया है।

यहाँ तक आपने विभक्ति के अनुसार पद के प्रयोग के बारे में जानकारी प्राप्त की। आपने प्रारम्भ में सुबन्त के दो भेदों के बारे में पढ़ा। अब आगे क्रमशः अजन्त एवं हलन्त पद-निर्माण की सरलतम प्रक्रिया आपको बतायी जाएगी।

अजन्त शब्द – स्वरान्त अर्थात् जिन शब्दों का अन्तिम वर्ण स्वर है वे शब्द अजन्त कहलाते हैं। अजन्त शब्दों के बाद विभक्ति-चिह्न लगाने पर उनका जो स्वरूप बनता है, उसे हम एक मानक सिद्ध शब्दरूप के द्वारा आपको बताएंगे। उन सिद्धरूपों को देख एवं समझकर आप स्वयं विभक्ति-चिह्नों एवं उनके परिवर्तनों पर विचार करने में समर्थ हो जाएंगे। यहाँ पर क्रमशः अजन्त पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग एवं नपुंसकलिङ्ग के प्रयोग एवं उनके चिह्न को कोष्ठक में दिया जा रहा है। सर्वनाम शब्दों का रूप अन्त में दिया जाएगा।

क) **पुंल्लिङ्ग शब्दरूप –** पुंल्लिङ्ग शब्दों के अकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त, ऊकारान्त, ऋकारान्त आदि रूप निम्नवत् हैं :–

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पञ्चमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे राम!	हे रामौ!	हे रामाः!

इकारान्त :– 'इ' स्वरान्त शब्द इकारान्त कहलाते हैं। इनमें ह्रस्व एवं दीर्घ इकार के शब्दरूप अलग-अलग प्रकार से चलते हैं। ह्रस्व इकार में भी भिन्नता है। अतः उन सबके रूप द्रष्टव्य हैं :–

क) **हरि शब्द –**

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हरिः	हरी	हरयः
द्वितीया	हरिम्	हरी	हरीन्
तृतीया	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
चतुर्थी	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
पञ्चमी	हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
षष्ठी	हरेः	हर्योः	हरीणाम्
सप्तमी	हरौ	हर्योः	हरिषु
सम्बोधन	हे हरे!	हे हरी!	हे हरयः!

इसी प्रकार भूपति आदि शब्दों के रूप भी चलेंगे।

ख) **सखि शब्द –**

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	,,	,,
षष्ठी	,,	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	,,	सखिषु
सम्बोधन	हे सखे!	हे सखायौ!	हे सखायः!

ग) **पति शब्द –**

इकारान्त 'पति' शब्द के रूप प्रथमा एवं द्वितीया विभक्ति में हरि की भाँति चलेंगे तथा तृतीया से सप्तमी विभक्ति तक सखि के समान चलेंगे। सम्बोधन रूप हरि की ही भाँति चलेगा।

घ) **सुधी शब्द –** दीर्घ 'ई' स्वरान्त रूप इस प्रकार से चलेंगे।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सुधीः	सुधियौ	सुधियः
द्वितीया	सुधियम्	,,	,,
तृतीया	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
चतुर्थी	सुधिये	,,	सुधीभ्यः
पञ्चमी	सुधियः	,,	,,
षष्ठी	,,	सुधियोः	सुधियाम्
सप्तमी	सुधियि	,,	सुधीषु
सम्बोधन	हे सुधीः!	हे सुधियौ!	हे सुधियः!

उकारान्त – 'उ' स्वरान्त शब्द उकारान्त कहलाते हैं। इनमें ह्रस्व एवं दीर्घ उकार के शब्दरूप अलग-अलग प्रकार से चलते हैं।

क) **गुरु शब्द –** ह्रस्व उकारान्त के सभी शब्दरूप गुरु की भाँति ही चलेंगे।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गुरुः	गुरू	गुरवः
द्वितीया	गुरुम्	,,	गुरून्

तृतीया	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
चतुर्थी	गुरवे	,,	गुरुभ्यः
पञ्चमी	गुरोः	,,	,,
षष्ठी	,,	गुर्वोः	गुरूणाम्
सप्तमी	गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु
सम्बोधन	हे गुरो!	हे गुरू!	हे गुरवः!

ख) **स्वभू (ब्रह्मा) शब्द –** दीर्घ ऊकारान्त के सभी शब्दरूप स्वभू की भाँति ही चलेंगे।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्वभूः	स्वभुवौ	स्वभुवः
द्वितीया	स्वभुवम्	,,	,,
तृतीया	स्वभुवा	स्वभूभ्याम्	स्वभूभिः
चतुर्थी	स्वभुवे	,,	स्वभूभ्यः
पञ्चमी	स्वभुवः	,,	,,
षष्ठी	,,	स्वभुवोः	स्वभुवाम्
सप्तमी	स्वभुवि	,,	स्वभूषु
सम्बोधन	हे स्वभूः!	हे स्वभुवौ!	हे स्वभुवः!

ऋकारान्त – 'ऋ' स्वरान्त शब्द ऋकारान्त कहे जाते हैं। इनके रूप 'पितृ' शब्द के अनुसार ही चलेंगे।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	,,	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	,,	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः	,,	पितृभ्यः
षष्ठी	,,	पित्रोः	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरि	,,	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः!	हे पितरौ!	हे पितरः!

ख) **स्त्रीलिङ्ग शब्दरूप –** स्त्रीलिङ्ग वाची आकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त, ऊकारान्त आदि शब्दों के रूप निम्नवत् चलेंगे।

आकारान्त 'रमा' शब्द – सभी आकारान्त शब्दरूप इसी प्रकार चलेंगे।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रमा	रमे	रमाः
द्वितीया	रमाम्	''	''
तृतीया	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
चतुर्थी	रमायै	''	रमाभ्यः
पञ्चमी	रमायाः	''	''
षष्ठी	''	रमयोः	रमाणाम्
सप्तमी	रमायाम्	''	रमासु
सम्बोधन	हे रमे!	हे रमे!	हे रमाः!

इकारान्त 'मति' शब्द – प्रायः सभी इकारान्त शब्दों के रूप इसी प्रकार चलेंगे।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	''	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै, मतये	''	मतिभ्यः
पञ्चमी	मत्याः, मतेः	''	''
षष्ठी	"	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्, मतौ	''	मतिषु
सम्बोधन	हे मते!	हे मती!	हे मतयः!

ईकारान्त 'नदी' शब्द – प्रायः सभी ईकारान्त शब्दरूप नदी की भाँति ही चलेंगे।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	''	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	''	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	''	''
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	''	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि!	हे नद्यौ!	हे नद्यः!

उकारान्त 'धेनु' शब्द– सभी उकारान्त शब्दों के रूप धेनुवत् ही चलेंगे।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	,,	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै, धेनवे	,,	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेन्वाः, धेनोः	,,	,,
षष्ठी	"	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्, धेनौ	,,	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो!	हे धेनू!	हे धेनवः!

ऊकारान्त 'वधू' शब्द – सभी ऊकारान्त शब्दों के रूप इसी प्रकार चलेंगे।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	,,	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	,,	वधूभ्यः
पञ्चमी	वध्वाः	,,	,,
षष्ठी	,,	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	,,	वधूषु
सम्बोधन	हे वधु!	हे वध्वौ!	हे वध्वः!

ऋकारान्त 'मातृ' शब्द – सभी ऋकारान्त रूप इसी प्रकार चलेंगे।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	,,	मातॄः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	,,	मातृभ्यः
पञ्चमी	मातुः	,,	,,
षष्ठी	,,	मात्रोः	मातॄणाम्
सप्तमी	मातरि	,,	मातृषु
सम्बोधन	हे मातः!	हे मातरौ!	हे मातरः!

औकारान्त 'नौ' शब्द –

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नौः	नावौ	नावः
द्वितीया	नावम्	,,	,,
तृतीया	नावा	नौभ्याम्	नौभिः
चतुर्थी	नावे	,,	नौभ्यः
पञ्चमी	नावः	,,	,,
षष्ठी	,,	नावोः	नावाम्
सप्तमी	नावि	,,	नौषु
सम्बोधन	हे नौः!	हे नावौ!	हे नावः!

ग) **नपुंसकलिङ्ग शब्दरूप** – नपुंसकलिङ्गवाची अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त, ऋकारान्त आदि शब्दों के रूप निम्नवत् चलेंगे :–

अकारान्त 'गृह' शब्द –

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गृहम्	गृहे	गृहाणि
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	गृहेण	गृहाभ्याम्	गृहैः
चतुर्थी	गृहाय	,,	गृहेभ्यः
पञ्चमी	गृहात्	,,	,,
षष्ठी	गृहस्य	गृहयोः	गृहाणाम्
सप्तमी	गृहे	,,	गृहेषु
सम्बोधन	हे गृह!	हे गृहे!	हे गृहाणि!

इकारान्त 'वारि' शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	,,	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	,,	,,

षष्ठी	,,	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	,,	वारिषु
सम्बोधन	हे वारि, वारे!	हे वारिणी!	हे वारीणि!

उकारान्त 'मधु' शब्द –

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	,,	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	,,	मधुभ्यः
षष्ठी	,,	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	,,	मधुषु
सम्बोधन	हे मधु, मधो!	हे मधुनी!	हे मधूनि!

ऋकारान्त 'कर्तृ' (नपुंसक) शब्द –

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कर्तृ	कर्तृणी	कर्तृणि
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	कर्तृणा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः
चतुर्थी	कर्तृणे	,,	कर्तृभ्यः
पञ्चमी	कर्तृणः	,,	,,
षष्ठी	,,	कर्तृणोः	कर्तृणाम्
सप्तमी	कर्तृणि	,,	कर्तृषु
सम्बोधन	हे कर्तृ,कर्तः!	हे कर्तृणी!	हे कर्तृणि!

यहाँ तक आपने अजन्त शब्दरूपों को देखा। इसी के अनुसार आप उससे मिलते-जुलते शब्दों का रूप बनाने में समर्थ हो सकेंगे। अब आगे आपको हलन्त शब्दरूपों को उदाहरण के द्वारा समझाया जाएगा।

हलन्त शब्द – व्यञ्जन वर्णों को हल् कहा जाता है। जिन शब्दों के अन्त्य वर्ण व्यञ्जन होते हैं, वे शब्द हलन्त शब्द कहे जाते हैं। हलन्त शब्दों के रूप साधारणतः विभक्तियाँ जोड़ने पर बन जाते हैं और सन्धि-नियमों का पालन भी करना होता है। हम आपको हलन्त शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों के अनुसार आगे दे रहे हैं। जिन्हें पढ़ एवं समझ कर आप तदनुसार शब्दरूप का निर्माण कर सकेंगे।

(क) पुंल्लिङ्ग शब्दरूप –

'भगवत्' शब्दरूप –

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भगवान्	भगवन्तौ	भगवन्तः
द्वितीया	भगवन्तम्	''	भगवतः
तृतीया	भगवता	भगवद्भ्याम्	भगवद्भिः
चतुर्थी	भगवते	''	भगवद्भ्यः
पञ्चमी	भगवतः	''	''
षष्ठी	''	भगवतोः	भगवताम्
सप्तमी	भगवति	''	भगवत्सु
सम्बोधन	हे भगवन्!	हे भगवन्तौ!	हे भगवन्तः!

'आत्मन्' शब्दरूप –

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्	"	आत्मनः
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
चतुर्थी	आत्मने	''	आत्मभ्यः
पञ्चमी	आत्मनः	''	''
षष्ठी	''	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	''	आत्मसु
सम्बोधन	हे आत्मन्!	हे आत्मानौ!	हे आत्मानः!

'राजन्' शब्दरूप –

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	''	राज्ञः
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	''	राजभ्यः
पञ्चमी	राज्ञः	''	''
षष्ठी	''	राज्ञोः	राज्ञाम्

सप्तमी	राज्ञि, राजनि	,,	राजसु
सम्बोधन	हे राजन्!	हे राजानौ!	हे राजानः!

'युवन्' (युवक) शब्दरूप –

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	युवा	युवानौ	युवानः
द्वितीया	युवानम्	,,	यूनः
तृतीया	यूना	युवभ्याम्	युवभिः
चतुर्थी	यूने	,,	युवभ्यः
पञ्चमी	यूनः	,,	,,
षष्ठी	,,	यूनोः	यूनाम्
सप्तमी	यूनि	,,	युवसु
सम्बोधन	हे युवन्!	हे युवानौ!	हे युवानः!

'विद्वान्' शब्दरूप –

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	,,	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	,,	विद्वद्भ्यः
पञ्चमी	विदुषः	,,	,,
षष्ठी	,,	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	,,	विद्वत्सु
सम्बोधन	हे विद्वन्!	हे विद्वांसौ!	हे विद्वांसः!

ख) स्त्रीलिङ्ग शब्दरूप –

'सरित्' शब्दरूप –

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सरित्	सरितौ	सरितः
द्वितीया	सरितम्	,,	,,
तृतीया	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
चतुर्थी	सरिते	,,	सरिद्भ्यः

पञ्चमी	सरितः	,,	,,
षष्ठी	,,	सरितोः	सरिताम्
सप्तमी	सरिति	,,	सरित्सु
सम्बोधन	हे सरित्!	हे सरितौ!	हे सरितः!

'गिर्' (वाणी) शब्दरूप –

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गीः	गिरौ	गिरः
द्वितीया	गिरम्	,,	,,
तृतीया	गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भिः
चतुर्थी	गिरे	,,	गीर्भ्यः
पञ्चमी	गिरः	,,	,,
षष्ठी	,,	गिरोः	गिराम्
सप्तमी	गिरि	,,	गीर्षु
सम्बोधन	हे गीः!	हे गिरौ!	हे गिरः!

'दिश्' (दिशा) शब्दरूप –

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दिक्	दिशौ	दिशः
द्वितीया	दिशम्	,,	,,
तृतीया	दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः
चतुर्थी	दिशे	,,	दिग्भ्यः
पञ्चमी	दिशः	,,	,,
षष्ठी	,,	दिशोः	दिशाम्
सप्तमी	दिशि	,,	दिक्षु
सम्बोधन	हे दिक्!	हे दिशौ!	हे दिशः!

ग) नपुंसकलिङ्ग शब्दरूप –

'नामन्' शब्दरूप –

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि
द्वितीया	,,	,,	,,

तृतीया	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः
चतुर्थी	नाम्ने	,,	नामभ्यः
पञ्चमी	नाम्नः	,,	,,
षष्ठी	,,	नाम्नोः	नाम्नाम्
सप्तमी	नाम्नि, नामनि	,,	नामसु
सम्बोधन	हे नाम, नामन्!	हे नाम्नी, नामनी!	हे नामानि!

'ब्रह्मन्' शब्दरूप–

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ब्रह्म	ब्रह्मणी	ब्रह्माणि
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	ब्रह्मणा	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभिः
चतुर्थी	ब्रह्मणे	,,	ब्रह्मभ्यः
पञ्चमी	ब्रह्मणः	,,	,,
षष्ठी	,,	ब्रह्मणोः	ब्रह्मणाम्
सप्तमी	ब्रह्मणि	,,	ब्रह्मसु
सम्बोधन	हे ब्रह्म, ब्रह्मन्!	हे ब्रह्मणि!	हे ब्रह्माणी!

'मनस्' शब्दरूप–

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मनः	मनसी	मनांसि
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	मनसा	मनोभ्याम्	मनोभिः
चतुर्थी	मनसे	,,	मनोभ्यः
पञ्चमी	मनसः	,,	,,
षष्ठी	,,	मनसोः	मनसाम्
सप्तमी	मनसि	,,	मनःसु
सम्बोधन	हे मनः!	हे मनसी!	हे मनांसि!

इस प्रकार आपने यहाँ तक हलन्त शब्दरूपों को देखा। अब आगे आप हलन्त सर्वनाम शब्दों के रूपों को तीनों लिङ्गों में देखेंगे एवं जानकारी प्राप्त करेंगे।

सर्वनाम – संस्कृत भाषा में निम्न शब्द सर्वनाम के रूप में प्रायः प्रयुक्त किए जाते हैं – अस्मद्, युष्मद्, भवत्, तद्, एतद्, इदम्, यद्, किम्, सर्व, विश्व, अन्य, एकः, द्विः, त्रिः, चत्वारः आदि। उपर्युक्त सर्वनामों के रूप तीनों लिङ्गों में द्रष्टव्य हैं –

'अस्मद्' शब्दरूप– अस्मद् शब्द का रूप तीनों लिङ्गों में एकसमान ही चलता है। इसके द्वितीया, चतुर्थी एवं षष्ठी विभक्तियों में दो-दो रूप बनते हैं। इनका प्रयोग विशेष अवस्था में अथवा पद्यों में होता है। अतएव इसका ज्ञान आवश्यक है।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पञ्चमी	मत्	,,	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

'युष्मद्' शब्दरूप – युष्मद् शब्द के रूप भी अस्मद् की ही भाँति तीनों लिङ्गों में एक समान चलते हैं। इसमें भी द्वितीया, चतुर्थी एवं षष्ठी विभक्तियों में दो-दो रूप बनते हैं।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पञ्चमी	त्वत्	"	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	"	युष्मासु

तद् (वह) शब्दरूप –

पुंल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	,,	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	,,	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	,,	,,
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	,,	तेषु

स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	,,	,,
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	,,	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	,,	,,
षष्ठी	,,	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	,,	तासु

नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	,,	,,	,,

शेष तृतीया से सप्तमी विभक्ति तक के रूप पुंल्लिङ्ग के समान चलेंगे। यद् का रूप भी इसी प्रकार चलेगा।

'एतद्' (यह) शब्दरूप

	पुंल्लिङ्ग				स्त्रीलिङ्ग		
प्र०	एषः	एतौ	एते	प्र०	एषा	एते	एताः
द्वि०	एतम्	"	एतान्	द्वि०	एताम्	"	"
तृ०	एतेन	एताभ्याम्	एतैः	तृ०	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
च०	एतस्मै	"	एतेभ्यः	च०	एतस्यै	"	एताभ्यः
पं०	एतस्मात्	"	"	पं०	एतस्याः	"	"
ष०	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्	ष०	"	एतयोः	एतासाम्
स०	एतस्मिन्	"	एतेषु	स०	एतस्याम्	"	एतासु

नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एतत्	एते	एतानि
द्वितीया	,,	,,	,,

शेष तृतीया से सप्तमी तक के रूप पुंल्लिङ्ग के समान चलेंगे। किम्, अन्यत् आदि के रूप भी इसी प्रकार चलेंगे।

'इदम्' (यह) शब्दरूप

	पुंल्लिङ्ग				स्त्रीलिङ्ग		
प्र०	अयम्	इमौ	इमे	प्र०	इयम्	इमे	इमाः
द्वि०	इमम्	"	इमान्	द्वि०	इमाम्	"	"
तृ०	अनेन	आभ्याम्	एभिः	तृ०	अनया	आभ्याम्	आभिः
च०	अस्मै	"	एभ्यः	च०	अस्यै	"	आभ्यः
पं०	अस्मात्	"	"	पं०	अस्याः	"	"
ष०	अस्य	अनयोः	एषाम्	ष०	"	अनयोः	आसाम्
स०	अस्मिन्	"	एषु	स०	अस्याम्	"	आसु

नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	,,	,,	,,

शेष रूप पुंल्लिङ्ग के समान चलेंगे।

'सर्व' शब्दरूप –

	पुंल्लिङ्ग				स्त्रीलिङ्ग		
प्र०	सर्वः	सर्वौ	सर्वे	प्र०	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वि०	सर्वम्	"	सर्वान्	द्वि०	सर्वाम्	"	"
तृ०	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः	तृ०	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
च०	सर्वस्मै	"	सर्वेभ्यः	च०	सर्वस्यै	"	सर्वाभ्यः
पं०	सर्वस्मात्	"	"	पं०	सर्वस्याः	"	"
ष०	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्	ष०	"	सर्वयोः	सर्वासाम्
स०	सर्वस्मिन्	"	सर्वेषु	स०	सर्वस्याम्	,,	सर्वासु

नपुंसकलिङ्ग

प्र०	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वि०	,,	,,	,,

शेष रूप पुंल्लिङ्ग के समान चलेंगे। सर्व के रूप की ही भाँति विश्व, पूर्व आदि के शब्दरूप बनेंगे।

'एक' शब्दरूप – इसके रूप केवल एकवचन में ही चलेंगे।

विभक्ति	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	एकः	एका	एकम्
द्वितीया	एकम्	एकाम्	"
तृतीया	एकेन	एकया	शेष पुंल्लिङ्ग
चतुर्थी	एकस्मै	एकस्यै	की तरह।
पञ्चमी	एकस्मात्	एकस्याः	
षष्ठी	एकस्य	"	
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्याम्	

'द्वि' शब्दरूप – इसके रूप केवल द्विवचन में ही चलेंगे।

विभक्ति	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	द्वाभ्याम्	शेष रूप	शेष रूप पुंल्लिङ्ग के
चतुर्थी	"	पुंल्लिङ्ग के	समान
पञ्चमी	,,	समान चलेंगे।	चलेंगे।
षष्ठी	द्वयोः		
सप्तमी	,,		

'त्रि' (तीन) शब्दरूप– इसके रूप केवल बहुवचन में ही चलेंगे।

विभक्ति	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
द्वितीया	त्रीन्	"	"
तृतीया	त्रिभिः	त्रिसृभिः	शेष रूप
चतुर्थी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	पुंल्लिङ्ग की तरह
पञ्चमी	,,	,,	चलेंगे।
षष्ठी	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	
सप्तमी	त्रिषु	तिसृषु	

'चतुर्' (चार) शब्दरूप – इसके रूप भी बहुवचन में ही चलेंगे।

विभक्ति	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि

द्वितीया	चतुरः	,,	,,
तृतीया	चतुर्भिः	चतसृभिः	शेष रूप
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	पुंल्लिङ्ग के समान
पञ्चमी	,,	,,	चलेंगे
षष्ठी	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	
सप्तमी	चतुर्षु	चतसृषु	

इस प्रकार यहाँ तक आपने विभक्ति के अनुसार शब्दरूप की प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त की। इस प्रक्रिया को भली-भाँति समझने के बाद आप शब्दरूप-निर्माण की प्रक्रिया में सक्षम हो जायेंगे। यह प्रक्रिया सुव्यवस्थित हो; इसके लिए आगे कुछ अभ्यास दिए जा रहे हैं।

बोध प्रश्न 1

i) निम्न वाक्यों में से सही/गलत पर चिह्न लगायें –

क) कारक सात होते हैं। (सही/गलत)

ख) सुधी शब्द स्त्रीलिङ्गवाची है। (सही/गलत)

ग) 'ङि' प्रत्यय सप्तमी विभक्ति में प्रयुक्त होता है। (सही/गलत)

घ) 'कर्म' का बोध तृतीया विभक्ति से होता है। (सही/गलत)

ii) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

क) षष्ठी विभक्ति को.....प्राप्त नहीं है।

ख) सम्बोधन में.....विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

ग) कारकों की सङ्ख्या.. .....है।

घ) 'रमा' शब्द का सप्तमी विभक्ति एकवचन में.....रूप होता है ।

अभ्यास प्रश्न 1

i) भूपति शब्द का रूप बनाएं।

ii) वाक्य की पूर्ति करें –

क) रामेण.....विभक्ति का रूप है।

ख) मयि.....विभक्ति का रूप है।

ग) क्रिया-सम्पादन के आधार को.. .....कहते हैं।

घ) सम्बन्ध का बोध.....विभक्ति से होता है।

ङ) जन शब्द.....है।

3.3 शब्दरूपों के आधार पर वाक्य-रचना

संस्कृत एक संश्लिष्ट भाषा है। संश्लिष्ट शब्द से अभिप्राय है कि जिस प्रकार हिन्दी अथवा अंग्रेजी में को, ने, से, पर इत्यादि पदों के लिये अलग शब्द अथवा इनका अलग प्रयोग (To Ram = राम को, By Ram = राम के द्वारा आदि) लिखा जाता है; संस्कृत में इसके लिये विभक्त्यन्त पद –रामम्, रामेण आदि प्रयोग किये जाते हैं। इसी तरह तीन वचन होने के कारण अनुवाद आदि करते समय दो व्यक्तियों अथवा वस्तुओं के लिये 'द्विवचन' के प्रयोग का ध्यान रखना चाहिए।

इन्हीं बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए नीचे कुछ वाक्य दिये जा रहे हैं। इनको ध्यान से पढ़ने पर आप शब्दरूपों के प्रयोग में सावधान रह सकेंगे।

1. वह जाता है – सः गच्छति।
2. वे दोनों पढ़ते हैं – तौ पठतः।
3. वे सब खेलते हैं – ते क्रीडन्ति।
4. तुम घर (को) जाते हो – त्वं गृहं गच्छसि।
5. तुम दोनों विद्यालय से आते हो – युवाम् विद्यालयात् आगच्छथः।
6. तुम सब अखबार पढ़ते हो – यूयं समाचारपत्राणि पठथ।
7. मैं गुरु को प्रणाम करता हूँ – अहं गुरुं प्रणमामि।
8. हम दोनों घर से दूर जाते हैं – आवाम् गृहात् दूरं गच्छावः।
9. हम सब मिलकर खेलते हैं – वयम् सर्वे मिलित्वा क्रीडामः।

अभ्यास प्रश्न 2

i) निम्न वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

क) राम घर से आता है।

ख) वह बालिका बाजार से खिलौना खरीदती है।

ग) तुम दोनों किस विद्यालय में पढ़ते हो?

घ) तुम सब कब सिनेमा देखोगे?

ङ) मैं अभी विदेश जाना चाहता हूँ।

च) हम सब थोड़ी देर में बगीचे में जायेंगे।

ii) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

क) सा गृहात् विद्यालयं.....।

ख) अहं कदाचित् भ्रमणाय बहिः.....।

ग) सः अतीव कुशलः अध्यापकः .....।

घ) मम पिता एकस्मिन् कार्यालये.. ..... अस्ति।

ङ) मम मातापि विद्यालये.....।

च) अहम् अस्मिन् नगरे एकादशवर्षेभ्यः.....।

3.4 कुछ कृत् एवं तद्धित प्रत्ययों का परिचय एवं प्रयोग

इसमें कुछ कृत् एवं तद्धित प्रत्ययों के प्रयोग से सम्बन्धित विषय की जानकारी विस्तृतरूप से दी जा रही है, जिससे आप भली-भाँति परिचित हो सकेंगे।

क) **'घञ्'** :– 'घञ्' प्रत्यय का प्रयोग भाव अर्थ में होता है। इसका 'अ' शेष रहता है। घञ्-प्रत्ययान्त शब्द उपसर्गों के साथ बहुप्रचलित हैं। जैसे –

अभि + लष् + घञ् = अभिलाषः

चुर् + घञ् = चोरः

भज् + " = भागः

ख) **ण्वुल्** :– 'ण्वुल्' प्रत्यय का प्रयोग कर्ता या 'करने वाला' के अर्थ में होता है। ण्वुल् के स्थान पर 'अक' हो जाता है। यह कर्ता के अनुरूप तीनों लिङ्गों में प्रयुक्त होता है। जैसे

कृ + ण्वुल् (अक) = कारकः

धृ + " = धारकः

गण् + " = गणकः

ग) **ल्युट् :–** इस प्रत्यय से भाववाचक शब्द बनाये जाते हैं। 'ल्युट्' को 'अन' हो जाता है। धातु को गुण होता है। ल्युट् प्रत्ययान्त शब्द सामान्यतया नपुंसकलिङ्गवाची होते हैं। जैसे –

कृ + ल्युट् = करणम्

कृष् + " = कर्षणम्

चि + " = चयनम्

दुह् + " = दोहनम्

घ) **तुमुन् –** तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग 'को' या 'के लिए' के अर्थ में होता है। इसका 'तुम्' शेष रहता है। तुमुन् प्रत्ययान्त अव्यय होता है; अतः इसके रूप नहीं चलते हैं। जैसे–

कथ् + तुमुन् = कथयितुम्

ग्रह् + " = ग्रहीतुम्

कृ + " = कर्तुम्

ङ) **क्त्वा, ल्यप् –** इनका प्रयोग 'कर' या 'करके' के अर्थ में होता है। क्त्वा का 'त्वा' एवं ल्यप् का 'य' शेष रहता है। यदि धातु से पूर्व उपसर्ग है तो 'ल्यप्' प्रत्यय होगा अन्यथा 'क्त्वा' प्रत्यय का प्रयोग होगा। ये अव्यय होते हैं, अतः इनके रूप नहीं चलते हैं। जैसे–

अर्च + त्वा/ल्यप् = अर्चित्वा/समर्च्य

कृष् + " / " = कृष्ट्वा/आकृष्य

ग्रह् + " / " = गृहीत्वा / संगृह्य

गम् + " / " = गत्वा / आगम्य, आगत्य

इस प्रकार आपने यहाँ तक कृदन्त प्रत्ययों के योग से बनने वाले शब्दों की निर्माण प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त की। अब आगे आपको तद्धित-प्रक्रिया के बारे में बताया जाएगा।

तद्धित – जिन प्रत्ययों को संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण आदि से जोड़कर कुछ और अर्थ भी निकाला जाता है, उन प्रत्ययों को 'तद्धित' प्रत्यय कहते हैं। जैसे – संज्ञा शब्द अदिति में 'ण्य' प्रत्यय जुड़कर 'आदित्य' शब्द बनता है; जिसका अर्थ है अदिति की सन्तान। इस प्रकार तद्धित शब्द का अर्थ है – ऐसे प्रत्यय जो विभिन्न अर्थों में काम आ सके। इसके प्रयोग इस प्रकार हैं–

क) **अपत्यार्थक** – जिन प्रत्ययों को संज्ञाओं में जोड़ने पर अपत्य अर्थात् सन्तानपरक अर्थ का बोध होता है, उन्हें अपत्यार्थक प्रत्यय कहा जाता है। जैसे –

अश्वपति	+	अण्	=	आश्वपतम्
कन्या	+	"	=	कानीन
कुरु	+	ण्य	=	कौरव्य
पञ्चाल	+	अञ्	=	पाञ्चाल
स्त्री	+	नञ्	=	स्त्रैण
गर्ग	+	यञ्	=	गार्ग्य
विनता	+	ढक्	=	वैनतेय
राजन्	+	यत्	=	राजन्य
क्षत्र	+	इय (छ)	=	क्षत्रिय
रेवती	+	इक	=	रैवतिक

ख) **रक्ताद्यर्थक –** जो प्रत्यय रक्त अर्थात् 'रंगा हुआ' आदि अर्थों का बोध कराते हैं, वे 'रक्ताद्यर्थक प्रत्यय' कहलाते हैं।

1. कषायेण रक्तम्, अर्थ में वर्णवाचक पद कषाय से अण् प्रत्यय होकर 'काषायम्' बना।
2. इन्द्रो अस्य देवता, अर्थ में इन्द्र + अण् = ऐन्द्रम्।
3. काकानाम् समूहः, अर्थ में काक + अण् = काकम्।
4. तदधीते तद्वेद, अर्थ में व्याकरण + अण् = वैयाकरणः।

ग) **चातुरर्थिक –** इसमें 'उसने बसाया', 'इसमें है', 'उनका निवास' एवं 'उससे जो दूर नहीं है' – इन चार अर्थों में 'अण्' आदि प्रत्ययों का विधान किया गया है। इसीलिए इसे चातुरर्थिक कहते हैं। ये चारों अर्थ देश के लिए ही प्रयुक्त होते हैं। जैसे –

1. उदुम्बराः सन्ति अस्मिन् देशे, अर्थ में उदुम्बर + अण् = औदुम्बरः।
2. कुशाम्बेन निर्वृत्ता नगरी, अर्थ में कुशाम्ब + अण् = कौशाम्बी।
3. शिबीनां निवासो देशः, अर्थ में शिबि + अण् = शैबः।
4. विदिशायाः अदूरभवं नगरम्, अर्थ में विदिशा + अण् = वैदिशम्।

घ) **शैषिक** – जिन अर्थों का उल्लेख अपत्यार्थक, रक्ताद्यर्थक एवं चातुरर्थिक में नहीं हुआ है, ऐसे अर्थों को 'शेष' कहा जाता है तथा उन अर्थों में होने वाले प्रत्ययों को 'शैषिक प्रत्यय' कहा जाता है। इसमें मुख्यतया जातः, प्रायभवः, सम्भूतः, भवः, आगतः, प्रभवति, अभिनिष्क्रमण, प्रोक्तम्, तस्येदम्, सोऽस्य निवासः, जाता है आदि अर्थों में होने वाले शैषिक प्रत्ययों का वर्णन है। इन सभी अर्थों में सामान्यतः 'अ' प्रत्यय प्रयुक्त होता है।

इस प्रकार आपने इस प्रकरण में कुछ कृदन्त एवं तद्धित प्रत्ययों का परिचय एवं प्रयोग की जानकारी प्राप्त की।

बोध-प्रश्न 2

i) निम्न प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए –

क) 'ण्वुल्' प्रत्यय है (तद्धित/कृत्)।

ख) 'घञ्' प्रत्यय का प्रयोग होता है (भाव अर्थ में / कर्म अर्थ में)।

ग) 'ल्युट्' प्रत्यय से शब्द बनाये जाते हैं (भाववाचक/जातिवाचक)।

घ) 'क्त्वा' प्रत्यय का प्रयोग होता है (कर, करके / जाना)।

ङ) 'तुमुन्' प्रत्यय का प्रयोग होता है (को, के लिए / कर, करके)।

ii) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

क) 'कृ' धातु में 'ण्वुल्' प्रत्यय का प्रयोग होने पर.....शब्द बनता है।

ख) 'चि' + ल्युट् = ... शब्द बनता है।

ग) सन्तानपरक अर्थ में ..... प्रत्यय का प्रयोग होता है।

घ) गर्ग + यञ् = ... शब्द बनता है।

ङ) शिबि + अण् = ... शब्द बनता है।

3.5 सारांश

इस इकाई में आपने शब्दरूप-व्यवस्था की जानकारी प्राप्त की। इसके पश्चात् आपने शब्दरूप के आधार पर वाक्य-रचना की पद्धति का ज्ञान प्राप्त करते हुए कुछ कृत् एवं तद्धित प्रत्ययों का परिचय एवं प्रयोग की जानकारी प्राप्त की। इस प्रकार यदि आप ध्यानपूर्वक इसे पढ़ेंगे तो निश्चय ही संस्कृत भाषा की आपको प्रारम्भिक जानकारी प्राप्त हो जायेगी।

3.6 शब्दावली

पद	–	सुप् एवं तिङ् से युक्त प्रकृति।
सुबन्त	–	जिसके अन्त में 'सुप्' (विभक्ति-प्रत्यय) का प्रयोग हो।
अजन्त	–	जिसके अन्त में अच् (स्वर) वर्ण हो।
हलन्त	–	जिसके अन्त में हल् (व्यञ्जन) वर्ण हो।
सुबादि	–	'सुप्' आदि प्रत्यय।
अपाय	–	अलगाव या वियोग।
प्रमाद	–	भूलना, स्मरण न रहना।

3.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

लघुसिद्धान्तकौमुदी	वरदराज, संपा–श्री महेश सिंह कुशवाहा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
बृहद् अनुवाद-चन्द्रिका	चक्रधर नौटियाल 'हंस' शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
रचनानुवादकौमुदी	डॉ० कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) (क) गलत (ख) गलत (ग) सही (घ) गलत

ii) (क) कारकत्व (ख) प्रथमा (ग) 6 (घ) रमायाम्

अभ्यास प्रश्न 1

i) इसका उत्तर आप स्वयं लिखिए।

ii) (क) तृतीया एकवचन (ख) सप्तमी एकवचन

(ग) अधिकरण (घ) षष्ठी (ङ) अकारान्त

अभ्यास प्रश्न 2

i) क) रामः गृहात् आगच्छति।

ख) सा बालिका आपणात् क्रीडनकं क्रीणाति।

ग) युवाम् कस्मिन् विद्यालये पठथः?

घ) यूयं कदा चलचित्रं द्रक्ष्यथ?

ङ) अहम् अधुना विदेशं गन्तुम् इच्छामि।

च) वयं किञ्चित्कालान्तरम् उद्यानं गमिष्यामः।

ii) (क) गच्छति (ख) गच्छामि (ग) अस्ति (घ) अधिकारी (ङ) पाठयति (च) निवसामि।

बोध प्रश्न 2

i) (क) कृत् (ख) भाव अर्थ में (ग) भाववाचक (घ) कर, करके

(ङ) को, के लिये।

ii) (क) कारकः (ख) चयनम् (ग) अपत्यार्थक तद्धित (घ) गार्ग्यः (ङ) शैबः।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

इकाई 4 धातुरूप

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 लकार के भेद, अर्थ एवं काल-भेद

4.3 धातुरूप : व्यवस्था एवं प्रयोग के आधार

4.4 धातुरूपों के आधार पर वाक्य-रचना

4.5 कुछ कृत् एवं तद्धित प्रत्ययों का परिचय एवं प्रयोग

4.6 सारांश

4.7 शब्दावली

4.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :–

- लकारों के भेद, अर्थ एवं लकारों के माध्यम से कालभेद की जानकारी प्राप्त कर लेंगे।
- धातुरूप की व्यवस्था एवं प्रयोग की आधारभूत जानकारी प्राप्त करने के साथ ही धातुरूप के निर्माण की प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त कर लेंगे।
- धातुरूप के निर्माण की प्रक्रिया का ज्ञान हो जाने पर संस्कृत-वाक्य-रचना में समर्थ हो सकेंगे।
- इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप संस्कृत भाषा में धातुरूपों की व्यवस्था उनके प्रयोग के आधार को भली-भाँति समझ सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

पिछली इकाइयों में आपने वर्णोच्चारण की प्रक्रिया, पद, लिङ्ग, वचन, पुरुष और काल तथा शब्दरूपों के बारे में पढ़ा; प्रस्तुत इकाई में हम धातुरूपों के बारे में चर्चा करेंगे। प्रत्येक वाक्य में एक क्रिया होती है, बिना क्रिया के कोई भी वाक्य पूर्ण नहीं होता। संस्कृत भाषा में यदि स्पष्ट रूप से क्रियापद का प्रयोग न भी किया गया हो तो भी वाक्यार्थ की पूर्णता के लिये गम्यमान क्रिया अवश्य होती है। क्रिया के साथ सम्बद्ध होने पर ही वाक्य का कोई पद 'कारक' कहलाता है तथा अपनी उपस्थिति का सार्थक बोध कराता है। यदि वाक्य में कोई पद क्रिया से सम्बद्ध न हो तो वह व्यवहार में निरर्थक अथवा अनावश्यक प्रतीत होता है।

संस्कृत में क्रियापदों को विभिन्न कालखण्डों (लकारों) के अनुसार व्यक्त करने के लिये लोक-व्यवहार में दस लकारों, तीन पुरुषों तथा तीन वचनों में संचालित किया जाता है अर्थात् प्रत्येक धातु के रूप कालभेदानुसार व्यक्त करने के लिये दस लकारों, तीन पुरुषों एवं तीन वचनों में चलते हैं। यहाँ एक बात यह भी ध्यान देने की है कि (1) अंग्रेजी भाषा

के (First Person) प्रथम पुरुष को संस्कृत में उत्तम पुरुष तथा तृतीय पुरुष (Third Person) को प्रथम पुरुष माना गया है। (2) हिन्दी भाषा में विद्यमान एकवचन और बहुवचन के अतिरिक्त संस्कृत में दो पुरुषों, वस्तुओं तथा स्थानादि के लिये द्विवचन का प्रयोग शब्दों (नामपदों) एवं क्रियापदों दोनों में किया जाता है।

4.2 लकार के भेद, अर्थ एवं काल-भेद

संस्कृत भाषा में कुल दस काल एवं वृत्तियां हैं। यह आपने इकाई-2 में पढ़ा होगा। चूँकि इसका उल्लेख पूर्व की इकाई में हो चुका है; अतएव यहाँ पर इस पर सामान्य रूप से दृष्टिपात् किया जा रहा है। निम्न तालिका के द्वारा आप लकार के भेद, अर्थ एव काल-भेद को समझ सकते हैं :

1. लट् : वर्तमान काल
2. लङ् : अनद्यतन (जो आज न होकर कल का या पहले का हो) भूतकाल
3. लिट् : परोक्ष (जो आंखों से न देखा जा सका हो) भूतकाल
4. लुङ् : सामान्य भूतकाल
5. लुट् : अनद्यतन भविष्यत्काल
6. लृट् : सामान्य भविष्यत्काल
7. लोट् : आज्ञा अर्थ में
8. विधिलिङ् : विधि अर्थ में
9. लुङ् : हेतुहेतुमद् (एक क्रिया का दूसरी क्रिया पर आधृत होना) भविष्यत्काल
10. आशीर्लिङ् : आशीर्वाद अर्थ में

लकारों के माध्यम से क्रिया-शब्दों को पद के रूप में परिवर्तित किया जाता है। क्रिया-शब्दों के साथ लगने वाले प्रत्ययों को 'तिङ्' कहा जाता है। क्रिया-रूप दो प्रकार से चलते हैं – परस्मैपद एवं आत्मनेपद। परस्मैपद प्रत्ययों का प्रयोग तब होता है, जब कार्य का फल कर्ता को प्राप्त नहीं होता है। जैसे :– 'देवदत्तः यजति' का अर्थ 'देवदत्त (दूसरे के लिये) यज्ञ करता है। जबकि, 'देवदत्तः यजते' का अर्थ होगा 'देवदत्त (अपने लिए) यज्ञ करता है।'

यहाँ तक आपने लकार का पुनरभ्यास किया। अब आगे आप धातुरूप की व्यवस्था एवं प्रयोग की जानकारी प्राप्त करेंगे।

4.3 धातुरूप : व्यवस्था एवं प्रयोग के आधार

संस्कृत-भाषा में क्रिया को धातु एवं क्रियापद को धातुरूप कहा जाता है। धातुरूप लकार पुरुष एवं वचनपरक ढङ्ग से चलता है। दूसरी इकाई में आपने पुरुष एवं लकार के प्रयोग में इनकी प्रवृत्ति की जानकारी प्राप्त की है। अब आपको गणों के बारे में बताकर प्रत्येक गण के अनुसार परस्मैपद एवं आत्मनेपद के सिद्ध धातुरूपों को बताया जाएगा। जिसके आधार पर आप अन्य समान गण के रूपों को बना सकेंगे। अन्त में आपको सामान्य प्रयोग में आने वाली धातुओं की सूची भी बतायी जाएगी।

संस्कृत भाषा में सभी धातुओं को 10 भागों में बाँटा गया है। उन्हें 'गण' कहा जाता है। प्रथम धातु के नाम पर ही प्रत्येक गण का नाम रखा गया है। जैसे –

1. भ्वादिगण :– 'भू' इस गण की प्रथम धातु है।
2. अदादिगण :– 'अद्' " "
3. जुहोत्यादिगण :– 'हु' " "
4. दिवादिगण :– 'दिव्' " "
5. स्वादिगण :– 'सु' " "
6. तुदादिगण :– 'तुद्' " "
7. रुधादिगण :– 'रु' " "
8. तनादिगण :– 'तन्' " "
9. क्रयादिगण :– 'क्री' " "
10. चुरादिगण :– 'चुर्' " "

1. भ्वादिगण :– यह गण 10 गणों में सबसे मुख्य गण है। सबसे अधिक धातुएं इसी गण में हैं। इस गण की धातु एवं प्रत्यय के बीच में शप् (अ) विकरण लगता है। इसलिए परस्मैपद रूपों में धातु के लट् लकार के अन्त में अति, अतः, अन्ति, असि, अथः, अथ, आमि, आवः, आमः तथा आत्मनेपद रूपों में – अते, एते, अन्ते, असे, एथे, अध्वे, ए, आवहे, आमहे लगेंगे। धातु के अन्तिम स्वर इ ई, उ ऊ, ऋ ॠ को तथा उपधा अर्थात् 'अन्तिम अक्षर से पूर्व के इ, उ, ऋ को क्रमशः ए, ओ, अर् गुण हो जाता है। बाद में गुण के ए को अय्, ओ को अव् हो जाता है। जैसे – भू > भ् ओ > भवति। अब आप इस धातु के रूपों को देखेंगे।

1. लट् :– **'भू' परस्मैपद** **आत्मनेपद 'याच्'**

पुरुष	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्र०पु०	भवति	भवतः	भवन्ति	याचते	याचेते	याचन्ते
म०पु०	भवसि	भवथः	भवथ	याचसे	याचेथे	याचध्वे
उ०पु०	भवामि	भवावः	भवामः	याचे	याचावहे	याचामहे

2. लङ् :–

प्र०पु०	अभवत्	अभवताम्	अभवन्	अयाचत	अयाचेताम्	अयाचन्त
म०पु०	अभवः	अभवतम्	अभवत	अयाचथाः	अयाचेथाम्	अयाचध्वम्
उ०पु०	अभवम्	अभवाव	अभवाम	अयाचे	अयाचावहि	अयाचामहि

3. लिट् :–

प्र०पु०	बभूव	बभूवतुः	बभूवुः	ययाचे	ययाचाते	ययाचिरे
म०पु०	बभूविथ	बभूवथुः	बभूव	ययाचिषे	ययाचाथे	ययाचिध्वे
उ०पु०	बभूव	बभूविव	बभूविम	ययाचे	ययाचिवहे	ययाचिमहे

4. लुङ् :–

प्र०पु०	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्	अयाचिष्ट	अयाचिषाताम्	अयाचिषत
म०पु०	अभूः	अभूतम्	अभूत	अयाचिष्ठाः	अयाचिषाथाम्	अयाचिध्वम्
उ०पु०	अभूवम्	अभूव	अभूम	अयाचिषि	अयाचिष्वहि	अयाचिष्महि

5. लुट् :–

प्र०पु०	भविता	भवितारौ	भवितारः	याचिता	याचितारौ	याचितारः
म०पु०	भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थ	याचितासे	याचितासाथे	याचिताध्वे
उ०पु०	भवितास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः	याचितावहे	याचितास्वहे	याचितास्महे

6. लृट् :–

प्र०पु०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति	याचिष्यते	याचिष्येते	याचिष्यन्ते
म०पु०	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	याचिष्यसे	याचिष्येथे	याचिष्यध्वे
उ०पु०	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः	याचिष्ये	याचिष्यावहे	याचिष्यामहे

7. लोट् :–

प्र०पु०	भवतु	भवताम्	भवन्तु	याचताम्	याचेताम्	याचन्ताम्
म०पु०	भव	भवतम्	भवत	याचस्व	याचेथाम्	याचध्वम्
उ०पु०	भवानि	भवाव	भवाम	याचै	याचावहै	याचामहै

8. विधिलिङ् :–

प्र०पु०	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः	याचेत	याचेयाताम्	याचेरन्
म०पु०	भवेः	भवेतम्	भवेत	याचेथाः	याचेयाथाम्	याचेध्वम्
उ०पु०	भवेयम्	भवेव	भवेम	याचेय	याचेवहि	याचेमहि

9. लुङ् :–

प्र०पु०	अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्	अयाचिष्यत	अयाचिष्येताम्	अयाचिष्यन्त
म०पु०	अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत	अयाचिष्यथाः	अयाचिष्येथाम्	अयाचिष्यध्वम्
उ०पु०	अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम	अयाचिष्ये	अयाचिष्यावहि	अयाचिष्यामहि

10. आशीर्लिङ :–

प्र०पु०	भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः	याचिषीष्ट	याचिषीयास्ताम्	याचिषीरन्
म०पु०	भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त	याचिषीष्ठाः	याचिषीयास्थाम्	याचिषीध्वम्
उ०पु०	भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म	याचिषीय	याचिषीवहि	याचिषीमहि

इस प्रकार आपने देखा कि 'भू' धातु के रूप विभिन्न स्थितियों में अनेक प्रकार के बन रहे हैं। अब आगे के शेष नौ गणों के संक्षिप्त रूप ही दिए जा रहे हैं, जिनके आधार पर आपको स्वयं धातुरूप का निर्माण करना होगा।

2. **अदादिगण** – इस गण के संक्षिप्त रूप इस प्रकार चलेंगे।

1. लट् लकार :–

	परस्मैपद				आत्मनेपद		
प्र०पु०	ति	तः	अन्ति	प्र०पु०	ते	आते	अते
म०पु०	सि	थः	थ	म०पु०	से	आथे	ध्वे
उ०पु०	मि	वः	मः	उ०पु०	ए	वहे	महे

2. लङ् :– (धातु से पूर्व अ या आ लगेगा) (धातु से पूर्व अ या आ लगेगा)

प्र०पु०	त्	ताम्	अन्	प्र०पु०	त	आताम्	अत
म०पु०	:	तम्	त	म०पु०	थाः	आथाम्	ध्वम्
उ०पु०	अम्	व	म	उ०पु०	इ	वहि	महि

3. लिट् :–

प्र०पु०	अ	अतुः	उः	प्र०पु०	इ	आते	इरे
म०पु०	इथ	अथुः	अ	म०पु०	इसे	आथे	इध्वे
उ०पु०	अ	इव	इम	उ०पु०	ए	इवहे	इमहे

4. लुङ् :– (द्वित्व भेद)

प्र०पु०	अत्	अताम्	अन्	प्र०पु०	अत	एताम्	अन्त
म०पु०	अः	अतम्	अत	म०पु०	अथाः	एथाम्	अध्वम्
उ०पु०	अम्	आव	आम	उ०पु०	ए	आवहि	आमहि

5. लुट् :–

प्र०पु०	ता	तारौ	तारः	प्र०पु०	ता	तारौ	तारः
म०पु०	तासि	तास्थः	तास्थ	म०पु०	तासे	तासाथे	ताध्वे
उ०पु०	तास्मि	तास्वः	तास्मः	उ०पु०	ताहे	तास्वहे	तास्महे

6. लृट् :–

प्र०पु०	स्यति	स्यतः	स्यन्ति	प्र०पु०	स्यते	स्येते	स्यन्ते
म०पु०	स्यसि	स्यथः	स्यथ	म०पु०	स्यसे	स्येथे	स्यध्वे
उ०पु०	स्यामि	स्यावः	स्यामः	उ०पु०	स्ये	स्यावहे	स्यामहे

7. लोट् :–

प्र०पु०	तु	ताम्	अन्तु	प्र०पु०	ताम्	आताम्	अताम्
म०पु	हि	तम्	त	म०पु	स्व	अथाम्	ध्वम्
उ०पु०	आनि	आव	आम	उ०पु०	ऐ	आवहै	आमहै

8. विधिलिङ् :–

प्र०पु०	यात्	याताम्	युः	प्र०पु०	ईत	ईयाताम्	ईरन्
म०पु०	याः	यातम्	यात	म०पु०	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्
उ०पु०	याम्	याव	याम	उ०पु०	ईय	ईवहि	ईमहि

9. लृङ् :– (धातु से पहले 'अ' लगेगा) (धातु से पहले 'अ' लगेगा)

स्य के स् को ष् हो जायेगा स्य के स् को ष् हो जायेगा

प्र०पु०	स्यत्	स्यताम्	स्यन्	प्र०पु०	स्यत	स्येताम्	स्यन्त
म०पु०	स्यः	स्यतम्	स्यत	म०पु०	स्यथाः	स्येथाम्	स्यध्वम्
उ०पु०	स्यम्	स्याव	स्याम	उ०पु०	स्ये	स्यावहि	स्यामहि

10. आशीलिङ् :–

(स् को ष् होगा)

प्र०पु०	यात्	यास्ताम्	यासुः	प्र०पु०	सीष्ट	सीयास्ताम्	सीरन्
म०पु०	याः	यास्तम्	यास्त	म०पु०	सीष्ठाः	सीयास्थाम्	सीध्वम्
उ०पु०	यासम्	यास्व	यास्म	उ०पु०	सीय	सीवहि	सीमहि

इस संक्षिप्त रूप के अनुसार ही धातुरूप बनेंगे। इसमें धातु के बाद इन संक्षिप्त रूपों का प्रयोग करना होगा।

3. **जुहोत्यादिगण :–** इस गण के सभी रूप अदादिगण के संक्षिप्त रूप के अनुसार ही चलेंगे; बस आपको ये संक्षिप्त रूप बदलने होंगे :–

1. लट् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन परस्मैपद में 'अन्ति' के स्थान पर 'अति'।
2. लोट् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन परस्मैपद में 'अन्त' के स्थान पर 'अति'।
3. लोट् लकार मध्यम पुरुष द्विवचन आत्मनेपद में 'आथाम्' के स्थान पर 'अथाम्'।

शेष प्रक्रिया अदादिगण की भाँति चलेगी।

4. **दिवादिगण :–** इस गण की प्रक्रिया का संक्षिप्त रूप इस प्रकार चलेगा।

लट् :– परस्मैपद आत्मनेपद

प्र०पु०	यति	यतः	यन्ति	प्र०पु०	यते	येते	यन्ते
म०पु०	यसि	यथः	यथ	म०पु०	यसे	येथे	यध्वे
उ०पु०	यामि	यावः	यामः	उ०पु०	ये	यावहे	यामहे

लङ् :– (धातु से पूर्व 'अ' या 'आ' लगेगा) (धातु से पूर्व 'अ' या 'आ' लगेगा)

प्र०पु०	यत्	यताम्	यन्	प्र०पु०	यत	येताम्	यन्त
म०पु०	यः	यतम्	यत	म०पु०	यथाः	येथाम्	यध्वम्

उ०पु०	यम्	याव	याम	उ०पु०	ये	यावहि	यामहि

लोट् :–

प्र०पु०	यतु	यताम्	यन्तु	प्र०पु०	यताम्	येताम्	यन्ताम्
म०पु०	य	यतम्	यत	म०पु०	यस्व	येथाम्	यध्वम्
उ०पु०	यानि	याव	याम	उ०पु०	यै	यावहै	यामहै

विधिलिङ् :–

प्र०पु०	येत्	येताम्	येयुः	प्र०पु०	येत	येयाताम्	येरन्
म०पु०	येः	येतम्	येत	म०पु०	येथाः	येयाथाम्	येध्वम्
उ०पु०	येयम्	येव	येम	उ०पु०	येय	येवहि	येमहि

शेष लकारों के रूप पूर्ववत् प्रक्रिया के अनुसार चलेंगे।

5. **स्वादिगण** :– इस गण के लट्, लोट्, लङ् एवं विधिलिङ् लकारों के रूप निम्नवत् चलेंगे तथा इनके अतिरिक्त लकारों के रूप पूर्ववत् चलेंगे। इनके संक्षिप्त रूप इस प्रकार हैं।

लट् :–

	परस्मैपद				**आत्मनेपद**		
प्र०पु०	नोति	नुतः	न्वन्ति,नुवन्ति	प्र०पु०	नुते	नुवाते, न्वाते	नुवते, न्वते
म०पु०	नोषि	नुथः	नुथ	म०पु०	नुषे	नुवाथे, न्वाथे	नुध्वे
उ०पु०	नोमि	नुवः, न्वः	नुमः, न्मः	उ०पु०	न्वे,नुवे	नुवहे, न्वहे	नुमहे, न्महे

लङ् :– (धातु से पूर्व 'अ' या 'आ' लगेगा) (धातु से पूर्व 'अ' या 'आ' लगेगा)

प्र०पु०	नोत्	नुताम्	नुवन्,न्वन्	प्र०पु०	नुत्	नुवाताम्, न्वाताम्	नुवत, न्वत
म०पु०	नोः	नुतम्	नुत	म०पु०	नुथाः	नुवाथाम्, न्वाथाम्	नुध्वम्
उ०पु०	नवम्	नुव,न्व	नुम,न्म	उ०पु०	नुविन्वि	नुवहि, न्वहि	नुमहि, न्महि

लोट् :–

प्र०पु०	नोतु	नुताम्	नुवन्तु,न्वन्तु	प्र०पु०	नुताम्,	नुवाताम्, न्वाताम्	नुवताम्, न्वताम्
म०पु०	नु,नुहि	नुतम्	नुत	म०पु०	नुष्व	नुवाथाम्,न्वाथाम्	नुध्वम्
उ०पु०	नवानि	नवाव	नवाम	उ०पु०	नवै	नवावहै	नवामहै

विधिलिङ् :–

प्र०पु०	नुयात्	नुयाताम्	नुयुः	प्र०पु०	न्वीत	न्वीयाताम्	न्वीरन्
म०पु०	नुयाः	नुयातम्	नुयात	म०पु०	न्वीथाः	न्वीयाथाम्	न्वीध्वम्
उ०पु०	नुयाम्	नुयाव	नुयाम	उ०पु०	न्वीय	न्वीवहि	न्वीमहि

यहाँ पर जहाँ-जहाँ दो संक्षिप्त रूप दिए हैं, उनमें से एक या दोनों रूप होना धातु पर निर्भर करता है।

6. **तुदादिगण** :– इस गण के लट्, लङ्, लोट् एवं विधिलिङ् के अतिरिक्त शेष लकारों के रूप पूर्ववत् चलेंगे। इन चार लकारों के संक्षिप्त रूप निम्न हैं :

लट् :–		**परस्मैपद**			**आत्मनेपद**		
प्र०पु०	अति	अतः	अन्ति	प्र०पु०	अते	एते	अन्ते
म०पु०	असि	अथः	अथ	म०पु०	असे	एथे	अध्वे
उ०पु०	आमि	आवः	आमः	उ०पु०	ए	आवहे	आमहे

लङ् :–. (धातु से पूर्व 'अ' या 'आ' लगेगा) (धातु से पूर्व 'अ' या 'आ' लगेगा)

प्र०पु०	अत्	अताम्	अन्	प्र०पु०	अत	एताम्	अन्त
म०पु०	अः	अतम्	अत	म०पु०	अथाः	एथाम्	अध्वम्
उ०पु०	अम्	आव	आम	उ०पु०	ए	आवहि	आमहि

लोट् :–

प्र०पु०	अतु	अताम्	अन्तु	प्र०पु०	अताम्	एताम्	अन्ताम्
म०पु०	अ	अतम्	अत	म०पु०	अस्व	एथाम्	अध्वम्
उ०पु०	आनि	आव	आम	उ०पु०	ऐ	आवहै	आमहै

विधिलिङ् :–

प्र०पु०	एत्	एताम्	एयुः	प्र०पु०	एत	एयाताम्	एरन्
म०पु०	एः	एतम्	एत	म०पु०	एथाः	एयाथाम्	एध्वम्
उ०पु०	एयम्	एव	एम	उ०पु०	एय	एवहि	एमहि

7. **रुधादिगण** :– इस गण के सभी रूप अदादिगण के संक्षिप्त रूप की भाँति ही चलेंगे। इस गण की धातुओं में लट्, लङ्, लोट् एवं विधिलिङ् में धातु के प्रथम स्वर के बाद श्नम् (न् या न) विकरण लगता है। इसमें धातु को गुण नहीं होता है।

8. **तनादिगण** :– इस गण के लट्, लङ्, लोट् एवं विधिलिङ् के अतिरिक्त शेष लकारों के रूप अदादिगणवत् चलेंगे। इन चारों के संक्षिप्त रूप निम्नवत् चलेंगे।

लट् :–	**परस्मैपद**				**आत्मनेपद**		
प्र०पु०	ओति	उतः	वन्ति	प्र०पु०	उते	वाते	वते
म०पु०	ओषि	उथः	उथ	म०पु०	उषे	वाथे	उध्वे
उ०पु०	ओमि	उवः,वः	उमः,मः	उ०पु०	वे	उवहे,वहे	उमहे,महे

लङ् :– (धातु से पूर्व 'अ' या 'आ' लगेगा) (धातु से पूर्व 'अ' या 'आ' लगेगा)

प्र०पु०	ओत्	उताम्	वन्	प्र०पु०	उत	वाताम्	वत
म०पु०	ओः	उतम्	उत	म०पु०	उथाः	वाथाम्	उध्वम्
उ०पु०	अवम्	उव,व	उम,म	उ०पु०	वि	उवहि,वहि	उमहि,महि

लोट् :–

प्र०पु०	ओतु	उताम्	वन्तु	प्र०पु०	उताम्	वाताम्	वताम्
म०पु०	उ	उतम्	उत	म०पु०	उष्व	वाथाम्	उध्वम्
उ०पु०	अवानि	अवाव	अवाम	उ०पु०	अवै	अवावहै	अवामहै

विधिलिङ् :–

प्र०पु०	उयात्	उयाताम्	उयुः	प्र०पु०	वीत	वीयाताम्	वीरन्
म०पु०	उयाः	उयातम्	उयात	म०पु०	वीथाः	वीयाथाम्	वीध्वम्
उ०पु०	उयाम्	उयाव	उयाम	उ०पु०	वीय	वीवहि	वीमहि

9. **क्रयादिगण** :– इस गण के लट्, लङ्, लोट् एवं विधिलिङ् के अतिरिक्त लकारों के रूप पूर्ववत् चलेंगे। इनके संक्षिप्त रूप इस प्रकार चलेंगे।

लट् :–	**परस्मैपद**			**आत्मनेपद**			
प्र०पु०	नाति	नीतः	नन्ति	प्र०पु०	नीते	नाते	नते
म०पु०	नासि	नीथः	नीथ	म०पु०	नीषे	नाथे	नीध्वे
उ०पु०	नामि	नीवः	नीमः	उ०पु०	ने	नीवहे	नीमहे

लङ् :– (धातु से पूर्व 'अ' या 'आ' लगेगा)

प्र०पु०	नात्	नीताम्	नन्	प्र०पु०	नीत	नाताम्	नत
म०पु०	नाः	नीतम्	नीत	म०पु०	नीथाः	नाथाम्	नीध्वम्
उ०पु०	नाम्	नीव	नीम	उ०पु०	नि	नीवहि	नीमहि

लोट् :–

प्र०पु०	नातु	नीताम्	नन्तु	प्र०पु०	नीताम्	नाताम्	नताम्
म०पु०	नीहि	नीतम्	नीत	म०पु०	नीष्व	नाथाम्	नीध्वम्
उ०पु०	नानि	नाव	नाम	उ०पु०	नै	नावहै	नामहै

विधिलिङ् :–

प्र०पु०	नीयात्	नीयाताम्	नीयुः	प्र०पु०	नीत	नीयाताम्	नीरन्
म०पु०	नीयाः	नीयातम्	नीयात	म०पु०	नीथाः	नीयाथाम्	नीध्वम्
उ०पु०	नीयाम्	नीयाव	नीयाम	उ०पु०	नीय	नीवहि	नीमहि

10. **चुरादिगण** :– इस गण में धातु के साथ 'अय्' जुड़ेगा। तब उसको संक्षिप्त रूप के साथ जोड़कर रूप बनायेंगे। यथा – कथ् + अय् + सं०रूप अति = कथयति। इस गण के लट्, लङ्, लोट् एवं विधिलिङ् के अतिरिक्त शेष लकारों के रूप पूर्ववत् चलेंगे। इन चारों लकारों के संक्षिप्त रूप इस प्रकार चलेंगे।

लट् :– (धातु + अय्+)

प्र०पु०	अति	अतः	अन्ति	प्र०पु०	अते	एते	अन्ते
म०पु०	असि	अथः	अथ	म०पु०	असे	एथे	अध्वे
उ०पु०	आमि	आवः	आमः	उ०पु०	ए	आवहे	आमहे

लङ्– (अ या आ + धातु + अय् +)

प्र०पु०	अत्	अताम्	अन्	प्र०पु०	अत	एताम्	अन्त
म०पु०	अः	अतम्	अत	म०पु०	अथाः	एथाम्	अध्वम्
उ०पु०	अम्	आव	आम	उ०पु०	ए	आवहि	आमहि

लोट् :–

प्र०पु०	अतु	अताम्	अन्तु	प्र०पु०	अताम्	एताम्	अन्ताम्
म०पु०	अ	अतम्	अत	म०पु०	अस्व	एथाम्	अध्वम्
उ०पु०	आनि	आव	आम	उ०पु०	ऐ	आवहै	आमहै

विधिलिङ् :–

प्र०पु०	एत्	एताम्	एयुः	प्र०पु०	एत	एयाताम्	एरन्
म०पु०	एः	एतम्	एत	म०पु०	एथाः	एयाथाम्	एध्वम्
उ०पु०	एयम्	एव	एम	उ०पु०	एय	एवहि	एमहि

इस प्रकार आपने यहाँ तक धातुरूप एवं उनके संक्षिप्त रूपों की जानकारी प्राप्त की। जिस गण से धातुरूप बनाना हो, उस गण की धातु के साथ संक्षिप्त रूप को जोड़ने पर सिद्ध धातुरूप प्राप्त हो जाएगा। अब आपको सामान्य प्रयोग वाली धातुओं की अर्थसहित जानकारी दी जाएगी। गण की संख्या दी गयी है।

धातु (गण)	:	**अर्थ**
अघ् (10)	:	पाप करना (उ० प०)
अद् (2)	:	खाना (प० प०)
अर्च् (1)	:	पूजा करना, पूजना (प० प०)
अह् (1)	:	योग्य होना (प० प०)
अश् (9)	:	खाना (प० प०)
अस् (2)	:	होना (प० प०)
आस् (2)	:	बैठना (आ० प०)
इष् (6)	:	चाहना (प० प०)
कथ् (10)	:	कहना (उ० प०)

कम् (1)	:	चाहना (आ० प०)
कम्प् (1)	:	काँपना (″ ″)
कास् (1)	:	खाँसना (″ ″)
कील् (1)	:	गाड़ना (प० प०)
कूज् (1)	:	चहचहाना (″ ″) कूजन करना
कृ (8)	:	करना (उ० प०)
कृष् (1)	:	जोतना (प० प०)
कृत् (10)	:	कीर्तन करना, नाम लेना (उ० प०)
क्री (9)	:	खरीदना (उ० प०)
क्रीड् (1)	:	खेलना (प० प०)
क्रुध् (4)	:	क्रोधित होना (प० प०)
क्षम् (1)	:	क्षमा करना (आ० प०)
खण्ड् (10)	:	तोड़ना, खण्डित करना (उ० प०)
खन् (1)	:	खोदना (उ० प०)
खाद् (1)	:	खाना (प० प०)
खिद् (4)	:	खिन्न होना (आ० प०)
खेल् (1)	:	खेलना (प० प०)
गण (1)	:	गिनना (,, ,,)
गम् (1)	:	जाना (,, ,,)
गर्ज् (1)	:	गरजना (,, ,,)
गवेष् (10)	:	खोजना (उ० प०)
गुम्फ् (6)	:	गूँथना (प० प०)
गै (1)	:	गाना (,, ,,)
ग्रह् (9)	:	लेना, ग्रहण करना (उ० प०)
चर्व् (1)	:	चबाना (प० प०)
चल् (1)	:	चलना, हिलना (प० प०)
चि (5)	:	चुनना, चयन करना (उ० प०)
चित्र (10)	:	चित्र बनाना (उ० प०)
चिन्त् (10)	:	सोचना (,, ,,)

चुम्ब् (1)	:	चूमना (प० प०)
चुर् (10)	:	चुराना (उ० प०)
जन् (4)	:	पैदा होना, उत्पन्न होना (आ० प०)
जप् (1)	:	जप करना, जपना (प० प०)
ज्ञा (9)	:	जानना (उ० प०)
(आ) ज्ञा (10)	:	आज्ञा देना (,, ,,)
तड् (10)	:	पीटना (उ० प०)
तर्क् (10)	:	सोचना, तर्क करना (,, ,,)
दण्ड् (10)	:	दण्ड देना (,, ,,)
दा (1)	:	देना (प० प०)
दा (3)	:	″ (उ० प०)
दृश् (1)	:	देखना (प० प०)
धृ (1)	:	रखना (उ० प०)
धृ (10)	:	धारण करना (,, ,,)
नन्द् (1)	:	प्रसन्न होना (प० प०)
निन्द् (1)	:	निन्दा करना (,, ,,)
नी (1)	:	ले जाना (उ० प०)
पच् (1)	:	पकाना (,, ,,)
पठ् (1)	:	पढ़ना (प० प०)
पत् (1)	:	गिरना (,, ,,)
पूज् (10)	:	पूजा करना (उ० प०)
प्रच्छ् (6)	:	पूछना (प० प०)
मार्ज् (10)	:	साफ करना (उ० प०)
मुच् (6)	:	छोड़ना (,, ,,)
याच् (1)	:	माँगना (,, ,,)
रक्ष् (1)	:	रक्षा करना (प० प०)
रस् (10)	:	स्वाद लेना (उ० प०)
रुद् (2)	:	रोना (प० प०)

इस प्रकार आपने यहाँ पर कुछ धातुओं को अर्थसहित जाना। विशेष जानकारी के लिए सहायक ग्रन्थों को देखें।

बोध प्रश्न 1

i) निम्न प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए।

क) संस्कृत भाषा में क्रिया को कहा जाता है। (धातु / प्रत्यय)

ख) संस्कृत भाषा में क्रियापद को कहा जाता है। (धातुरूप / शब्दरूप)

ग) संस्कृत भाषा में गणों की संख्या है। (10 / 9)

घ) प्रत्येक गण का नामकरण ... के नाम पर आधारित है।
(प्रथम धातु /द्वितीय धातु)

(ङ) क्रयादि गण की प्रथम धातु है। (क्री / कृ)

ii) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

क) स्वादिगण की प्रथम धातु ..... है।

ख) धातु एवं प्रत्यय के बीच में ..... लगता है।

ग) 'भू' धातु का लिट् लकार म.पु.ए.व. में ..... रूप होता है।

घ) 'याच्' धातु का लोट् लकार प्र.पु.ए.व. में ..... रूप होता है।

ङ) विधिलिङ् उत्तमपुरुष एकवचन में 'भू' धातु का ..... रूप होता है।

च) चुरादिगण में धातु के साथ ..... जुड़ेगा।

छ) रुधादिगण में ..... विकरण का प्रयोग होता है।

4.4 धातुरूपों के आधार पर वाक्य-रचना

धातुरूप की निर्माण प्रक्रिया समझने के बाद अब आपको इनके अनुसार वाक्य-रचना की पद्धति को समझना होगा। यहाँ पर आपको जो रचना-प्रक्रिया बतायी जा रही है। उसके अनुसार आप क्रमशः लकारों के माध्यम से शब्दों के विभिन्न रूपों, वचनों को ध्यान में रखते हुए इसकी जानकारी प्राप्त करेंगे।

लट् लकार :– यहाँ पर भिन्न-भिन्न शब्द एवं धातुरूपों के माध्यम से वर्तमानकालिक लट् लकार के वाक्य-प्रयोग द्रष्टव्य हैं –

रामः गच्छति।	=	राम जाता है।
बालकौ गच्छतः ।	=	दो बालक जाते हैं।
जनाः अर्चन्ति ।	=	लोग पूजा करते हैं।
त्वम् पठसि ।	=	तुम पढ़ रहे हो।
युवाम् गच्छथः ।	=	तुम दोनों जा रहे हो।
यूयम् पश्यथ।	=	तुम सब देख रहे हो।
अहम् नमामि।	=	मैं नमस्कार करता हूँ।
आवाम् क्रीडावः ।	=	हम दोनों खेल रहे हैं।
वयम् रक्षामः ।	=	हम सब रक्षा करते हैं।

2. लङ् लकार :–

सा अलिखत् ।	उस (महिला ने) लिखा।
तौ अपठताम् ।	उन दोनों ने पढ़ा।
सर्वे जनाः अगच्छन्।	सभी लोग गए।
त्वम् अहसः ।	तुम हँसे।
युवाम् गीतम् अगायतम्।	तुम दोनों ने गीत गाया।
यूयम् अभ्रमत ।	तुम सब घूमे।
अहम् अचिन्तयम् ।	मैंने सोचा।
आवाम् अतिष्ठाव ।	हम दोनों बैठे।
वयम् बीजानि अवपाम।	हम सबने बीज बोये।

3. लृट् लकार :–

रामः गमिष्यति ।	राम जाएगा।
विद्वांसौ पाठयिष्यतः।	दो विद्वान् पढ़ायेंगे।
जनाः क्रीडिष्यन्ति।	लोग खेलेंगे।
तया सह त्वम् पठिष्यसि।	उस (लड़की) के साथ तुम पढ़ोगे।
युवाम् आगमिष्यथः।	तुम दोनों आओगे।
यूयम् लेखिष्यथ।	तुम सब लिखोगे।
अहम् याचिष्ये।	मैं याचना करूंगा।
आवाम् गमिष्यावः।	हम दोनों जायेंगे।
वयम् रसयिष्यामः।	हम सब स्वाद लेंगे।

इसी प्रकार अन्य लकारों से सम्बन्धित वाक्यों की रचना आपको करनी होंगी।

बोध प्रश्न 2

i) निम्न वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करें :

क) राम घर जाता है।

ख) हम दोनों शत्रु पर क्रोधित हुए।

ग) तुम पाठ याद करो।

घ) वहाँ जलपान होगा।

ङ) एक बालक था।

ii) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

क) ..... तस्मै फलानि दास्यामि।

ख) रामः मम .....अस्ति।

ग) .....क्रीडिष्यथ।

घ) .....अहसाव।

ङ) .....छात्रैः सह अखेलाम।

4.5 कुछ कृत् एवं तद्धित प्रत्ययों का परिचय एवं प्रयोग

संस्कृत-भाषा में अव्ययार्थक प्रत्ययों को छोड़कर सभी प्रत्यय संज्ञा, विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं एवं लिङ्ग, वचन तथा कारक में विशेष्य के अनुरूप ही होते हैं। ये प्रत्यय क्रिया, विशेषण एवं संज्ञा तीनों के कार्यों के सम्पादन में सहभागिता रखते हैं।

कृदन्त :– कृत् प्रत्यय धातुओं अथवा धातुओं के परिवर्तित रूपों में जोड़े जाते हैं। यथा 'कृ' + प्रत्यय से कार, कर्तृ, करण, कुर्वत्, कृत्वा, कर्तुम् आदि। संस्कृत भाषा में मुख्यतः निम्न कृत् प्रत्यय हैं– वर्तमानकालिक, भूतकालिक, भविष्यत्कालिक, परोक्षभूतकालिक (लिङर्थ), कृत्य, भाववाच्य, कर्मवाच्य एवं अव्ययार्थक। इनमें प्रयुक्त होने वाले प्रत्ययों का विवरण इस प्रकार है।

वर्तमानकालिक प्रत्यय (शतृ, शानच्) :– शतृ एवं शानच् प्रत्ययों का प्रयोग लट् लकार में होता है। इनमें से 'शतृ' का प्रयोग परस्मैपदी धातु के साथ एवं 'शानच्' का प्रयोग आत्मनेपदी धातु के साथ होता है। इनका प्रयोग करने पर 'शतृ' का 'अत्' तथा 'शानच्' का 'आन' शेष रहता है। जैसे –

शतृ				**शानच्**			
गच्छ्	+	शतृ (अत्)	= गच्छत्	आस्	+	शानच् (आन)	= आसीन
पठ्	+	"	= पठत्	कम्प्	+	"	= कम्पमान
दृश्	+	"	= पश्यत्	वन्द्	+	"	= वन्दमान
पा	+	"	= पिबत्	वृत्	+	"	= वर्तमान

भूतकालिक प्रत्यय (क्त, क्तवतु) :– क्त एवं क्तवतु प्रत्ययों का प्रयोग भूतकाल में होता है। इनमें से 'क्त' का 'त' एवं 'क्तवतु' का 'तवत्' शेष रहता है। 'क्त' का प्रयोग कर्मवाच्य या भाववाच्य में होता है तथा क्तवतु का प्रयोग कर्तृवाच्य में होता है। जैसे –

कम् + क्त / क्तवतु = कान्त / कान्तवत्

जीव् + " " = जीवित / जीवितवत्

आप् + " " = आप्त / आप्तवत्

भविष्यत्कालिक प्रत्यय (स्यतृ, स्यमान) :– 'स्यतृ' एवं 'स्यमान' प्रत्ययों का प्रयोग भविष्यकाल में होता है। इनमें से 'स्यतृ' का 'अत्' एवं 'स्यमान' का 'मान' शेष रहता है।

'स्यतृ' का प्रयोग परस्मैपदी एवं 'स्यमान' का प्रयोग आत्मनेपदी धातुओं के साथ होता है।

जैसे –

दा + स्यतृ / स्यमान = दास्यत् / दास्यमान

चुर् + " " = चोरयिष्यत् / चोरयिष्यमाण

कृ + " " = करिष्यत् / करिष्यमाण

कृत्यप्रत्यय :– कृत्य प्रत्ययान्त शब्द तीन प्रकार से बनते हैं – तव्यत्, अनीयर् एवं यत्, (ण्यत्) प्रत्ययों को लगाकर। इनमें से तव्यत् का 'तव्य', अनीयर् का 'अनीय' एवं यत् (ण्यत्) का 'य' शेष रहता है।

जैसे –

कृ + तव्यत् / अनीयर् / यत्(ण्यत्) = कर्तव्य / करणीय / कार्य

वाक् + '' '' '' = वक्तव्य / वचनीय / वाच्य

गा + '' '' '' = गातव्य / गानीय / गेय

बोध प्रश्न 3

i) निम्न प्रश्नों का कोष्ठक में दिये गये उत्तरों से उत्तर दीजिए एवं सही उत्तरों का मिलान इकाई के अन्त में दिये उत्तर से कीजिए।

क) सामान्यतया संस्कृत भाषा में प्रत्ययों का प्रयोग होता है।

(संज्ञा, विशेषण / वचन, कारक)

ख) जिसके धातु के अन्त में कृत् प्रत्यय हो, वह (तद्धित / कृदन्त) कहलाता है।

ग) धातुओं के परिवर्तित रूपों में प्रयोग होता है। (संज्ञा / कृदन्त)

घ) 'शतृ' प्रत्यय का प्रयोग होता है। (भूतकाल / वर्तमान काल)

ङ) 'शानच्' प्रत्यय का प्रयोग होता है। (भूतकाल / वर्तमान काल)

ii) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

क) 'शतृ' प्रत्यय का प्रयोग ..... धातु के साथ होता है।

ख) 'शानच्' प्रत्यय का प्रयोग ..... धातु के साथ होता है।

ग) 'स्यतृ' का प्रयोग ..... काल में होता है।

घ) 'गच्छ्' धातु में 'शतृ' का प्रयोग करने पर ..... शब्द बनता है।

ङ) 'आस्' में 'शानच्' का प्रयोग करने पर ..... शब्द बनता है।

च) 'क्त' प्रत्यय का प्रयोग ..... काल में होता है।

छ) कृत्य प्रत्ययान्त शब्द ..... प्रकार से बनते हैं।

ज) 'कृ' धातु के साथ 'तव्यत्' प्रत्यय का प्रयोग करने पर ..... शब्द बनता है।

झ) 'जीव्' धातु के साथ 'क्तवतु' प्रत्यय का प्रयोग करने पर ..... शब्द बनता है।

4.6 सारांश

इस इकाई में आपने काल-भेद का ज्ञान प्राप्त किया। इसके पश्चात् आपने धातुरूप की व्यवस्था एवं उसके संक्षिप्त रूपों की जानकारी प्राप्त की। पुनः आपने धातुरूप के आधार पर वाक्य-रचना की पद्धति का ज्ञान प्राप्त करते हुए कुछ कृत् एवं तद्धित प्रत्ययों का परिचय एवं प्रयोग की जानकारी प्राप्त की। इस प्रकार यदि आप ध्यानपूर्वक इसे पढ़ेंगे तो निश्चय ही संस्कृत भाषा की आपको प्रारम्भिक जानकारी प्राप्त हो जाएगी।

4.7 शब्दावली

दृष्टिपात्	–	किसी वस्तु या पदार्थ को देखना।
सहभागिता	–	एकसाथ मिलकर सहयोग करना।
कृदन्त	–	जिसके अन्त में 'कृत्' प्रत्यय हो।
बहुप्रचलित	–	लोक-व्यवहार में अधिक प्रयोग में आया हुआ।
परोक्ष	–	जो कार्य आँखों के सामने न हो।
विकरण	–	धातु एवं प्रत्यय के बीच में लगने वाले शप् आदि।
पुनरभ्यास	–	दोबारा अभ्यास करना।

4.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी – वरदराज, सम्पा०–श्रीधरानन्द शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
2. बृहद् अनुवाद-चन्द्रिका – चक्रधर हंस नौटियाल, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) (क) धातु (ख) धातुरूप (ग) 10 (घ) प्रथम धातु के नाम पर (ङ) क्री।

ii) (क) 'सु' (ख) विकरण (ग) बभूविथ (घ) याचताम् (ङ) भवेयम् (च) 'अय्' (छ) श्नम्।

बोध प्रश्न 2

i) (क) रामः गृहं गच्छति । (ख) आवां शत्रवे अक्रुध्याव ।
(ग) त्वं पाठं स्मर । (घ) तत्र जलपानं भविष्यति ।
(ङ) एकः बालकः आसीत् ।

ii) (क) अहम्, (ख) मित्रम्, (ग) यूयम्, (घ) आवाम् ,(ङ) वयम् ।

बोध प्रश्न 3

i) (क) संज्ञा, विशेषण (ख) कृदन्त (ग) कृदन्त (घ) वर्तमान (ङ) वर्तमान

ii) (क) परस्मैपद (ख) आत्मनेपद (ग) भविष्यत् (घ) गच्छत् (ङ) आसीन (च) भूत (छ) तीन (ज) कर्तव्य (झ) जीवितवत्।

इकाई 5 सरल वाक्य-रचना

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 वाक्य की परिभाषा तथा स्वरूप

5.3 वाक्य के भेद

5.4 वाक्य-रचना के प्रकार

5.5 अर्थ और वाक्य

5.6 कारक, वाच्य तथा समास का परिचय तथा संस्कृत वाक्य-रचना में इन तीनों की उपादेयता।

5.6.1 कारक-परिचय

5.6.2 वाच्य-परिचय

5.6.3 समास-परिचय

5.7 सारांश

5.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :–

- वाक्य के लिये आवश्यक बातों के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे।
- आकृति की दृष्टि से, रचना की दृष्टि से, अर्थ की दृष्टि से तथा क्रिया की दृष्टि से वाक्य के भेदों के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे।
- वाक्य-रचना के प्रकारों से अवगत होंगे।
- कारक की परिभाषा तथा वाक्य-रचना में इसकी उपयोगिता को जान लेंगे।
- वाच्य की परिभाषा तथा वाक्य-रचना में इसके महत्त्व से परिचित होंगे।
- समास की परिभाषा तथा वाक्य-रचना में इसके महत्त्व को जान लेंगे।

5.1 प्रस्तावना

पिछली इकाइयों में आपने वर्णोच्चारण की प्रक्रिया, पद, लिङ्ग, वचन, पुरुष और काल, शब्दरूपों तथा धातुरूपों के बारे में जाना। इस इकाई में हम संस्कृत भाषा की वाक्य-रचना तथा वाक्य के घटक आवश्यक तत्त्वों पर चर्चा करेंगे। वाक्य न तो कोई भौतिक विषय है और न ही कोई भौतिक वस्तु; अपितु वैयाकरणों तथा कोश-रचयिताओं ने पूर्ण अर्थ की प्रतीति कराने वाले शब्द-समूह को वाक्य कहा है। मीमांसा दर्शन में 'पद' तथा 'वाक्य' को लेकर काफी विवाद रहा है अर्थात् कुछ मीमांसक 'वाक्य' की सार्थक सत्ता तथा 'पद' को उसके तोड़े गये अंश मानते हैं, जबकि अन्य 'पद' की सार्थक सत्ता तथा 'पदों' के जोड़े हुए रूप को वाक्य मानते हैं। अस्तु, इस पर आगे की पंक्तियों में सविस्तार चर्चा करेंगे।

भारतीय आचार्यों ने वाक्य की परिभाषा पर विचार करते हुए पाँच बातें आवश्यक बतायी हैं। जो इस प्रकार हैं – सार्थकता, योग्यता, आकांक्षा, आसत्ति अथवा सन्निधि तथा अन्विति।

वाक्य के दो अंग होते हैं – उद्देश्य अर्थात् वाक्य का वह अंश जिसके विषय में वाक्य में कुछ सूचना दी गयी; तथा विधेय अर्थात् वाक्य का वह अंश जो उद्देश्य के विषय में कुछ सूचना दे।

वाक्य कई प्रकार के होते हैं। आकृति को आधार मानकर वाक्य दो प्रकार के अर्थात् योगात्मक तथा अयोगात्मक हो सकते हैं; वाक्य की संरचना के आधार पर वाक्य चार प्रकार के अर्थात् सरलवाक्य, संयुक्तवाक्य, संश्लिष्टवाक्य तथा मिश्रवाक्य हो सकते हैं; अर्थ के आधार पर वाक्य सात प्रकार के अर्थात् विधानार्थक, निषेधार्थक, आज्ञार्थक, प्रश्नार्थक, विस्मयार्थक, सन्देहार्थक तथा इच्छार्थक हो सकते हैं, क्रिया की विद्यमानता की दृष्टि से वाक्य दो प्रकार के अर्थात् क्रियायुक्त वाक्य तथा क्रियाविहीन वाक्य हो सकते हैं।

वाक्य-रचना दो प्रकार की हो सकती है, जैसे – पूर्ण वाक्यात्मक रचना, अपूर्ण वाक्यात्मक रचना। ये प्रत्येक पुनः दो प्रकार की हो सकती है – अन्तः केन्द्रिक रचना, बहिःकेन्द्रिक रचना। अन्तःकेन्द्रिक रचना भी दो प्रकार की होती है अर्थात् आश्रितवर्ग अन्तःकेन्द्रिक वाक्य-रचना तथा सर्वांगी अन्तःकेन्द्रिक वाक्य-रचना।

वाक्य-विन्यास में तीन बातें प्रमुख हैं अर्थात् पदों का परस्पर समन्वय, कारक तथा पदों का क्रम। संस्कृत के विभक्ति-प्रधान भाषा होने के कारण उसमें पदों का परस्पर सम्बन्ध विभक्तियों से निर्धारित होता है। संस्कृत व्याकरण में वाक्य-विन्यास के सन्दर्भ में कारक प्रकरण पर विशेष विचार हुआ है। वस्तुतः कारक क्रिया की निष्पत्ति में लगी हुई द्रव्य-शक्ति है। इसी का दूसरा नाम साधन है। यह शक्ति मूल रूप में एक है और वह है कर्तृत्वशक्ति और यही शक्ति अवान्तर व्यापार की विवक्षा से कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान तथा अधिकरण – इन छः रूपों में प्रकाशित होती है।

वाच्यता की दृष्टि से वाक्य तीन प्रकार के होते हैं अर्थात् कर्तृवाच्य वाक्य, कर्मवाच्य वाक्य तथा भाववाच्य वाक्य। एक वाक्य में एक ही क्रिया होती है, जबकि उस क्रिया के कई सम्बन्धी होते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि वाक्य में प्रत्येक शब्द अपनी विभक्ति के माध्यम से अपना सम्बन्ध प्रकट करता है। इन शब्दों में से कोई शब्द अर्थ की दृष्टि से किसी शब्द के निकट होता है और कालान्तर में वे आपस में मिल जाते हैं। वाक्य में शब्दों के इस प्रकार मिल जाने को समास कहते हैं। समास की दो अवस्थायें हो सकती हैं – (1) प्रथमा-भिन्न विभक्ति वाले पूर्ववर्ती पद का प्रथमा विभक्ति वाले परवर्ती पद से समास तथा (2) प्रथमा विभक्ति वाले पूर्ववर्ती पद का प्रथमा विभक्ति वाले परवर्ती पद से समास। आगे की पंक्तियों में इन सभी बातों पर यथाक्रम सविस्तार विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है।

इस इकाई का मुख्य शीर्षक है – 'सरल वाक्य-रचना'। कारक, वाच्य तथा समास वाक्य के अपेक्षित अवयव हैं। अतः इन तीनों पर विचार करने से पूर्व वाक्य की परिभाषा तथा वाक्य-संरचना पर चर्चा करना आवश्यक है।

5.2 वाक्य की परिभाषा तथा स्वरूप

लोक-व्यवहार में भाव की स्पष्ट प्रतीति वाक्य से होती है। वाक्य का स्वरूप क्या है इस विषय पर विचार-विमर्श सुदूरभूत में ही आरम्भ हो गया था। पाणिनि ने यद्यपि **अष्टाध्यायी** में वाक्य की परिभाषा के विषय में कोई उल्लेख नहीं किया है; परन्तु वाक्य से सम्बद्ध कार्य-विधान का अवश्य वर्णन किया है। परन्तु इस कार्य की पूर्ति **वार्तिककार कात्यायन** ने की

है। उन्होंने पाणिनि के सूत्रों पर '**वार्तिक**' लिखकर वाक्य का सरल रूप प्रस्तुत किया। यूरोप में इस दृष्टि से प्रथम प्रयास **थ्रैंक्स** का है जिनका समय प्रथम शती ई०पू० माना जाता है। वार्तिककार कात्यायन ने वाक्य के दो पारिभाषिक लक्षण दिए हैं, जो इस प्रकार हैं –

1. **'आख्यातं साव्ययकारकविशेषणं वाक्यम्',** अर्थात् अव्यय, कारक और विशेषणसहित क्रिया वाक्य है, जैसे –

   अव्ययसहित क्रिया – उच्चैः गायति।

   कारकसहित क्रिया – ग्रामं गच्छति।

   विशेषणसहित क्रिया – सुष्ठः पचति।

2. **'एकतिङ् वाक्यम्'** अर्थात् वाक्य में एक ही क्रियापद होना आवश्यक है। इस दृष्टि से एक से अधिक क्रियायुक्त वाक्यों को वाक्य नहीं माना जा सकता है। वाक्य को प्रायः लोग पूर्ण अर्थ की प्रतीति कराने वाले शब्दों का समूह मानते हैं। वस्तुतः भाषा में या बोलने में वाक्य ही प्रधान है। हमारा सोचना, समझना, बोलना तथा किसी 'भाव या अर्थ' को हृदयंगम करना, सभी कुछ वाक्य में ही होता है। अतः इस दृष्टि से वाक्य स्वयं में एक पूर्ण इकाई है तथा पद या शब्द वाक्य के तोड़े गये अंश हैं। पद तथा वाक्य को लेकर भारतीय मीमांसकों में विवाद रहा है। अन्विताभिधानवाद के अनुसार वाक्य की ही सार्थक सत्ता है तथा पद अथवा शब्द उसके तोड़े हुए अंश हैं; जबकि अभिहितान्वयवाद के अनुसार पद की सार्थक सत्ता है तथा पदों का जोड़ा हुआ रूप वाक्य है। **वाक्यपदीयकार भर्तृहरि** ने भी वाक्य की सत्ता को ही वास्तविक कहा है तथा उनका यह मत आधुनिक भाषा-विज्ञान-जगत् को मान्य है।

वस्तुतः वाक्य भाषा की सहज इकाई है। वाक्य अपने आप में अविच्छिन्न तथा पूर्ण होता है वाक्य के अवयवरहित स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए संस्कृत वैयाकरणों ने 'चित्रबुद्धि' आदि रूपकों का आश्रय लिया है। चित्रबुद्धि से तात्पर्य है जिस प्रकार सर्वप्रथम चित्र हमारे सामने पूर्णरूप में रहता है। एतदुपरान्त उसके भिन्न-भिन्न भागों में हमारी दृष्टि जाती है, उसी प्रकार वाक्य भी अपने आप में पूर्ण है, निराकाङ्क्ष तथा अवयवरहित है। उसे समझने के लिए हम उसे पदों तथा पदों को समझने के लिए प्रकृति, प्रत्यय (धातु तथा प्रत्यय) के विभाग का आश्रय लेते हैं; परन्तु अर्थ की दृष्टि से अध्ययन करने पर यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि वाक्य को पूर्णतः पूर्ण नहीं कहा जा सकता है। अपितु वाक्य पूर्ण भाव का खण्ड मात्र होता है; क्योंकि मानव-मन में भावों की एक अविच्छिन्न धारा बहती रहती है और बीच में उभरने वाले छोटे-मोटे भाव उस अविच्छिन्न धारा की लहरें मात्र हैं। अपने किसी एक भाव को व्यक्त करने के लिए प्रायः कई वाक्यों का सहारा लेना पड़ता है। अतः इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि वाक्य अपने में पूर्ण होने पर भी अर्थ की दृष्टि से एक विचार अथवा भाव का खण्डमात्र है। अतः इन सभी बातों पर विचार करने के उपरान्त भाषावैज्ञानिकों ने वाक्य की परिभाषा कुछ इस प्रकार दी है –

"वाक्य भाषा की वह सहज इकाई है, जिसमें एक या अधिक शब्द (पद) होते हैं, तथा जो अर्थ की दृष्टि से पूर्ण हो या अपूर्ण, व्याकरणिक दृष्टि से अपने विशिष्ट सन्दर्भ में अवश्य पूर्ण होता है, साथ ही उसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कम से कम एक क्रिया अवश्य होती है।" डा० भोलानाथ तिवारी – भाषाविज्ञान, पृ० 208;

वाक्य की परिभाषा तथा स्वरूप पर विचार करते हुए भारतीय आचार्यों, जिनमें विश्वनाथ का नाम उल्लेखनीय है, ने वाक्य के लिए अधोवर्णित बातें आवश्यक मानी हैं–

वाक्यं स्याद्योग्यताकांक्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः। आचार्य विश्वनाथ, साहित्यदर्पण, द्वितीय परिच्छेद

योग्यता – अर्थात् वाक्य में प्रयुक्त शब्द प्रसंग के अनुरूप अर्थ की प्रतीति कराने में सक्षम हों। उदाहरण के लिए **'वह्निना सिञ्चति'** अर्थात् आग से सींचता है वाक्य में आग सींचने का नहीं अपितु जलाने का साधन होने के कारण इस वाक्य के शब्दों में परस्पर योग्यता नहीं है।

आकांक्षा – अर्थात् वाक्य के शब्दों में अर्थ की पूर्ण प्रतीति कराने की क्षमता हो ताकि श्रोता अथवा पाठक को भावपूर्ति के लिए कुछ और सुनने अथवा पढ़ने की आकांक्षा न रहे।

आसत्ति – अर्थात् वाक्य के शब्द परस्पर समीप रहने चाहिए अर्थात् यदि एक शब्द आज कहा जाये, दूसरा कल और तीसरा परसों तो उसे वाक्य नहीं कहा जा सकता है।

इसके अतिरिक्त वाक्य के शब्दों में सार्थकता तथा अन्विति भी महत्त्वपूर्ण हैं। सार्थकता से अभिप्राय है कि वाक्य के शब्द सार्थक होने चाहिए तथा अन्विति का अर्थ है वाक्य के शब्दों में पुरुष, काल, लिङ्ग, वचन तथा कारक की दृष्टि एक होनी चाहिए। उदाहरण के लिए ''द्वौ बालकौ गच्छामि'' में शब्दों में व्याकरणिक दृष्टि से अन्विति का अभाव है; क्योंकि द्वौ बालकौ अन्य पुरुष, पुंल्लिङ्ग द्विवचन है; जबकि गच्छामि उत्तम पुरुष एकवचन का रूप है। अतः यहाँ पर व्याकरणिक एकरूपता का अभाव होने के कारण इसे वाक्य नहीं कहा जा सकता है। इसका शुद्ध रूप होगा "द्वौ बालकौ गच्छतः''। सार्थकता और अन्विति होने के कारण यह वाक्य भी कहलाएगा।

5.3 वाक्य के भेद

वाक्य के भेद कई आधारों पर हो सकते हैं – जैसे, (1) आकृति के आधार पर (2) रचना के आधार पर (3) भाव के आधार पर तथा (4) क्रिया की विद्यमानता के आधार पर।

1) आकृति के आधार पर वाक्य के भेद –

आकृति के आधार पर वाक्य दो प्रकार के हो सकते हैं –

(क) अयोगात्मक वाक्य (ख) योगात्मक वाक्य

क) अयोगात्मक वाक्य – अयोगात्मक का अर्थ है अर्थतत्त्वों में परस्पर सम्बन्ध प्रकट करने के लिए शब्द के साथ किसी सम्बन्ध-तत्त्व अथवा प्रत्यय का योग न होना। अतः स्पष्ट है कि अयोगात्मक भाषाओं के वाक्य में (सम्बन्ध-तत्त्व के अभाव में) अर्थों का परस्पर सम्बन्ध शब्द-क्रम से प्रकट किया जाता है। कहने का भाव यह है कि ऐसे वाक्यों में शब्दों का स्थान अथवा क्रम निश्चित रहता है तथा किसी भी शब्द का स्थान अथवा क्रम बदल देने से वाक्य का अर्थ ही बदल जाता है। इस प्रकार की प्रवृत्ति एकाक्षर परिवार की चीनी आदि भाषाओं में प्रधान रूप से मिलती है। इसके अतिरिक्त भारोपीय परिवार की संस्कृत, ग्रीक आदि से विकसित आधुनिक भारतीय भाषाओं तथा अंग्रेजी में भी यह प्रकृति दिखाई देती है; यथा – John Killed Marry, Marry killed John यों दोनों वाक्यों में एक जैसे शब्द हैं; परन्तु उनका क्रम बदलने से अर्थ उलटा हो गया है।

ख) योगात्मक – योगात्मक भाषाओं में शब्दों के साथ विभक्ति का योग रहता है; जिसके माध्यम से शब्द वाक्य में अपना सम्बन्ध प्रकट करते हैं। ग्रीक, लैटिन, अरबी, फारसी तथा संस्कृत इसी प्रकार की भाषायें हैं।

संस्कृत एक योगात्मक भाषा है। इसके वाक्यगत शब्द अपने आप में पूर्ण होते हैं तथा अपना सम्बन्ध स्वतः प्रकाशित करते हैं। संस्कृत की इस प्रकृति के कारण वाक्य में शब्दों के क्रम का महत्त्व नहीं है। उदाहरण द्रष्टव्य हैं –

पुत्रेण सह आगतः पिता ।
(पुत्र के साथ पिता आया) ।

पिता पुत्रेण सह आगतः ।
(पिता पुत्र के साथ आया) ।

आगतः पुत्रेण सह पिता ।
(आया पुत्र के साथ पिता)।

आगतः पिता पुत्रेण सह ।
(आया पिता पुत्र के साथ) ।

2) **रचना के आधार पर वाक्य के भेद** – वाक्य की रचना की दृष्टि से वाक्य चार प्रकार के हो सकते हैं अर्थात् (क) सरल वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य (ग) संश्लिष्ट वाक्य (घ) मिश्रित/मिश्र वाक्य।

क) सरल वाक्य (Simple sentence) – सरल वाक्य सबसे छोटा वाक्य होता है, जिसमें प्रायः एक उद्देश्य अर्थात् क्रिया को करने वाला कर्ता तथा एक विधेय अर्थात् क्रिया होती है; परन्तु संस्कृत का सबसे छोटा वाक्य केवल क्रिया से बनता है।

यथा – उत्तम पुरुष – पठामि – मैं पढ़ता हूँ।
मध्यम पुरुष – पठसि – तू पढ़ता है।

परन्तु अन्य पुरुष में प्रायः कर्ता का रहना आवश्यक होता है, यथा – बालकः पठति–बालक पढ़ता है। इससे बड़े वाक्य में कर्म भी आ जाता है, यथा – बालकः (कर्ता), पुस्तकं (कर्म), पठति (क्रिया); अर्थात् बालक पुस्तक पढ़ता है आदि।

ख) संयुक्त वाक्य (Compound sentence) – इस प्रकार के वाक्य में दो या अधिक क्रिया-पद होते हैं तथा उपवाक्यों में कोई प्रधान तथा आश्रित उपवाक्य नहीं होता। जैसे – रामः गृहम् अगच्छत् भोजनं च अकरोत्। इस संयुक्त वाक्य में दोनों उपवाक्य स्वतन्त्र तथा पूर्ण हैं। (1) रामः गृहम् अगच्छत्। (2) (रामः) भोजनम् अकरोत्। 'च' दोनों स्वतन्त्र उपवाक्यों का संयोजक है।

ग) संश्लिष्ट वाक्य (Complex sentence) – इसमें एक प्रधान उपवाक्य होता है तथा एक या अधिक आश्रित उपवाक्य जो पूर्ण अर्थ की प्रतीति के लिए प्रधान उपवाक्य पर आश्रित होता (ते) है (हैं)। यथा – सोऽयं गिरिः प्रस्रवणः यत्र गोदावरी नदी। यह वही प्रस्रवण पर्वत है, जहाँ गोदावरी नदी है।

घ) मिश्र वाक्य – इसमें एक से अधिक प्रधान उपवाक्य तथा एक से अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं, जैसे –

"यद्भावि	न तद् भावि	भावि चेन्न	तदन्यथा''
(प्र०उपवा०)	(आ०उपवा०)	(प्र०उपवा०)	(आ०उपवा०)

अर्थात् जो नहीं होने को है, वह नहीं हो सकता; यदि होना है, तो अन्यथा नहीं हो सकता। यह दो प्रधान उपवाक्यों तथा दो आश्रित उपवाक्यों वाला एक मिश्रवाक्य है।

3) **अर्थ अथवा भाव की दृष्टि से वाक्य के भेद –**

अर्थ अथवा भाव के आधार पर वाक्य कम से कम सात प्रकार के हो सकते हैं, यथा

क) **विधानार्थक वाक्य –** अर्थात् जिस वाक्य में कर्ता के विषय में कोई सूचना प्रकट हो, यथा – **बालकः फलं खादति** (बालक फल खाता है)।

ख) **निषेधार्थक वाक्य** – अर्थात् जिसमें क्रिया का निषेध सूचित हो, यथा – **'सः न पठति'** – वह नहीं पढ़ता है।

ग) **आज्ञार्थक वाक्य** – जिससे किसी तरह की आज्ञा का बोध हो। जैसे – **त्वं खाद** (तुम खाओ), **त्वं पठ** (तुम पढ़ो)।

घ) **प्रश्नार्थक वाक्य** – अर्थात् जिससे प्रश्न पूछा जाये, यथा – **अपि तपो वर्धते?** क्या तुम्हारा तप बढ़ रहा है?

ङ) **विस्मयार्थक वाक्य** – अर्थात् जिस वाक्य से आश्चर्य प्रकट हो, यथा – **अयि! असौ यौगन्धरायणः।** अरे! यह यौगन्धरायण है।

च) **सन्देहार्थक वाक्य** – अर्थात् जिस वाक्य से सन्देह प्रकट हो, यथा – **अपि जीवेत्सः** (सम्भव है वह जीवित हो)।

छ) **इच्छार्थक वाक्य** – अर्थात् जिस वाक्य से इच्छा ज्ञापित हो, यथा – **जीवेम शरदः शतम्** (हम सौ वर्ष तक जिएँ)।

4) **क्रिया की विद्यमानता के आधार पर वाक्य के भेद** – क्रिया की विद्यमानता की दृष्टि से संस्कृत में वाक्य दो प्रकार के अर्थात् क्रियायुक्त वाक्य तथा क्रियाविहीन वाक्य प्रयुक्त होते हैं। परन्तु इस बात का ध्यान रहे कि संस्कृत में क्रियाविहीन वाक्य की प्रवृत्ति कुछ सीमित कालों में ही मिलती है।

क्रियाविहीन वाक्य – **गौः पूज्या** = गाय पूजनीया है।

अये स्त्रीजनः – अरे स्त्रियाँ हैं।

क्रियायुक्त वाक्य – उन्नतं पयोधरं वीक्ष्य यदि गच्छति, तद् गच्छ = ऊँचे बादलों को देखकर भी यदि जाते हो तो जाओ।

बोध प्रश्न 1

i) "आख्यातं साव्ययकारकविशेषणं वाक्यम्'' – वाक्य की यह परिभाषा किसने दी है?

क) पाणिनि

ख) पतञ्जलि

ग) कात्यायन

घ) दण्डी।

ii) "वाक्यं स्याद्योग्यताकांक्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः' – किसके द्वारा दी गई परिभाषा है?

क) आचार्य मम्मट

ख) आचार्य विश्वनाथ

ग) आचार्य वामन

घ) आचार्य कुन्तक

iii) योगात्मक वाक्य तथा अयोगात्मक वाक्य के वर्गीकरण का आधार क्या है?

क) आकृति

ख) ध्वनि

ग) पारिवारिक

घ) केन्तुम्-शतम् वर्ग।

अभ्यास प्रश्न 1

i) वार्तिककार कात्यायन ने वाक्य के कौन से दो परिभाषिक लक्षण दिये हैं, इन्हें लिखिए।

क) ....

ख) ....

ii) 'वाक्य की परिभाषा' को तीन वाक्यों में लिखिए।

.....

.....

iii) आकृति के आधार पर वाक्य के भेदों को दो वाक्यों में लिखिए।

.....

.....

iv) रचना के आधार पर वाक्य के चार भेदों को लिखिए।

(क) ..... (ख) .....

(ग) ..... (घ) .....

v) अर्थ के आधार पर वाक्य के सात भेदों को लिखिए।

(क) ..... (ख).....

(ग)..... (घ) .....

(ङ) .....(च) .....

(छ) .....

5.4 वाक्य-रचना के प्रकार

वाक्य की रचना पदों से होती है। 'पद' किसे कहते हैं? पहले इस विषय पर चर्चा करते हैं। बोलने अथवा लिखने में वाक्य में शब्द के जिस रूप का प्रयोग होता है, उसे पद कहते हैं। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि पद शब्द और प्रत्यय (सुप् अथवा तिङ्) के योग से बनता है। संस्कृत वाक्य-रचना में पदान्वय महत्त्वपूर्ण है। पदान्वय का अर्थ है – वाक्य-रचना में पदों में परस्पर व्याकरणिक अनुरूपता। यह व्याकरणिक अनुरूपता कर्ता-क्रिया, कर्म-क्रिया, विशेषण-विशेष्य में विभिन्न व्याकरणिक कोटियों जैसे लिङ्ग, वचन, कारक, क्रिया के काल तथा पुरुष की दृष्टि से होती है। स्मरण रहे कि –

संस्कृत भाषा में कर्ता-क्रिया में लिङ्ग का अन्वय नहीं है। यथा –

बालकः पठति – बालक पढ़ता है।

बालिका पठति – बालिका पढ़ती है।

वाक्य-रचना चार प्रकार की होती है –

(i) पूर्ण वाक्यात्मक (ii) अपूर्ण वाक्यात्मक,

(iii) अन्तःकेन्द्रिक (iv) बहिःकेन्द्रिक

(i&ii) पूर्ण वाक्यात्मक रचना में वाक्य के लिए आवश्यक सारे उपकरण होते हैं; जबकि अपूर्ण वाक्यात्मक रचना में एक या अधिक वाक्य-उपकरण या पद लुप्त रहते हैं, यथा –

क) महेशः – सुरेश! कि त्वं ग्रीष्मावकाशे जयपुरं गमिष्यसि?

ख) सुरेशः – आम् महेश!

इन उदाहरणों में (क) पूर्ण वाक्यात्मक रचना का उदाहरण है तथा (ख) अपूर्ण वाक्यात्मक रचना का।

(iii & iv) अन्तःकेन्द्रिक रचना का केन्द्र प्रायः उसी में होता है। अतः एक शब्द पूरी रचना के स्थान पर आ सकता है; जबकि बहिःकेन्द्रिक रचना में सभी पद महत्त्वपूर्ण होते हैं।

यथा – (क) श्वेतः अश्वः धावति।

(सफेद घोड़ा दौड़ता है)।

इस रचना में श्वेतः को छोड़कर यदि केवल 'अश्वः धावति' कहें तो वाक्य के स्तर पर कोई अन्तर नहीं होगा, जबकि –

(ख) अश्वाः धावन्ति।

(घोड़े दौड़ते हैं)।

इस रचना में न तो केवल 'अश्व', 'अश्वाः पद का कार्य कर सकता है और न आस् (ा:)। इसी प्रकार धावन्ति में भी धाव् तथा अन्ति दोनों का प्रयोग आवश्यक है। अतः (क) अन्तःकेन्द्रिक रचना का उदाहरण है तथा (ख) बहिःकेन्द्रिक रचना का।

बोध प्रश्न 2

i) सुबन्त अथवा तिङन्त क्या कहलाता है?

क) उपधा

ख) पद

ग) टि

घ) घि

5.5 अर्थ और वाक्य

वाक्य की परिभाषा एवं स्वरूप शीर्षक के अन्तर्गत आप पढ़ चुके हैं कि वाक्य की ही सार्थक सत्ता है। व्याकरणिक दृष्टि से वाक्य अपने आप में पूर्ण है तथा इसमें अवयव अथवा खण्डों की कल्पना बाद में की जाती है। वाक्य को समझने के लिए हम उसे पदों में तथा पदों को प्रकृति-प्रत्यय में विभक्त करते हैं। इस दृष्टि से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि पूर्ण अर्थ की प्रतीति वाक्य से होती है, मात्र शब्द अथवा वर्ण से नहीं। परन्तु जहाँ तक अर्थ की दृष्टि से वाक्य की पूर्णता का सम्बन्ध है, उसे पूर्णतः पूर्ण नहीं कहा जा सकता है। इस बात की ओर पीछे की पंक्तियों में भी संकेत किया जा चुका है कि मानव-हृदय में जन्म से लेकर मरणपर्यन्त भावों की एक अविच्छिन्न धारा बहती रहती है तथा बीच में आने वाले छोटे-मोटे भाव उस अविच्छिन्न धारा की लहरें मात्र हैं तथा एक भाव या अर्थ को प्रकट करने के लिए भी हमें कई वाक्यों तथा वाक्यांशों का सहारा लेना पड़ता है। इस दृष्टि से विचार करने पर कहा जा सकता है कि अर्थ की दृष्टि से वाक्य पूरे भाव का एक खण्ड है, किन्तु इसका यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि वाक्य में अर्थ की पूर्णता हो ही नहीं सकती है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्यों को देख लीजिए जो पूर्ण अर्थ के द्योतक हैं –

क) "उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।

(परिश्रम से कार्य पूरे होते हैं, मनोरथों से नहीं)।

ख) शुष्कवृक्षाश्च मूर्खाश्च न नमन्ति कदाचन।

शुष्क वृक्ष तथा मूर्ख पुरुष कभी नम्र नहीं बनते हैं।

इसी प्रकार – अर्थ की पूर्णता वाक्य में नहीं भी हो सकती है, यथा –

(सः अपि तेन सह तत्र आगच्छत्)।

(वह भी उसके साथ वहाँ आ गया)।

नोट :– इस वाक्य का अर्थ समझने के लिए पूर्व प्रसंग से अवगत होना आवश्यक है।

5.6 कारक, वाच्य तथा समास का परिचय तथा संस्कृत वाक्य-रचना में इन तीनों की उपादेयता

5.6.1 कारक-परिचय

संस्कृत वाक्य-रचना में दो बातें प्रमुख हैं –

1) पदों का परस्पर समन्वय,

2) कारक।

संस्कृत विभक्ति प्रधान भाषा है, अतः उसमें पदों का परस्पर सम्बन्ध विभक्तियों से निर्धारित होता है। इस प्रकार वाक्य में पदों का क्रम निश्चित नहीं होता है। कहने का भाव यह है

कि संस्कृत वाक्य-रचना में पदक्रम का कोई महत्त्व नहीं है। अतः पदों के क्रम में परिवर्तन कर देने से पदों के अर्थों में परिवर्तन नहीं होता है। यद्यपि पदों का क्रम महत्त्व नहीं रखता; परन्तु इस बात का ध्यान रहे कि संस्कृत के विभक्ति-प्रधान भाषा होने के कारण पदों के व्याकरणिक समन्वय के विषय में स्वच्छन्दता नहीं बरती जा सकती। पदों के परस्पर समन्वय से तात्पर्य है वाक्य में पदों के लिङ्ग, वचन, पुरुष तथा काल की समरूपता।

संस्कृत व्याकरण में 'वाक्य-विन्यास' के सन्दर्भ में कारकों पर विशेष विचार हुआ है प्रश्न उत्पन्न होता है कि कारक क्या है? वाक्य में क्रिया तथा क्रिया के साधक अथवा करने वाले के बीच में जो सम्बन्ध हो उसे कारक कहते हैं। दूसरे शब्दों में कारक क्रिया की निष्पत्ति में लगी हुई कर्तृत्व-शक्ति है जो अवान्तर व्यापार की विवक्षा से कर्ता से कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान तथा अधिकरण नाम प्राप्त कर इन छः रूपों में प्रकाशित होती है। कारक का शाब्दिक अर्थ है – 'करने वाला'। प्रश्न उत्पन्न होता है क्या करने वाला? इसका उत्तर होगा, 'करोति' अर्थात्, क्रियां निर्वर्तयति–क्रिया को सम्पन्न करता है। इस दृष्टि से ''कारक का क्रिया के साथ अन्वय होता है।''

कर्ता – क्रिया के इन सम्बन्धियों में कर्ता ही ऐसा सम्बन्धी है जिसके बिना वाक्य की कल्पना नहीं हो सकती। कर्ता की प्रधानता इसलिए मानी जाती है कि करण आदि की प्रवृत्ति एवं निवृत्ति उसी के अधीन होती है। कर्ता को व्यक्त करने के लिए इसके साथ कर्तृवाच्य वाक्य में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है तथा कर्मवाच्य या भाववाच्य वाक्य में तृतीया विभक्ति का; यथा –

कर्तृ० – बालकः पठति।

कर्म० – बालकेन पठ्यते।

कर्म – कर्ता अपनी क्रिया से जिस पदार्थ को सर्वाधिक प्राप्त करने की इच्छा करता है। उस पदार्थ की कर्म संज्ञा होती है, यथा – 'रमा ओदनं पचति' इस वाक्य में रमा पाक-क्रिया के द्वारा 'ओदन' अर्थात् भात पकाने की इच्छुक है। अतः ओदन की कर्म संज्ञा हुई है। कर्तृवाच्य वाक्य में 'कर्म' में द्वितीया विभक्ति तथा कर्मवाच्य वाक्य में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा –

1. **कर्तुरीप्सिततमं कर्म – पाणिनि 1-4-49**

2. **कर्मणि द्वितीया – पाणिनि 2-3-2**

रमा	ओदनं	पचति।	
कर्ता	कर्म	क्रिया	
रमा	ओदन/भात	पका रही है	
कर्म०–	रमया	ओदनः	पच्यते
	रमा के द्वारा	ओदन/भात	पकाया जाता है।

करण – क्रिया की सिद्धि में प्रकृष्ट उपकारक अथवा साधक को करण कहते हैं अर्थात् क्रिया की निष्पत्ति जिस साधन का आश्रय लेती है, उसकी करण संज्ञा होती है।

साधकतमं करणम् – पाणिनि 1-4-52; करण में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

यथा –	रामः	रावणं	बाणेन	हतवान्।
	कर्ता	कर्म	करण	क्रिया
	राम ने	रावण को	बाण से	मारा।

इसके अतिरिक्त क्रिया के कारणवाची, उद्देश्यवाची, प्रयोजनवाची, विकृत अंगवाची, क्रिया समाप्ति के कालवाची शब्दों के साथ भी तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है, यथा

तेन	अपराधेन	मां	दण्डयसि।
इस	अपराध के लिए	मुझे	दण्डित करते हो।
सः	अध्ययनेन	अत्र	वसति
वह	अध्ययन के उद्देश्य से	यहाँ	रहता है।
किं तथा क्रियते धेन्वा		या न सूते	न दुग्धदा।

ऐसी गाय रखने से क्या प्रयोजन जो ने बच्चा पैदा करती है और दूध न देता है।

सः	अक्ष्णा	काणः,
वह	आँख से	काणा है।

तेन द्वादशभिर्वर्षैर्व्याकरणम् अधीतम्।

उसने बारह वर्षों में व्याकरण पढ़ा।

इसी प्रकार वाक्य में कृतम्, अलम् शब्दों के नकारात्मक काल्पनिक अर्थ में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है, यथा –

अलं श्रमेण – परिश्रम न करें।

कृतं सन्देहेन – सन्देह न करें।

रहित, सहित तथा सदृश अर्थ वाले शब्दों के योग में भी तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा –

विद्यया हीनः– विद्या से रहित अथवा हीन

पुत्रेण सह आगतः पिता – पुत्र के साथ पिता आया।

अनेन सदृशः – इसके समान अथवा जैसे।

सम्प्रदान – क्रिया के कर्म कर्ता से जिसका अभिप्राय सिद्ध किया जाये, वह सम्प्रदान कारक होता है। **कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्** – पाणिनि – 1-4-32 । उदाहरण के लिए दान क्रिया का कर्म धन जिस व्यक्ति को दिया जाए वह सम्प्रदान कहलाता है।

सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा –

यजमानः	**विप्राय**	**धनं**	**ददाति।**
कर्ता	सम्प्रदान	कर्म	क्रिया
यजमान	ब्राह्मणों को	धन	देता है।

रुच्, क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्या, असूया आदि अर्थों वाली क्रियाओं के प्रयोग होने पर जिसे कोई वस्तु अच्छी लगे अथवा जो क्रोध, ईर्ष्या आदि का भागी हो वह सम्प्रदान कारक होता है । यथा –

बालकाय दधि रोचते – बालक को दही अच्छी लगती है।

किं बालकाय कुप्यसि? क्यों बालक पर गुस्सा करते हो?

इसी प्रकार नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम् और वषट् शब्दों का प्रयोग होने पर सम्बद्ध शब्दों के साथ चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है–

यथा – देवाय नमः – देव को नमस्कार है।

अग्नये स्वाहा – अग्नि में स्वाहा।

पितृभ्यः स्वधा – पितरों को स्वधा।

तुभ्यं स्वस्ति – तुम्हारा कल्याण हो।

अपादान – किसी स्थान अथवा पदार्थ से किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के अलग होने पर जिस स्थान अथवा पदार्थ से पार्थक्य सिद्ध हो, वह अपादान कारक कहलाता है।

ध्रुवमपायेऽपादानम् – पाणिनि – 1-4-24 । अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है।

यथा –	बालकः	गृहात्	आगच्छति।
	कर्ता	अपादान	क्रिया,
	बालक	घर से	आता है।
	वृक्षात्	पत्राणि	पतन्ति।
	वृक्ष से	पत्ते	गिरते हैं।

इसके अतिरिक्त भीत्यर्थक, रक्षार्थक, वारणार्थक, निलयार्थक धातुओं के प्रयोग होने पर जिससे डरता है, बचाता है, निवारण करता है अथवा छिपता है वह अपादान कहलाता है;

यथा – व्याघ्रात् बिभेति – बाघ से डरता है।

चौरात् रक्षति – चोर से बचाता है।

यवेभ्यः गां वारयति – जौ से गाय को रोकता है।

मातुर्निलीयते कृष्णः – कृष्ण माँ से छिपता है।

अधिकरण – क्रिया का आधार अधिकरण कहलाता है। **आधारोऽधिकरणम्** – पाणिनि 1-4-45। अधिकरण में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है; यथा –

अस्मिन्नेव गृहे	त्वम्	अभवः (इसी घर में आप रहते थे)।
अधिकरण	कर्ता	क्रिया

परन्तु अधि उपसर्ग पूर्वक शी, स्था तथा आस्, वस् आदि धातु आ, अनु तथा उप उपसर्गपूर्वक वस् धातु तथा अभि और नि उपसर्गपूर्वक विश् धातु के प्रयुक्त होने पर आधार स्थान अथवा वस्तु की कर्म संज्ञा हो जाती है तथा उसमें द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा –

शय्याम्	अधिशेते – शय्या पर सोता है।
कर्म	अधि+शी

अतएव यहाँ शय्या में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग किया गया है। 'तुलना' के अर्थ में जिसके साथ तुलना की जाये, यानी जिससे श्रेष्ठ बताया जाये, उसमें षष्ठी या सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है। **(यतश्च निर्धारणम्)** यथा –

कवीनां कविषु वा कालिदासः श्रेष्ठः (कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं।)

सम्बन्ध – सम्बन्ध का क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध न होने के कारण इसे 'कारक' नहीं माना जाता है। वस्तुतः सम्बन्ध कारक के रूप में न केवल सभी अन्य कारकों के साथ रह सकता है, अपितु सभी कारकीय रूपों से सम्बद्ध उनके विशेषण भी हो सकते हैं। सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है, **षष्ठी शेषे** – पाणिनि – 2-3-50 । यथा–

देवदत्तस्य पुत्रो	वृक्षस्य फलं खादति।
कर्ता के विशेषण रूप में	कर्म के विशेषण रूप में

देवदत्त का पुत्र वृक्ष का फल खाता है।

इसी प्रकार –	प्रज्ञस्य देवदत्तस्य पुत्रः	महतो वृक्षस्य फलं खादति।	
	कर्ता के विशेषण का विशेषण	कर्म के विशेषण का विशेषण	

विद्वान् देवदत्त का पुत्र बड़े वृक्ष का फल खाता है।

5.6.2 वाच्य-परिचय

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि क्रिया वाक्य के कर्ता के विषय में कहती है या कर्म के विषय में या फिर भाव के विषय में, उसे वाच्य कहते हैं।

वाच्य तीन प्रकार के होते हैं – कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य।

कर्तृवाच्य वाक्य – कर्तृवाच्य वाक्य की क्रिया सकर्मक या अकर्मक हो सकती है; वाक्य में क्रिया के कर्ता की प्रधानता होने के कारण कर्ता प्रथमा विभक्ति में रहता है; क्रिया का वचन तथा पुरुष की दृष्टि से कर्ता के साथ समन्वय होता है तथा क्रिया भूत, वर्तमान अथवा भविष्यत् किसी भी काल में प्रयुक्त हो सकती है; यथा

अकर्मक क्रिया **$\sqrt{\text{स्था}}$ (जाना) –**

बालकः तिष्ठति – बालक ठहरता है।

बालकौ तिष्ठतः – दो बालक ठहरते हैं।

बालकाः तिष्ठन्ति – बहुत से बालक ठहरते हैं।

सकर्मक क्रिया **$\sqrt{\text{पठ्}}$ (पढ़ना) –**

बालकः पुस्तकं पठति – बालक पुस्तक पढ़ता है।

बालकौ पुस्तकं पठतः – दो बालक पुस्तक पढ़ते हैं।

बालकाः पुस्तकं पठन्ति – बहुत से बालक पुस्तक पढ़ते हैं।

कर्मवाच्य – कर्मवाच्य वाक्य की क्रिया सकर्मक होती है तथा वाक्य में कर्म की प्रधानता होने के कारण कर्म प्रथमा विभक्ति में प्रयुक्त होता है, कर्ता तृतीया में तथा क्रिया कर्म के पुरुष तथा वचन के अनुरूप प्रयुक्त होती है। इसके अतिरिक्त क्रिया का रूप 'य' प्रत्यय के योग से बनाया जाता है। यथा –

बालकेन पुस्तकं पठ्यते।

बालकाभ्यां पुस्तकं पठ्यते।

बालकैः पुस्तकं पठ्यते।

भाववाच्य – भाववाच्य वाक्य की क्रिया अकर्मक होती है, कर्ता तृतीया विभक्ति में प्रयुक्त होता है तथा क्रिया के साथ 'य' प्रत्यय का योग रहता है। यथा –

बालकेन स्थीयते – बालक के द्वारा ठहरा जाता है।

5.6.3 समास-परिचय

एक सरल वाक्य में एक ही क्रिया होती है, परन्तु उस क्रिया के कई सम्बन्धी हो सकते हैं। उदाहरण के लिए – पुत्रः फलं हस्तेन गृहे खादति अर्थात् (क्रिया का कर्ता) पुत्र (कर्म) फल (करण) हाथ से (अधिकरण) घर में (क्रिया) खाता है।

इन सम्बन्धियों में प्रत्येक का अपना सम्बन्धी हो सकता है, यथा – देवदत्तस्य पुत्रो वृक्षस्य फलं मातुर्हस्तेन पितुर्गृहे खादति अर्थात् देवदत्त का पुत्र वृक्ष का फल माँ के हाथ से पिता के घर में खाता है। इसके अतिरिक्त कोई शब्द किसी वाक्य-खण्ड अथवा विशेषण से जुड़ा भी हो सकता है। यथा देवदत्तस्य पुत्रो महतो वृक्षस्य मधुरं फलं मातुः स्निग्धेन हस्तेन कुपितस्य पितुर्गृहे खादति अर्थात् देवदत्त का पुत्र बड़े वृक्ष के मीठे फल को माँ के प्यार भरे हाथ से कुपित पिता के घर में खाता है आदि तथा इस प्रकार से वाक्य बढ़ सकता है। इस वाक्य में प्रत्येक शब्द अपनी विभक्ति से अपना सम्बन्ध प्रकट करता है। इनमें से कोई शब्द अर्थ की दृष्टि से किसी शब्द के निकट होता है तथा धीरे-धीरे वे आपस में मिल सकते हैं। उदाहरण के लिए – राज्ञः पुत्रः मिलकर राजपुत्रः बन सकता है; मधुरं फलं मिलकर मधुरफलम् हो सकता है।

वाक्यगत शब्दों के परस्पर मिलने का प्रमुख नियम यह है कि दो शब्दों में से पूर्ववर्ती शब्द अपनी विभक्ति छोड़ देता है।

इसके अतिरिक्त दो शब्द आपस में तभी सम्पृक्त हो सकते हैं, जब वे दोनों समर्थ (सम्बद्धार्थ) हों; उनमें सम्पृक्त होने की योग्यता हो तथा सबसे महत्त्वपूर्ण बात है कि उनका परस्पर सम्पृक्त होना आवश्यक हो। वाक्य में शब्दों के विभक्ति छोड़कर इस प्रकार मिल जाने को समास कहते हैं। समास कई प्रकार के हो सकते हैं; जैसे –

(1) **अव्ययीभाव समास** – यह समास नपुंसकलिङ्ग में होता है। इसमें अव्यय का सुबन्त के साथ समास होता है तथा पूर्वपद का अर्थ प्रायः प्रधान होता है;

यथा – कृष्णस्य समीपम् – उपकृष्णम्

ग्रामस्य समीपम् – उपग्रामम्

इसमें 'समीप' के अर्थ में 'उप' का प्रयोग हुआ है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि अव्ययों का सुबन्तों के साथ समास अव्ययीभाव कहलाता है।

(2) **तत्पुरुष** – इस समास में उत्तर पद का अर्थ प्रमुख रहता है, जैसे – 'तस्य पुरुषः' तत्पुरुषः, उसका आदमी।

ग्रामम् गतः – ग्रामगतः (गाँव को गया हुआ)।

अक्षेषु निपुणः – अक्षनिपुणः (जुएँ में निपुण)

अ) **कर्मधारय** – यह तत्पुरुष समास का भेद है। पूर्ववर्ती शब्द यदि विशेषण हो तो समास कर्मधारय कहलाता है; यथा –

कृष्णः सर्पः – कृष्णसर्पः (काला साँप) ।

नीलम् कमलम् – नीलकमलम् (नील कमल)।

कभी-कभी पूर्वपद तथा उत्तरपद दोनों ही विशेषण होते हैं – यथा

नीललोहितः अर्थात् नीला और लोहित।

कभी-कभी उपमानवाचक शब्द और विशेषण समस्त हो जाते हैं तथा सादृश्य-वाचक शब्द का लोप हो जाता है, यथा –

घन इव श्यामः – घनश्यामः।

(बादल जैसे श्याम वर्ण वाला)

व्याघ्र इव शूरः – व्याघ्रशूरः।

(बाघ जैसा बहादुर)

कभी-कभी उपमेय तथा उपमान समस्त होते हैं, तथा सादृश्य-वाचक शब्द का लोप होता है; यथा –

नरः व्याघ्र इव शूरः – नरव्याघ्रशूरः।

(मनुष्य बाघ जैसा बहादुर)

आ) **द्विगु समास** – द्विगु कर्मधारय समास का भेद है। इसमें पूर्वपद संख्यावाची शब्द होता है, यथा – सप्त ऋषयः – सप्तर्षयः।

III) **द्वन्द्व** – यदि प्रथमा विभक्ति वाले दोनों अर्थात् पूर्वपद तथा उत्तरपद संज्ञा शब्द हों तथा च से परस्पर मिले हों, तो उस समास को द्वन्द्व समास कहते हैं; यथा –

रामः च कृष्णः च – रामकृष्णौ।

(राम और कृष्ण)

रामः च कृष्णः च कंसः च – रामकृष्णकंसाः।

(राम, कृष्ण और कंस)

(IV) **बहुव्रीहि** – प्रथमा विभक्ति वाले शब्दों का समास यदि किसी अन्य व्यक्ति अथवा वस्तु का विशेषण बन जाता है, तो वह बहुव्रीहि समास कहलाता है; यथा –

पीतम् अम्बरं यस्य सः – पीताम्बरः।

(पीला वस्त्र है जिसका, वह अर्थात् विष्णु)

बहुः व्रीहिः यत्र सः – बहुव्रीहिः (ग्रामः)

(बहुत धान जहाँ हैं, वह गाँव)

बोध प्रश्न 3

i) रमा <u>ओदनं</u> पचति – रेखांकित पद में कौन सा कारक है?

(क) कर्ता

(ख) कर्म

(ग) करण

(घ) सम्प्रदान

(ii) रामः रावणं बाणेन हतवान् – रेखांकित पद में कौन सी विभक्ति है?

(क) सम्प्रदान – चतुर्थी

(ख) अपादान – पञ्चमी

(ग) करण – तृतीया

(घ) अधिकरण – सप्तमी

(iii) व्याघ्राद् बिभेति – रेखांकित पद में कौन सी विभक्ति है?

(क) अपादान – पञ्चमी

(ख) सम्प्रदान – चतुर्थी

(ग) करण – तृतीया

(घ) कर्मणि – द्वितीया

(iv) बालकेन पुस्तकं पठ्यते – यह वाक्य किस वाच्य में है?

(क) कर्तृवाच्य

(ख) कर्मवाच्य

(ग) भाववाच्य

(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(v) कृष्णस्य समीपम् – इस पद में कौन सा समास है?

(क) तत्पुरुष समास

(ख) अव्ययीभाव समास

(ग) कर्मधारय समास

(घ) बहुव्रीहि समास

(vi) रामकृष्णौ – इस पद में समास निर्देशित करें –

(क) द्विगु समास

(ख) द्वन्द्व समास

(ग) तत्पुरुष समास

(घ) अव्ययीभाव समास

5.7 सारांश

- वाक्य की परिभाषा तथा स्वरूप, साथ ही आकृति की दृष्टि से, रचना की दृष्टि से, अर्थ की दृष्टि से तथा क्रिया की दृष्टि से वाक्य के भेदों के विषय में अब आप भली-भाँति परिचित हो चुके हैं।
- वाक्य-रचना के प्रकारों से आप भली-भाँति परिचित हो चुके हैं।

- कारक की परिभाषा तथा वाक्य-रचना में कारकों की उपयोगिता की भी अब आप सही व्याख्या कर सकते हैं।
- वाच्य की परिभाषा तथा वाक्य-रचना में इसके महत्त्व आदि से अब आप परिचित हो चुके हैं।
- समास तथा वाक्य-रचना में इसके महत्त्व से भी अब आप भली-भाँति परिचित हो चुके हैं।

5.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. संस्कृत-व्याकरण एवं लघुसिद्धान्तकौमुदी – डॉ० कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2. अनुप्रयुक्त संस्कृत-व्याकरण – मधुसूदन मिश्र, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
3. A Higher Sanskrit Grammar & M-R- Kale,Motilal Banarasidas, Delhi
4. Systems of Sanskrit Grammar & S-K-Belvalkar, Bharatiya Vidyabhawan, Delhi

बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) (ग) कात्यायन

ii) (ख) आचार्य विश्वनाथ

iii) (क) आकृति

अभ्यास प्रश्न 1

i) (क) आख्यातं साव्ययकारकविशेषणं वाक्यम्।

(ख) एकतिङ् वाक्यम्।

ii) इस प्रश्न का उत्तर स्वयं लिखिए।

iii) इस प्रश्न का उत्तर स्वयं लिखिए।

iv) (क) सरल (ख) संयुक्त (ग) संश्लिष्ट (घ) मिश्र।

v) (क) विधानार्थक (ख) निषेधार्थक (ग) आज्ञार्थक (घ) प्रश्नार्थक (ङ) विस्मयार्थक (च) सन्देहार्थक (छ) इच्छार्थक।

बोध प्रश्न 2

i) ख) पद

बोध प्रश्न 3

i) (ख) कर्म

ii) (ग) करण-तृतीय

(iii) (क) अपादान – पञ्चमी

(iv) (ख) कर्मववाच्य

(v) (ख) अव्ययीभाव समास

(vi) (ख) द्वन्द्व समास

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

MPDD-IGNOU/P.O. 4.2K/August, 2019

ISBN : 978-93-89200-34-8